Peer reviewed Journal Impact Factor: 7.265 ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred Journal

February 2023 Volume-15 Issue-4

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

UGC Listed
Journal Listed No-64768
Up to-May, 2019
(Now Peer Review)

Publication Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

February -2023 Volume-15 Issue-4

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

EDITORIAL BOARD		
Nguyen Kim Anh ***[Hanoi] Virtnam***	***Prof. Andrew Cherepanow*** *Detroit, Michigan [USA]*	***Prof. S. N. Bharambe*** *Jalgaon[M.S]*
Dr. R. K. Narkhede ***Nanded [M.S]***	***Prof. B. P. Mishra,*** *Aizawal [Mizoram]*	***Prin. L. N. Varma*** *Raipur [C. G.]*
Dr. C. V. Rajeshwari ***Pottikona [AP]***	***Prof. R. J. Varma*** *Bhavnagar [Guj]*	***Dr. D. D. Sharma*** *Shimla [H.P.]*
Dr. AbhinandanNagraj ***Benglore[Karanataka]***	***Dr. VenuTrivedi*** *Indore[M.P.]*	***Dr. ChitraRamanan*** *Navi ,Mumbai[M.S]*
Dr. S. T. Bhukan ***Khiroda[M.S]***	***Prin. A. S. KolheBhalod*** *[M.S]*	***Prof.KaveriDabholkar*** *Bilaspur [C.G]*

Published by-Chief Editor, Dr. R. V. Bhole, (Maharashtra)

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1	चीन की मोतियों की माला और हिंद महासागर की सुरक्षा चुनौतियां (भारत के विशेष संदर्भ में) **अजय चौधरी, डॉ पशुपति प्रसाद**	1-3
2	संत एकनाथांचा धर्म भक्ती संयोग **प्रा. डॉ मीनाक्षी पुंडलिक पाटील**	4-7
3	राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में विस्थापन की समस्या **डॉ० अँचल कुमारी**	8-9
4	संत रैदास के काव्य में प्रगतिशील चेतना **प्रा. डॉ.दळवे सूर्यकांत माधवराव**	10-11
5	पारधी जमातीचे सामाजीक परिवर्तन एक संशोधन (नागपूर जिल्हयातील ग्रामीण भागात स्थायी झालेल्या पारधी जमाती) डॉ. प्रल्हाद धोटे	12-13
6	तांबूल सेवनाचे (विड्याचे पान खाणे) प्राचीन व आधुनिक दृष्टीने महत्त्व **नेहते मिनल अरविंद , डॉ. भाग्यश्री भलवतकर**	14-18
7	आत्मनिर्भर भारत योजना की वर्तमान समय में प्रासंगिकता: कोविड-१९ के विशेष संदर्भ में **राहुल पासवान**	19-20
8	साक्षात्कार : एक मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य **डॉ गीता श्रीवास्तव**	21-24
9	बिहार के सिवान जिले में पंचायती राज व्यवस्था के सामाजिक भागीदारी **डॉ० मो० शाहब उद्दीन, इंजमालउल अहमद अंसारी**	25-27
10	घरेलू हिंसा का समाज पर पड़ता दुष्प्रभाव **डॉ० निखिल कुमार**	28-30
11	बिहार में राजनीतिक दलों का उदय **संयोग लाल**	31-33
12	स्वाधीनता आंदोलन और दुष्यंतकुमार का काव्य **डॉ. अर्चना चंद्रकांत पत्की**	34-36
13	मूलमंत्र गायकीचा....! **प्रा. डॉ. अस्मिता नानोटी**	37-39
14	बालमजुरी एक सामाजिक समस्या: परिणाम व घटनात्मक उपाय **प्रा. शैलेश संजय नळे**	40-42
15	आंग्रे घराणे व बाजीराव पेशवे यांच्या सबंधाचा अभ्यास - इ.स. १७२० ते १७४० **श्री. विजय सुखदेवराव निमजे**	43-44
16	किशोरियों का विकास और सामाजिक असमानता **ज्योति कुमारी**	45-47

17	उच्च शिक्षण आणि ग्रंथालय **प्रा.अडसुळे एस.पी.**	48-50
18	अव्दैतवाद व सूफीमत **डॉ.लीना दिगंबर प्रभू**	51-52
19	बिहार की राजनीति में राष्ट्रीय जनता दल का प्रदर्शन **अजय कुमार ओझा।, प्रो ० डॉ उमेश कुमार**	53-55

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

चीन की मोतियों की माला और हिंद महासागर की सुरक्षा चुनौतियां (भारत के विशेष संदर्भ में)

अजय चौधरी[1], डॉ पशुपति प्रसाद[2]

1परास्नातक विभाग राजनीति विज्ञान वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय ,आरा, बिहार

2एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग। जवाहरलाल नेहरू कालेज

डेहरी ओन-सोन बिहार।

Corresponding author- **अजय चौधरी**

Email-ajaychoudharykte@gmail.com

DOI-10.5281/zenodo.7694830

सारांश:-

मोतियों की माला हमारे देश के आसपास के हिंद महासागर क्षेत्र आई ओ आर में एक नेटवर्क स्थापित करने की मंशा से संबंधित हैं। इस माले की प्रत्येक मोती एक स्टिंग के साथ स्थानों की एक श्रृंखला में अस्थाई चीनी सैन्य स्थापना क्षेत्र के रूप में प्रतिस्थापित होना है। हमारे देश के चारों ओर हाल ही में बंदरगाहों का विकास हुआ है म्यांमार में बंगाल की खाड़ी के तट पर ग्वादर, हंबनटोटा, सितवे आदि में मोतियों की एक स्ट्रिंग के रूप में देखा जा सकता है। हालांकि यह बंदरगाह व्यवसायिक हैं फिर भी चीन के विस्तार वादी नीति का एक कड़ी है जो कि भारत को समय के अनुसार घेरने का एक अड्डा हो सकता है। तभी तो मीडिया ने इस घेरे को "स्ट्रिंग आफ पर्ल्स" नाम दिया था इस शब्द का प्रयोग चीनी सरकार की अधिकारिक स्रोतों से कभी नहीं आया, यह अक्सर भारतीय मीडिया में प्रयोग किया जाने वाला शब्द मात्र हैं, या चीन के प्रति हमारी नजरिया।[1] हिंद महासागर आदि अनादि काल से भारत का एक अभिन्न अंग रहा है, जिसका प्रमाण हमें पुराणों में भी मिलता है तथा अंग्रेजी हुकूमत तक यह बरकरार रहती है, लेकिन धीरे-धीरे इसकी महत्ता प्रकाश में आती है कि व्यवसायिक दृष्टि में इस मार्ग से 90% मार्ग सुलभ रूप से प्राप्त हो रही है। जिसका उपयोग चीन के ऊर्जा क्षेत्र में बढ़त का भाग या उसके विस्तार वादी नीति का हिस्सा जो कि भारत के लिए सुरक्षा दृष्टि से चिंता का विषय बना हुआ है।

कीवर्ड:- सुरक्षा, चीन, विस्तार, वादी, भारत, हिंद महासागर, मोती, माला, नौसैनिक

परिचय:- चीन अपने नौसैनिक ठिकानों के जरिए भारत को घेरने के लिए भारत के पड़ोसी देशों पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश और म्यांमार जैसे देशों में बंदरगाह पर योजनाओं का स्थापना करना है, तथा इन पर अपनी पकड़ बनाना है। उसके विस्तार वादी नीति का हिस्सा भारत के लगभग सभी पड़ोसी देश हैं। जिस प्रकार से चीन भारत के पड़ोसी देशों पर अपना विस्तार स्थापित कर रहा है उस प्रकार से भारत को सोचना लाजिम है। हिंद महासागर में 12 जुलाई 2017 को चीनी सैनिकों देश के पहले विदेशी सैन्य अड्डे पर तैनाती के लिए जिबूती के लिए रवाना होना भारत के चिंताओं को बढ़ा दिया हैं। [2] यह बांग्लादेश, म्यांमार और श्रीलंका में सैन्य गठजोड़ और संपत्ति की मदद से भारतीय उपमहाद्वीप को घेरने की चीन की रणनीति का हिस्सा हैं जो मोतियों की माला का रूप धारण कर रहा है। अर्थात भारत को चारों तरफ से घेरते नजर आ रहा है आइए अब इस डोरी में लगे मोतियों को अलग-अलग देखते हैं।

क:-पाकिस्तान:-पाकिस्तान जो कि भारत का एक अंग था जो निजी स्वार्थों अंग्रेजों के रणनीति का शिकार धर्म के आधार पर अलग हुआ एक राज्य (देश) हैं। जो कि भारत का चिर परिचित शत्रु है जो भारत के मैत्रिक भाषा को कभी समझने का प्रयास ही नहीं किया अपितु चीन की गोद में जा बैठा है। चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा सीपीईसी परियोजना ग्वादर के हिस्से के रूप में पाकिस्तान के ग्वादर में एक नौसैनिक अड्डा बनाया यह बंदरगाह किसी भी युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न होने पर चीन को पश्चिम की ओर से भारत से निपटने में मदद करेगा। चीन ने पाकिस्तान को लड़ाकू विमान पनडुबी और परमाणु सहायता भी भेजी है ताकि वह भारतीय हमले का करारा जवाब दे सके या भारत पर पश्चिम क्षेत्र से हमला कर सके।

ख-श्रीलंका:-

चीन ने हिंद महासागर में अपना पांव जमाने के लिए तथा अपने नौसैनिक संचालन को मजबूत करने के लिए श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह पर अपनी पकड़ या अपना अड्डा

बनाने के लिए चीन ने श्रीलंका को तकनीकी एवं वित्तीय सहायता भी प्रदान कर रहा है, ताकि समय आने पर भारत के खिलाफ उपयोग करने का अनुमति श्रीलंका से मिल सके।[3]

ग-बांग्लादेश:-

चीन ने चटगांव बंदरगाह पर अपना नौसैनिक अड्डा बना कर इस देश में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। फिलहाल बांग्लादेश ने अपनी सुरक्षा के लिए चीन से दो पनडुब्बियां खरीदने का ऐलान किया है। जो कि आने वाले समय में चीन इसका उपयोग भारत के खिलाफ कर सकता है।

घ-म्यांमार:-

चीन म्यांमार के साथ अपने सैन्य और आर्थिक संबंध बढ़ा रहा है आगे आने वाले समय में चीन भारत के इस पड़ोसी देश का उपयोग भारत के खिलाफ करेगा क्योंकि इसका जमीन चीन के लिए एक बेहतर अड्डा हो सकता है।

च-मालदीव:-

यह द्वीप भारत देश के लक्षद्वीप के पास हिंद महासागर में स्थित है, इस देश में भी चीन ने अपना सैन्य ठिकाना बना रखा था ताकि हिंद महासागर में भारत के खिलाफ खड़ा हो सके तथा अपने आपको वहां मजबूत रूप में स्थापित कर सकें।

छ-सेशेल्स:-

यह देश भारत और चीन के बीच नौसैनिक लड़ाई के लिए भी एक अहम स्थान हो सकता है। क्योंकि इस छोटे से द्वीप में कुछ मौद्रिक सहायता के कारण चीन को अपना नौसैनिक अड्डा स्थापित करने की अनुमति दे चुका है।

ज-अफ्रीका नौसेना बेस:-

चीन ने फरवरी 2016 में जिबूती में आधार बनाना शुरू किया जहां पर केवल मात्र 800000 लोग रहते हैं। वहां पर चीन ने अब तक का पहला विदेशी नौसैनिक अड्डा स्थापित किया जिबूती भारत के दाहिने हाथ में अरब सागर के पास जिबूती से स्वेज नहर के मार्ग पर लाल सागर के प्रवेश द्वार पर अफ्रीका के हांरन में स्थित हैं। चीन का आधा तेल आयात जिबूती के मंडेब जलडमरूमध्य से होता है।[4] जो भूमध्य सागर और हिंद महासागर को जोड़ता है चीन का कहना है कि वह जिबूती देश का उपयोग एंटी पायरेसी संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना और मानवीय राहत मिशनो का समर्थन करने के लिए करेगा।

हिंद महासागर और भारत:-

भारत के लिए हिंद महासागर प्रकृति का एक वरदान है, जो कि आदिकाल से भारत के हितार्थ हैं इसकी अविरल धारा भारत के लिए हमेशा ही अमृत का वर्षा करता रहता है। प्रकृति के इस सुसज्जित खजाने से अनवरत ही भारत लाभान्वित होते रहा है। भारत का लगभग 95% व्यापार मात्रा के हिसाब से और 68% व्यापार मूल्य के हिसाब से हिंद महासागर के क्षेत्र से ही प्रतिपादित होता है।[5] प्रकृति के इस खजाने से भारतीय मछुआरे प्रतिदिन लाखों टन का मत्स्य व्यापार करते हैं इसके अतिरिक्त 3.28 मिलियन बैरल प्रतिदिन की आवश्यकताओं की पूर्ति का लगभग 80% हिंद महासागर के माध्यम से समुद्र द्वारा आयात किया जाता है। भारतीय नौसेना के अनुसार भारत के तटीय तेल उत्पादन और पेट्रोलियम निर्यात को ध्यान में रखते हुए तेल के लिए भारत की समुद्र पर निर्भरता लगभग 93% हैं।[6]

भारत में तरलीकृत प्राकृतिक गैस एलएनजी का सबसे बड़ा चौथा आयातक भी समुद्र मार्ग से ही होता है। जिसका लगभग 45% भाग इसी मार्ग से होता है। [7]

भारत हिंद महासागर के संसाधनों पर अत्याधिक आश्रित हैं एक आंकड़े बताते हैं कि भारत ने 2008 में लगभग 4.1 मिलियन टन मछली पकड़ी इसे दुनिया में छठा स्थान प्राप्त हुआ और इसके मछली पकड़ने और जलीय कृषि उद्योग लगभग 14 मिलियन का होना मत्स्य पालन और जलीय कृषि उद्योग भी निर्यात एक प्रमुख स्रोत समुद्र मार्ग का हिंद महासागरीय भाग ही है।

हिंद महासागर से भारत का आर्थिक संबंध:-

पूर्व के एक आंकड़े जो कि 1962 से 2012 के बीच का है यह प्रदर्शित करता है कि भारत का समुद्री निर्यात मात्रात्मक दृष्टि से 55 गुना बड़ा है तथा केवल मत्स्य निर्यात 16600 करोड़ या लगभग 2.5 बिलियन डॉलर का व्यवसाय भारत को आर्थिक सशक्तिकरण करता है। अल्फ्रेड महान के शब्दों में हिंद महासागर की महत्ता को इस रूप में समझा जा सकता है कि उन्होंने ठीक ही कहा है कि[8] "जिसका हिंद महासागर पर नियंत्रण होगा उसी का एशिया पर प्रभुत्व होगा"

अंतरराष्ट्रीय व्यापार युद्ध हिंद महासागर क्षेत्र से भारत का होता है तो लगभग पूरे व्यापार का 78% इसी महासागर से होता है भारत की संसाधनों की बात की जाए तो इसकी सबसे बड़ी मात्रा इसी महासागर से प्राप्त होती है।

भारत और चीन के बीच भू राजनीति:-

चीन मानता तो नहीं है लेकिन सच्चाई यही है कि वह भारत के पड़ोसी देशों पर अपना प्रभाव बढ़ा कर भारत के चारों तरफ अपने सैन्य वेश बनाकर घेरने की कोशिश कर रहा है। यह चीन की विस्तार वादी नीति का एक नमूना है अन्यथा विश्व की एक बड़ी शक्ति के रूप में स्थापित होकर भी अपने पड़ोसी को कर्ज तले दबाकर अपना स्वार्थ सिद्धि नहीं करता। यदि 2020 की बात की जाए तो इसके विस्तार वादी नीति का ही शिकार भारत हुआ था जब पूर्वी लद्दाख के गालवान घाटी में हिंसक झड़प ने भारत-चीन संबंधों की गतिशीलता को मौलिक रूप से बदल कर रख दिया है बीते 6 सालों में जब से भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सत्ता संभाली है 18 बार दोनों देशों के बीच मुलाकाते और बातचीत हुई हैं इन सब कोशिशों के बाद दोनों देशों के बीच संबंध सुधारने के पहल की तरह से ही देखा गया लेकिन उसका परिणाम कुछ अलग ही प्राप्त हुआ है। एक 2018- 2019 की सालाना रिपोर्ट में भारत [9] के रक्षा मंत्रालय ने कहा था कि सरकार ने भारत चीन सीमा पर 3812 किलोमीटर का इलाका सड़क निर्माण के लिए चिन्हित किया है या कार्य करने के लिए अर्थात सड़क निर्माण कार्य बॉर्डर रोड्स ऑर्गेनाइजेशन यानी बीआरओ को दिया गया था आज तक इनमें से अधिकतर योजना पूरी हो चुकी है।

भारत पर मोतियों की माला का प्रभाव:-

भारतीय संदर्भ में यह माना जाता है कि चीन की मोतियों की माला समुद्री सुरक्षा के लिए खतरा हैं। इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि चीन अधिक से अधिक पनडुब्बियों विध्वंसक जहाजों और जहाजों के साथ अधिक मारक क्षमता विकसित कर रहा है। इनकी उपस्थिति से पानी के रास्ते भारत की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा हो सकती हैं [10]

हिंद महासागर में आज भारत का जो सामरिक दबदबा हैं वह कम हो जाएगा हिंद महासागर में चीन के पास कोई खुला स्थान नहीं है। मोतियों की माला से चीन भारत को घेर लेगा और वह उस पर हावी हो सकेगा जो देश आज भारत को चीन के जवाब में भागीदार मानते हैं वो चीन की गोद में जाकर समाप्त हो सकते हैं।

निष्कर्ष:-

हिंद महासागरीय समुद्री सीमा की सुरक्षा कारोबार के अहम रास्तों विशेष आर्थिक क्षेत्र और समुद्री संसाधनों का उचित इस्तेमाल होना जरूरी है। इसके लिए कानून को सही तरीके से लागू करना अत्यंत ही आवश्यक है। तमाम देशों के बीच सूचना के आदान-प्रदान को बेहतर बनाने और समुद्री सीमाओं के प्रबंधन को बेहतर करने की जरूरत है। भारत के वैश्विक उत्थान के लिए समुद्री सुरक्षा एक महत्वपूर्ण कड़ी है। भारत महासागरीय संसाधनों का लाभ अपने अर्थ विकास के लिए तभी उठा सकता है जब उसकी समुद्री सुरक्षा उच्चस्तरीय हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1) हिंदुस्तान समाचार पत्र संपादकीय का अंश 12 अप्रैल 2021
2) अंतरराष्ट्रीय संबंध पुष्पेष दन्त
3) दृष्टि आईएएस का लेख
4) दृष्टि आईएएस का लेख
5) हिंद महासागर क्षेत्र: भारत के विकास के लिए एक धूरी ध्रुव जयशंकर सोमवार 12 सितंबर 2016 ओपन एड
6) भारत के लिए हिंद महासागर की आर्थिक महत्व का विवरण 27 जनवरी 2022 यूथ डेस्टिनेशन आईएएस पीसीएस रेड पब्लिकेशन
7) टीम बीबीसी हिंदी दिल्ली 17 जून 2020 भारत चीन सीमा विवाद: 45 साल बाद यह नौबत क्यों आई
8) चीन की मोतियों की माला: यूपीएससी अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए नोट्स
9) दैनिक जागरण समाचार पत्र संपादकीय का अंस
10) लोकसभा टीवी डिबेट का अंश

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

संत एकनाथांचा धर्म भक्ती संयोग

प्रा. डॉ मीनाक्षी पुंडलिक पाटील

मराठी विभाग, महिलारत्न पुष्पाताई हिरे महिला महाविद्यालय, मालेगाव

Corresponding author- **प्रा. डॉ मीनाक्षी पुंडलिक पाटील**

Email- minakshipatil1827@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7694838

मराठी वांगमयाचा इतिहासाचा अभ्यास करताना असे लक्षात येते की संत साहित्य हा मराठी वांगमय इतिहासाचा एक अविभाज्य भाग आहे इतकेच नव्हे तर एकूणच मराठी वांगमयाचा प्रवाहात मध्ययुगीन वांग्मय इसवीसन1050 ते इसवी सन1820 हा कालखंड मानला जातो. या काळात मोठी संत परंपरा निर्माण झालेली दिसते. भक्तीचा मळा फुलविणारा, वेदप्रामाण्य परंपरा जतन करणारा, सांस्कृतिकचे संवर्धन करून भेदाभेद विसर वयास लावणारा वारकरी संप्रदाय व ज्ञानेश्वरांनी चैतन्यमय बनविला त्यानंतर अनेक संतांनी ही परंपरा जोपासण्याचे कार्य सुरू ठेवले. महाराष्ट्रातील वारकरी संप्रदाय यांचे वर्णन करताना ज्ञानदेवे रचिला पाया तुका झालासे कळस संत बहिणाबाई यांच्या वचनाची यथार्थता जाणवते. या संप्रदायाचे प्रवर्तन कधी झाले कोणी केले या इतिहासापेक्षा या संप्रदायाला चिरस्थायीत्व कोणी दिले तत्त्वज्ञानाचा आणि आचारसंहितेचा भक्कम आधार कोणी दिला याचे महत्त्व बहिणाबाईंना अभिप्रेत असावे

वारकरी संप्रदायाचा विस्तार करणारे नामदेव महाराज संप्रदाय स्वरूप मंदिरावर भागवताचा ध्वज उभारणारे एकनाथ महाराज व मंदिराचा कळस शोधणारे तुकाराम महाराज त्याआधी ज्ञानेश्वरांचे अग्रेसर आहेत व सर्व संतांनी मान्य केले आहे. संत एकनाथांना ज्ञानेश्वर कैवल्याचा पुतळा वाटतात." संतांनी परस्परांचा केलेला गौरव हे वारकरी संप्रदायाचे वैशिष्ट्य असल्याचे प्रा प्र गावडे यांनी म्हटले आहे. भक्तिभावाने भारावलेले हे सर्व भक्त भागवत धर्माच्या ध्वजाखाली एकत्र आले आहेत भेदाभेद भ्रम अमंगळ अशी भूमिका घेऊन इतर वारकऱ्यांना संत सज्जनांना उरावरी भेटत आहे असे अपूर्व दृश्य वारकरी पंथ आतच दिसते."(1) ज्ञानेश्वरीतील तत्वज्ञानाचा, विचारांचा, त्यात सांगितलेल्या उपचारांचाही गौरव नामदेव एकनाथ, तुकाराम हे संत करताना दिसतात.

संत एकनाथ यांचा विचार केला तर एकनाथ हे भानुदासचे पणतू. नाथांनी दत्तोपासना न स्वीकारता विठ्ठल उपासना स्वीकारून भागवतधर्म मंदिराला अभंग वाणी व काव्यसंपदा यांनी मजबूत खांबाचा आधार दिला. पैठणास आपल्या विठ्ठल मंदिरात रोज हरिकीर्तन करण्याचा उपक्रम सुरू केला. ज्ञानेश्वरीची संशोधित प्रत तयार केली एकनाथांची ग्रंथरचना व्यापक आहे. व्यासकृत भागवत एकादश स्कंधावर टीका एकनाथी भागवत या नावाने ते प्रसिद्ध आहे. दृष्टांत, कल्पना, विचार, वर्णन यातून त्यांच्या श्रेष्ठतेची चुणूक दिसते. सुमारे चार हजार अभंग लिहिणारे एकनाथ त्यांच्या भारूड व गवळणी यातून लक्षात राहतात. खेळता खेळता सहज परमार्थ बोध करणारा हा प्रकार आजही लोकप्रिय ठरला आहे जसा नामदेवांनी वारकरी संप्रदायाचा झेंडा उत्तर हिंदुस्तानात फडकवला तसा नाथांनी तो संस्कृत पंडित यांचे अगर काशीक्षेत्री नेला. प्राकृतात भागवत लिहिणाऱ्या नाथांना पैठणच्या ब्रह्मवृंद हाच आक्षेप वाराणसीला जाऊन दूर करावा लागला. या ग्रंथाचे उर्वरित लेखन त्यांनी तेथेच पूर्ण केले. आळंदी समाधी स्थानाचा शोध घेऊन सुव्यवस्था करणाऱ्या एकनाथांनी आळंदीची वारी सुरू केली. भक्तीरस सेवन अर्थ हरिकीर्तन सुरू केले. पंढरीच्या वारीचे अनुपम मी आनंद म्हंटले.

"एकनाथांच्या कार्याविषयी सांगायचे तर सर्वांच्या हृदयातील परमेश्वर जागा करून तो सर्वव्यापी प्रभू विटेवर प्रेम रूपाने सर्वांना पालवीत उभा आहे"(2). याची शिकवण देऊन वारकरी संप्रदायाच्या विकासाचे मोठे काम त्यांनी केले आहे. आपली विद्वत्ता भक्ती मार्गातला महत्त्व प्रतिपादन करण्यासाठी वापरून दत्तोपासना विठ्ठल भक्तीत पिलिंग करणारे एकनाथ या वारकरी संप्रदायाचे मोठे आधारस्तंभ ठरले. एकनाथांनी ज्ञानेश्वरांचे खंडित झालेले कार्य अधिक उठावदार व व्यापक स्वरूपात पुढे चालू केले. पैठण सारख्या सनातन्यांच्या बालेकिल्ल्यात त्यांनी भागवत धर्माची विजय पताका फडकावली. कर मठांचा राजधानीत श्री शूद्रांचा कैवार घेऊन त्यांनी देश भाषेचा आवर्जून पुरस्कार केला. महाराष्ट्राच्या विचार संपादित अमौलिक भर घातली. एकनाथ हे महाराष्ट्रातील उदारमतवादाचे व नेमस्त

संप्रदायाचे जनक होत. त्यांचा जीवनक्रम म्हणजे समन्वय वादाचा एक उत्कृष्ट आदर्श आहे.

" गृह आश्रम न सांडता। कर्मरेखा नओलांडता
निज व्यापारी वर्तता। बांधू सर्वथा नमैले " (3)

या तत्त्वाचे स्वतः आचरण करून त्यांनी प्रपंच व परमार्थ यांची कुशलतेने सांगड घातली. संसारी भक्तांचे एकनाथ मुकुटमणी होते. आचारांची शुद्धता राखून त्यांनी कर्मठ व त्याचे बंड मोडले. पांडित्याची प्रतिष्ठा वाढवूनही पढिकतेचे स्तोम कमी केले.प्रेमळपणा, सौजन्य व शांती हा त्यांच्या व्यक्तित्वाचा गाभा आहे. कोणत्याही गुणाचा अतिरेक त्यांच्या चरित्रात सहसा आढळत नाही. त्यांची तत्त्वनिष्ठा अचल आहे. विचारसरणी ही ठाम आहे. परंतु त्यांच्या स्वभावात संत तुकाराम संत रामदासांइतका अभिनेवेश व प्रखरता नसल्यामुळे प्रत्येक बाबतीत तडजोडीची प्रवृत्ती दृष्टीस पडते. त्यांच्या मनावर न्यायनिष्ठुरतेपेक्षा भूतदयेचाच पगडा अधिक होता. कोणतीही विवाद्य गोष्ट कडेपर्यंत न्यायचीच नाही असा जणू काय त्यांचा संकेत ठरलेला दिसतो. पैठण सारख्या पुरातन क्षेत्रात ते लहानाचे मोठे झाले होते. तेव्हा त्यांच्या भवतालच्या प्रतिगामी परिस्थितीमुळे त्यांच्या कर्तृत्वाला काही मर्यादा पडल्याखेरीज कशा राहणार हाही एक प्रश्नच. परंपरेचा बाज राखून लोकांचा बुद्धिभेद होऊ न देता धीमेपनाने पण निर्लस्तेने सुधारणा घडवून आणण्याचे त्यांचे धोरण होते. त्यामुळे अत्यंत बंडखोरपणाकडे ते कधीही झुकले नाही.

सावधपणा व समन्वय हा गुण त्यांच्या ठाई होता. एकनाथांनी आपल्या आयुष्यात जन्मसिद्ध भेदभावाला केव्हाही थारा दिला नाही. जागोजागी संतांचा गौरव करताना एकनाथांच्या या सावधगिरीच्या धोरणात उत्कटता व आकर्षकपणा नाही हे खरे आहे. पण त्या वेळच्या सामाजिक प्रगतीच्या दृष्टीने हे अत्यंत समुचित होते. त्यांच्या विचारसरणीतील सौम्यपणा व संयम हा केवळ त्यांच्या वैयक्तिक गुणावगुणांचा परिणाम आहे असे नाही. अतिशय बिकट परिस्थितीतून त्यांना मार्ग काढावयाचा होता. धामधुमीच्या काळात एकदा विस्कटलेली भागवत धर्माची घडी त्यांना पुन्हा नीट बसवायची होती. तेव्हा अधीरतेने व आतताईपणे कार्यभाग होण्यासारखा नव्हता. मराठी भाषेची अगदी दुर्दशा होऊन गेली होती. राजकीय व व्यावहारिक क्षेत्रात फारशीचे अतोनात प्राबल्य माजले होते. वारकरी पंथ निर्माल्यवत बनल्यामुळे धार्मिक बाबतीत पुन्हा संस्कृतचा ससेमीरा सुरू झाला होता. अशा स्थितीत महाराष्ट्रातील प्रतिष्ठित व बुद्धिमान वर्गाचे मराठी भाषेकडे लक्ष वेधण्याचे अवघड कार्य संत एकनाथांना पार पाडायचे होते. म्हणून संस्कृत वाणी देवे केली, तर प्राकृत काय चोरापासून झाली. असा खडा सवाल त्यांनी भाषा पंडितांना टाकला.

मराठी भाषेचा उपहास करणाऱ्या, भक्ती पंथाची अवहेलना करणाऱ्या रूढीप्रियविरोधकांच्या गोटात जाऊन त्यांनी आपल्या भागवत ग्रंथाला आणि पर्यायाने मराठी भाषेला काशीच्या पंडितांची मान्यता मिळवली. कार्यनाश होऊ नये म्हणून व्यक्तिशः त्यांनी नमते घेतले. आपल्या शांतपणाने व क्षमाशीलतेने त्यांनी धर्ममार्तंडांना लाजविले. पांडित्याने व आपल्या बुद्धीचातुर्याने विद्वानांना त्यांनी दिपविले. त्यामुळे साहजिकच महाराष्ट्रातील पंडित बुवांची मराठी भाषेकडे पाहण्याची पूर्वग्रहदृष्टी बरीचशी निवळली. एकनाथांनी मराठी साहित्यात एक नव्या युगाला प्रारंभ केला. तेराव्या शतकातील वाङ्मय टीकात्मक व भक्तीपर आहे. महानुभवीय साती ग्रंथ ज्ञानेश्वरी, अमृतानुभव यांसारखे काही निवडक वांग्मय वगळले तर या काळातील बरीचशी रचना स्फुट स्वरूपाची आहे." एकनाथांनी मराठी वांग्मयाला जास्त व्यापक स्वरूप दिले. स्फुट संकीर्ण रचनेप्रमाणे वीस हजार ओव्यांचे प्रचंड ग्रंथ देश भाषेत निर्माण होऊ लागले. तसेच अध्यात्मपर ग्रंथाकडून कथा वाङ्मयाकडे मराठी साहित्य गंगेचा ओघ वळविण्याचे श्रेय एकनाथांना द्यायला हवे."(४) शिवाय रुक्मिणी स्वयंवर रचून मराठी भाषेत आख्यान पर काव्य लेखनाची प्रवृत्ती त्यांनी रूढ केली. . राम चरित्रासारख्या अनेक करूणरम्य व स्फूर्तीदायक प्रसंगांनी भरलेला विषय एकनाथांनी निवडल्यामुळे सर्व रसांच्या परिपोशाला भावार्थ रामायणात मुबलक वाव मिळाला. त्यामुळे मराठी काव्याचा एकांगीपणा नष्ट होऊन शृंगार, करूण, वीर इ. रसांचाही मराठी वाचकांना आस्वाद घेता येऊ लागला.

यादव काळ ही मराठी वाङ्मयाची बाल्यावस्था होय. त्यावेळच्या भाषासरणीत प्रसन्नता , उत्साह, कोमलता, माधुरी, उत्कटता, चापल्य इ. गुण आढळतात. एकनाथांच्या काळात मराठी साहित्यात ओज, गांभीर्य, विशालता, चातुर्य, विपुलता, वैचित्र्य इ. गुणांचा अंतर्भाव

झाला. एकनाथांचे वांग्मय म्हणजे पांडित्य आणि प्रेमळपणा. विदग्ध आणि सात्विकता, सामर्थ्य आणि सहृदयता यांचा संगमच होय. मोठे मोठे प्रचंड ग्रंथ लिहिणाऱ्या या भगवद भक्ताचे समाजाच्या अगदी तळाशी असणाऱ्या अ संस्कृत वर्गाकडे देखील लक्ष होते. त्यांच्या गवळणी आणि भारुडे पाहून मन थक्क होते. समाज जीवनाचे बहुविध व संमिश्र स्वरूप ध्यानात घेऊन त्यांनी लिहिले त्यामुळे त्यात एकांगीपणा राहिला नाही. अध्यात्माची आवड असणारे ज्ञानी भक्त, शब्द चमत्कृतीने संतुष्ट होणारे पंडित व कथा विनोदात रंगून जाणारे सामान्य जन यांच्या अभिरुचीला मानवेल अशी अनेकविविधतेची वाङ्मयाची ठेवण आहे. निवृत्ती स्वीकारणाऱ्या लोकांना रामदासांनी पुन्हा प्रपंचाची महती पटवून दिली. आणि प्रवृत्ती व प्रयत्नवादाची संथा देऊन समाजाला समर्थ व कर्तव्य पारायण केले असा सार्वत्रिक समज आहे. वास्तविक पाहता भागवत धर्मीय संत मुख्यतः परमार्थाचे उपदेशक असले तरी प्रवृत्तीला ते अजिबात पारखे झालेले नाहीत. एकनाथांच्या जीवनात व साहित्यात तर अध्यात्माच्या अत्युच्च भूमिकेवरून व्यावहारिक कर्तव्याचा व सामाजिक सद्गुणांचा मुक्तकंठाने गौरव केला आहे. ब्रम्हनिर्वाण हेच मनुष्याचे अंतिम ध्येय खरे. पार्थिव शरीर नश्वर व क्षणभंगुर आहे हे उघड आहे. परंतु त्याचा तिरस्कार करण्यात शहाणपणा नाही अशा तऱ्हेचे विचार सर्व संतांनी प्रकट केले आहेत.

एकनाथांनी आपल्या ग्रंथात अनेकदा मानवी जीवनाच्या पूर्णतेची, जीवनमुक्त दशाची, सर्वश्रेष्ठ समाधीची आपली कल्पना विशद केली आहे. समाधी व स्वधर्माचरण यात बिलकुल विरोध नाही. उलट एकदेशीय ताटस्थ ही केवळ एक मूर्च्छा आहे. व्यवहारातील विषमतेने ती ढळत नाही. जगाच्या धकाधकीत रात्रंदिवस वावरत असताना जीभंग पावत नाही तीच खरी समाधी होय. श्रीकृष्णाने अर्जुनाला योग मुक्त होऊन सुद्धा युद्ध करण्याचा आदेश दिला आणि कुरुक्षेत्रावरील रणधुमाळीतही समाधीला कसा बाद येत नाही हे प्रत्यक्ष दाखवून दिले. भावार्थरामायनात वसिष्ठ ऋषींनीही रामाला असाच उद्देश केला आहे. प्रपंच व परमार्थ या दोघांमध्येही सारखीच सावधानता राखणे हेच अवताराचे सामर्थ्य आहे असा अभिप्राय प्रकट केला आहे. एकनाथांच्या कार्याचा प्रमाणे प्रवृत्ती आणि निवृत्ती यांची एकरूपता साधलेली दिसून येते. त्याप्रमाणे व्यक्तिविकास व समाजा धरणा यांचाही मिलाफ झालेला आढळतो. सिद्ध पुरुषाने आत्मानंदात निमग्न न राहता लोकसंग्रहाची जबाबदारी पत्करली पाहिजे अशी त्यांची विचारसरणी होती. आपल्या रामायणात त्यांना पदोपदी रामचंद्राची लोकसंग्रहाविषयीची कळकळ व दक्षता प्रकट केली आहे. श्रेष्ठ पुरुषांचे अनुकरण करण्याची सामान्य जनाची नैसर्गिक प्रवृत्ती ध्यानात घेऊन ज्ञात्याने अखेरपर्यंत कर्तव्या चरण करीत राहावे असाच सर्वत्र त्यांच्या प्रतिपादनाचा रोख आहे. एकनाथ हे खरोखर शांतीसागर होते . त्यांच्या क्षमा शीलतेची अनेक उदाहरणे प्रसिद्ध आहेत. सर्वांबोती परमेश्वर पाहण्याची प्रवृत्ती त्यांच्या रोमा रोमात भिनली होती. तरीपण व्यवहारात तारतम्य राखणे. अवचित्य सांभाळणे किती अगत्त्याचे आहे हे त्यांनी निक्षून सांगितले आहे.

समर्थांनी आपल्या शिष्यांना हरेकबाबतीत सावधानता राखण्याचे शिकवण दिली. एकनाथांच्या ग्रंथातही साबदपणावर खूप भर दिलेला आहे. प्रपंच व परमार्थ या दोन्ही क्षेत्रात त्याची खूप गरज आहे. याची त्यांना पुरेपूर जाणीव होती. रामदासांनी दासबोधात स्वतंत्रपणे व्यवहार धर्माचे तपशीलवार विवेचन केले आहे. एकनाथांचे कार्य थोड्या वेगळ्या स्वरूपाचे होते अध्यात्मिक तत्त्वांची व व्यवहारिक सदगुणांची त्यांनी सांगड घातली आणि लौकिक व्यवहाराबद्दल सामान्य जणांना वाटणारा न्यूलँड नाहीसा करून समर्थांचे कार्य सुकर केले. निर्मळ मनाने व निरपेक्ष बुद्धीने केलेला प्रपंच परमार्थरूप होतो असा त्यांच्या निरूपणाचा अर्थ आहे. भूतदया म्हणजे भाबडेपणा नव्हे. समभाव म्हणजे अवचित्य भंग नव्हे. व्यावहारिक व तारतम्य शिवाय या गुणांचा काहीही उपयोग नाही असेही ते म्हणतात." विल्यम अल्स्टन यांनी निदर्शनास आणल्याप्रमाणे धर्माचे तत्त्वज्ञान हा शब्दप्रयोग तत्त्वज्ञानाच्या शब्दकोशात तसा नव्याने दाखल झालेला असला तरी या शब्दप्रयोगाचे जे काही अभिप्रेत आहे ते तत्त्वज्ञान इतके प्राचीन आहे. धर्माने केलेल्या निर्धारणांची विवेकनिष्ठ समीक्षा धर्माच्या स्थापनेपासून सुरू होते आणि तोच तर धर्म तत्त्वज्ञानाचा गाभा आहे." **(5)** एकनाथांच्या ठाई असणाऱ्या सर्व गुणांचा विचार करता त्यांना धर्मवेत्ता ही संज्ञा यथार्थपणे लागू होते. भावार्थ रामायणाच्या

माध्यमातून समाजास धर्माच्याच आधारावरील एक राजकीय दृष्टी दिली. भागवत ग्रंथा मधील समतेची दृष्टी आणि भावार्थ रामायणातील राजकीय सजगता यांची देणगी नाथांमुळेच महाराष्ट्राला मिळाली. भाष्य ग्रंथ ही एका अर्थाने पंडिती परंपरेतील बाब आहे. नाथांचा लक्षवर्ग मर्यादित नव्हता. त्यांना समाजातील ज्ञानाला वंचित असलेल्या बहुजनांबद्दल, स्त्रियांबद्दल अपार आस्था होती. या वर्गासाठी त्यांनी भारुडाची रचना केली. या रचनांमध्ये विनोदाचा वापर सढळ हाताने करीत त्यांनी मनोरंजनातून लोकशिक्षण साधले.

, नाथांच्या योगदानाबद्दल पांगारकर म्हणतात, की मराठी वाङ्मयाच्या इतिहासात त्यांचे स्थान अत्युच्च व आढळ आहे. ना त्यांनी मराठी भाषेला मोलाचे स्थान निर्माण करून दिले. आपले ग्रंथ त्यांनी मराठीतून लिहिले. नाथांच्या भाषेत संस्कृत,फारसी, मराठी या तिन्ही भाषांतील शब्दांचा यथायोग्य उपयोग केला आहे. त्यातून मराठी पण उत्कर्षाला पावले आहे. नाथांनी जीवनभर समाजासाठी भगवत सेवेसाठी आपले आयुष्य घालवले. नाथांनी राजकीय धार्मिक भाषिक अशा सर्वच क्षेत्रांमध्ये स्वतःचा ठसा उमटवण्याचा प्रयत्न केला. एकनाथी भागवत धर्माच्या आधारे धर्मांतराची आलेली लाट ठोपवून धरण्याचा आदर्श प्रयत्न केला. वाईट प्रवृत्तीवर प्रहार करून हिंदू धर्माला नवीन दिशा देण्याचा देखील प्रयत्न केला.

. संदर्भ ग्रंथ-

1) नेरकर अरविंद, होय होय मी वारकरी, ग्रंथाली प्रकाशन, प्रथम आवृत्ती१९९८ , पान-११
2) तत्रेव ,पान-६५
3) दासबोध-2-2 ,३५
4) सरदार गं.बा., संत वांग्मयाची फलश्रुती, लोक वांग्मय गृह प्रकाशन, मुंबई, आठवी आवृत्ती,२०१० पान-९२
5) पांगारकर ल.रा.,एकनाथ चरित्र, वरदा बुक्स, पुणे,१९६७ . पान-१

.

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में विस्थापन की समस्या

डॉ अँचल कुमारी
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, आर सी सी वी कॉलेज, गाजियाबाद
Corresponding author- **डॉ अँचल कुमारी**
E-mail: anchalhindi@gmail.com

DOI-10.5281/zenodo.7694842

१५ अगस्त १९४७ ई० को भारत आजाद हुआ। अंग्रेज जाते-जाते भारत का विभाजन कर गए। भारत-पाक विभाजन की त्रासदी और साम्प्रदायिक वैमनस्य ने राष्ट्रीय उल्लास को धूल-धूसरित कर दिया। विभाजन के परिणाम स्वरूप हिंसा एवं द्वेष अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया। लूटपाट, मार-काट, भयंकर नरसंहार, बलात्कार, आगजनी, उत्पीड़न एवं अमानुषिक व्यवहार हुए। जिन्ना की जिद्द और अंग्रेजों की कूटनीति के कारण भारत को विभाजन का दारूण दर्द झेलना पड़ा। इतिहासकार पी०एल० गौतम ने लिखा है- "भारतीय राजनीति में जिन्ना का प्रवेश एक राष्ट्रवादी के रूप में हुआ। १९०६ ई० में सरोजिनी नायडू ने उन्हें हिन्दू-मुस्लिम एकता के राजदूत की संज्ञा दी थी, किन्तु आगे चलकर जिन्ना उग्रवादी व साम्प्रदायिक होते चले गए। जिन्ना ने यह अनुभव किया कि यदि वे उग्रवादी जनाधारित राजनीति का सहारा नहीं लेते तो धीरे-धीरे खत्म हो जाएंगे। जो मांगे सरकार द्वारा स्वीकार कर ली जाती थी, उसके बाद नए खतरों का आविष्कार करना आवश्यक हो जाता था। अन्यथा साम्प्रदायवादियों के लिए प्रश्नवाचक था। इसी तरह की परिस्थितियों ने जिन्ना को उग्रवादी राजनीति की ओर धकेल दिया। उनकी उग्र विचारधारा देश में विभाजन के लिए जिम्मेदार बनी।"[१]

विस्थापन का सबसे प्रमुख कारण भारत-पाक विभाजन था। इस विभाजन के कारण लाखों लोग पाकिस्तान से विस्थापित हुए तो लाखों लोग हिन्दुस्तान से विस्थापित होने पर मजबूर हुए। यह विभाजन मात्र जमीन का विभाजन नहीं था अपितु मानव मूल्यों व लोकतांत्रिक व्यवस्था का भी विभाजन था। डॉ० भगवान दास शर्मा के अनुसार- "यह विभाजन देश की जमीन का विभाजन नहीं था। मानव मूल्यों एवं विश्वासों का भी विभाजन था। कुछ नेता भले ही खुश हो, अधिकांशतः जनसमुदाय पराजय और अवसाद से टूट गया था।"[२]

डॉ० रजनी पामदत्त ने अपनी पुस्तक 'आज का भारत' में विस्थापित लोगों की संख्या का सही ब्यौरा प्रस्तुत किया है- "१८ सितम्बर से २९ अक्टूबर १९४७ ई० में इन दिनों में इस्लाम धर्म को न मानने वाले व्यक्तियों की २४ पैदल चलने वाली टुकड़ियाँ, सैकड़ों बैलगाड़ियाँ और पशुओं के साथ ८४९०००० व्यक्तियों ने पाकिस्तान की सीमा पार करके भारत **में प्रवेश किया। २६ अगस्त से ६ नवम्बर तक रेलवे ने २३००००० शरणार्थियों को भारतीय सीमा प्रान्त से इधर या उधर पहुँचाया। इस बँटवारे में कम से कम ५ लाख लोगों के काल कवलित होने का अनुमान है। बंटवारे के दौरान ९० लाख शरणार्थी भारत आए और ६० लाख शरणार्थी पाकिस्तान गए।**"[३]

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राही मासूम रज़ा ने विस्थापन की त्रासदी को बहुत ही सूक्ष्म व गहन रूप से रेखांकित किया है। हिन्दुस्तान व पाकिस्तान दो राष्ट्रों के बन जाने से जो अस्थिरता व असुरक्षा पैदा हुई उसके कारण विस्थापन एक मुख्य समस्या बनकर उभरी। राही ने हिन्दू व मुस्लिम दोनों ही समुदायों के विस्थापन की पीड़ा को शब्दबद्ध किया है- **"आजकल घर से निकले का जमाना ना है। मार-काट मची है। पाकिस्तान बन जाये से त मार-काट अउरो बढ़ गयी है। बड़ी आफत है, साहब! अब त रेल रोक-रोक के आदमी मारे जा रहे। लाख-डेढ़ लाख से कम आदमी ना मारे गये हो इहें।"**

"बाकी केह बात पर हो रही ई मारपीट?"

"ई अंग्रेज बहनचोदन का तोहफा है। हम त ई देख रहें कि पाकिस्तान जाये में जान की खैर है। ई समझिए की देहली . . . जहाँ कई करोड़ मुसलमान रहे . . . अब हुआँ नाम को मुसलमान ना रह गया है। . . . हम त सगीर फातमा के डर से रूके है, नहीं तबन के जा चुके होते।"[४]

अंग्रेजों ने जाते-जाते भारत को हिन्दुस्तान व पाकिस्तान दो मुल्कों में बाँट दिया। बँटवारे के पश्चात् यहाँ के मुसलमान स्वयं को असुरक्षित समझने लगे और वे पाकिस्तान जाने की सोचने लगे। विभाजन का दंश आम जनता को आजीवन भुगतना पड़ा। विभाजन के बाद विस्थापन की समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया। भय व सुरक्षा के वातावरण ने लोगों को अपना घर छोड़ने को विवश कर दिया। शरणार्थियों के जत्थे के जत्थे पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आए और हिन्दुस्तान से पाकिस्तान गए। विस्थापन को राही कई कोणों से देखते हैं। विस्थापन का एक पक्ष मानवीय सम्बन्धों व नेह-नातों पर भी पड़ा। एक ही परिवार में एक पीढ़ी पाकिस्तान चली गई व दूसरी पीढ़ी हिन्दुस्तान रह गई। सैकड़ों वर्षों की सांझी संस्कृति और सभ्यता छिन्न-भिन्न हो गई। राही ने विस्थापन के द्वारा उत्पन्न इस पीड़ा को अपने पात्रों के माध्यम से उजागर किया। एक उद्धरण दृष्टव्य है- **"बेकार समझायो। हकीम साहब ने कहा, अब हम लोग अपने लड़कन के बाप ना रह गये है। अब लड़कने सब हमरे लोगन के बाप हो गये है। हम बहुत कहा कुद्दन से- ए बेटा तूहे पाकिस्तान जाये की कउन जरूरत है। त बोले कि हिआँ मुसलमान की तरक्की का रास्ता बंद हो गया है। अब ओके अपने बाल-बच्चन को भी ले जाये त हम इमतेनान की साँस लें।"**[५]

जब देश में बँटवारे की चिंगारी फैली, तो बहुत से लोग डर या भय से अपना परिवार यहाँ छोड़कर पाकिस्तान चले गए। यह बँटवारा केवल जमीनी स्तर पर ही नहीं हुआ वरन् इस बँटवारे ने परिवार को दो हिस्सों में बाँट दिया। पति से उसकी पत्नी, पिता से उसका पुत्र व बच्चे से उसके माता-पिता अलग हो गए। गाँव के गाँव विभाजन के बाद शोक के सागर में डूब गए। विभाजन की त्रासदी ने पीढ़ियों में रिश्ते नातों को पलभर में ध्वस्त कर दिया। विस्थापित जनसमुदाय अपने गाँव व शहर से उजड़ने की पीड़ा को झेलने के लिए अभिशप्त हो गए। राही मासूम रज़ा ने रिश्तों में इस नाजुक व संवेदनशील पक्ष को बहुत ही स्पष्टता के साथ व्यंजित किया है। आमजन इस बँटवारे के मध्य विस्थापित होने के लिए विवश हुआ। राजनैतिक दल और प्रपंच ने आमजन के साथ खूब आँख मिचौली खेली। राही इस पर कटाक्ष करते हैं। वे इस समासिक संस्कृति के छिन्न-भिन्न होने पर अपना तीव्र प्रतिरोध करते हैं- **"सदियों से रहने-बसने और जीने-मरने वाले मियाँ लोगों ने देखा कि जिस गाँव को वह अपना कहते और समझते आये थे, उस गाँव से उनका कोई रिश्ता ही नहीं रह गया। इन लोगों के लिए पाकिस्तान का बनना या न बनना बेमानी था। . . . वे घरों से निकले और जब घर ही छूट गया तो गाजीपुर व कराची में क्या फर्क है।"**[६]

फिरंगियों ने देश को छोड़ने से पूर्व उसे दो हिस्सों में बाँट दिया। बँटवारे के पश्चात् गाँव व शहरों में साम्प्रदायिक दंगे हुए। लोग भय व डर से इधर-उधर पलायन करने लगे। भारत के लोगों को पाकिस्तान बनने के बाद अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। उनका घर परिवार उजड़ गया। वे अपने गाँवों को छोड़कर कराची व लाहौर में जाने लगे और वहाँ उन्हें शरणार्थी का जीवन बिताना पड़ा। राही ने **'असन्तोष के दिन'** नामक उपन्यास में भी विस्थापन की समस्या को परोक्ष व प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति दी है। राही ने संक्रमण काल में उस दौर में असन्तोष को मुखर अभिव्यक्ति प्रदान की है- **"मुसलमान यहाँ अकलियत में है। अगर आपके बच्चे बांद्रा ईस्ट में महफूज नहीं है तो फिर सारे हिन्दुस्तान में महफूज नहीं है। बांद्रा ईस्ट से निकलना हो तो फिर पाकिस्तान जाइए। पर आप तो शिया है। आप तो पाकिस्तान में भी महफूज नहीं है वहाँ सुन्नी मार डालेंगे।"**[७]

निष्कर्ष यह है कि विभाजन के पश्चात् भारत के लोगों के समक्ष एक नई समस्या पैदा हुई। वह थी मकान की समस्या। शिया मुसलमान सोचने लगे कि पाकिस्तान में जायेंगे तो लोग उन्हें काफिर कहेंगे क्योंकि वहाँ सुन्नी मुसलमानों का बाहुल्य है और अपने देश में भी साम्प्रदायिकता की आग तेजी से फैल रही है। इस प्रकार भारत की जनता विभाजन के पश्चात् आतंक व डर के साये में जीने के लिए विवश रही। भारत में विस्थापन के दो मूल कारण थे- प्रथम मुल्क का बँटवारा व द्वितीय जमींदारी सिस्टम का अंत होना। पहले तो जमींदार लोगों को विश्वास नहीं था कि उनकी जमीनें चली जायेंगी, लेकिन जमींदारी एक्ट के अन्तर्गत बंटाई पर दी गयी सारी जमीन चली गई। लोगों के पास खाने को खाना व पहनने को वस्त्र नहीं रह गए। आर्थिक स्थिति एकदम बिगड़ गई इसलिए वे पाकिस्तान जाने की सोचने लगे। पाकिस्तान जाने का एक कारण यह भी था कि अपने गाँव व शहर में रहकर मजदूरी कार्य नहीं कर सकते थे। परदेश में भला उन्हें कौन जानता। इस कारण भी अनेक लोग अपने घरों से विस्थापित हुए- **"हम देख रहे हैं कि एक दिन सबको पाकिस्तान जाये को पड़िहे।" कम्मो के जाने के बाद हकीम साहब ने कहा "हियाँ अब रहे का गया है? एक ठो जमींदारी रही, त ऊहो चली गयी। नाती-पोतन का बोझ अलग . . . कैसे जिये कोई? . . . हम त सोच रहें कि गाजीपुर चले जायें। अब्बू मियाँ बोले अब गंगौली में रहना बहुत मुश्किल है।"**[८]

देश की स्वतन्त्रता के साथ ही लोगों को विभाजन का दंश झेलना पड़ा। विभाजन के पश्चात् हिन्दू व मुस्लिम सम्बन्धों में खटास आ गई। अधिकांश मुसलमान स्वयं को हिन्दुस्तान में असुरक्षित समझने लगा। अधिकांश जनता हिन्दुस्तान से पाकिस्तान चली गई। अधिकांश युवा वर्ग काम की तलाश में पाकिस्तान चला गया, जिससे उनका परिवार पत्नी बेटा यहीं रह गए और वे स्वयं रोजगार की तलाश में दर-दर भटकने लगे। नौकरी मिल जाने पर वहाँ की सरकार जल्दी से छुट्टी नहीं देती। जब सद्दन अपने गाँव वापिस आता है तो फुन्नन मियाँ पूछते है कि अब कब वापिस जाओगे, तो वह कहता है कि चाचा चार रोज की केवल छुट्टी मिली है। परदेश, परदेश ही होता है और अपना देश अपना। इस सम्बन्ध में एक उद्धरण देखिए- **"ए बेटा! हम्में ई अरमान रह गया कि कोई हुआँ से आये और ई कहे कि ऊ सौ दो सौ क्या रहा। हजारो से पहले तो कोई रुक- त ही नहीं। हुवा पैसे की खेती होती है का? अब त रहियो ना कुछ दिन?"**

"कहाँ साहब, एकदम से हुक्म मिला कि मशरिकी पाकिस्तान जाओ। खाना हो गया। बड़ी मुश्किल से इसकी इजाजत मिली कि जमीन पर सफर करूँ और चार रोज के लिये अपने घर हो आऊँ। परसो चला जाऊँगा।"

"भाई, जब तो टकटकी लगा के तूहे जी भरके देख लेना चाहिए।"[९]

इस प्रकार विस्थापन के कारण एक ही परिवार के अधिकांश सदस्य दो हिस्सों में बँट गए और बड़े-बुजुर्ग अपने बच्चों व नाती-पोतों के चेहरे देखने के लिए तरस गए। विभाजन की लौ ने उनके अरमानों का गला घोंट दिया। निराशा व तन्हाई उनके जीवन में छा गई। विभाजन का सबसे बुरा असर पारिवारिक रिश्तों पर पड़ा। अपने अपनों से बहुत दूर हो गए। पति से पत्नी व माता-पिता से बच्चे बिछुड़ गए। पति से बिछुड़ने के पश्चात् नारी का जीवन अत्यंत दुखमय हो गया और अधिकांश लोगों ने पाकिस्तान जाकर दूसरा विवाह कर लिया। पत्नी को लाने के लिए वीजा चाहिए। जब सद्दन अपने गाँव वापस आता है तो फुन्नन मियाँ पूछते है कि अब बेगम को अपने साथ ले जाता। यहाँ उसका जीवन तिल-तिल नष्ट हो रहा है तो सद्दन कहता है कि वीजा मिलने पर उसे ले जाऊँगा- **"इस बार तो नहीं ले जा सकता, लेकिन वीजा बनवाने को कह आया हूँ। ले जाऊँगा आकर।"**

"और जौन तोरी सरकार तूहें न आये दिहिस?"
"तब कोई और तरकीब करूँगा।"
"तोरी दूसरी बीवी कहाँ है?"
"कराची में है।"[१०]

इस प्रकार विस्थापन का सबसे बुरा असर पारिवारिक सम्बन्धों पर पड़ा। अपने-अपनों से मिलने के लिए तरसते रहे। सरकारी अंकुश के कारण कोई सरलता से इधर-उधर नहीं जा सकता था। पति कराची या लाहौर में नौकरी करता रहा और पत्नी हिन्दुस्तान में चौका-बर्तन करती रही। नारी की स्थिति सर्वाधिक दयनीय हो गई एवं बुजुर्ग एकदम लाचार हो गए। भारतीय नौजवान रोजगार की तलाश में पाकिस्तान तो चले गए लेकिन उसे वहाँ भी दर-दर भटकना पड़ा। पाकिस्तान के लोग उन्हें काफिर कहते थे, वहाँ वे अपना जीवन शरणार्थी के रूप में गुजारते है। डर, भय व रोजगार के कारण पाकिस्तान आए लोगों को अपने वतन की जब याद आती, तो वे अत्यंत उदास हो जाते। सद्दन एक ऐसा नवयुवक है जो रोजगार की तलाश में पाकिस्तान चला गया। लेकिन उसका मन वहाँ नहीं लगता और जब भी मोहर्रम का दिन आता, तो वह अत्यंत उदास हो जाता। इस सम्बन्ध में एक उद्धरण देखिए- **"वह अपने मुल्क पाकिस्तान में पनाह-गुजीन कहा जाता था। इतने दिनों में उसने यह कभी नहीं सोचा कि वह किससे भागकर वहाँ पनाह लेने पहुँचा है। साल तो गुजर जाता, लेकिन जब मुहर्रम आता, तो वह उदास हो जाता।"**[११]

निष्कर्षत:

हम कह सकते है कि विस्थापन की त्रासदी को राही जी ने बहुत ही सूक्ष्म व गहन रूप से रेखांकित किया है। दो राष्ट्र के बन जाने के कारण जो अस्थिरता व असुरक्षा पैदा हुई वो विस्थापन के रूप में मुख्य समस्या बनकर उभरी। शोध से प्राप्त तमाम निष्कर्षों से यह विदित होता है कि राही ने विस्थापन के दंश को, उसकी सम्पूर्णता में व्यक्त किया है। यह विस्थापन मात्र भौगोलिक न था अपितु हजारों वर्षों की सांझी संस्कृति, सभ्यता, मूल्य व आपसी सम्बन्धों का विस्थापन था। राही ने इन सभी घटनाओं को उनके पूरे यथार्थ के साथ व्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ० पी०एल० गौतम- आधुनिक भारत का इतिहास, पृ० ४८२
2. डॉ० भगवानदास वर्मा- कहानी की संवेदनशीलता : सिद्धान्त एवं प्रयोग, पृ० ८२
3. डॉ० रजनी पामदत्त- आज का भारत, पृ० १६८
4. राही मासूम रज़ा- आधा गाँव, पृ० २८२
5. वही, पृ० २८४
6. राही मासूम रज़ा- असन्तोष के दिन, पृ० २९३
7. वही, पृ० ५५
8. राही मासूम रज़ा- आधा गाँव, पृ० २९५
9. वही, पृ० ३१८
10. वही, पृ० ३१८
11. वही, पृ० ३१९

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

संत रैदास के काव्य में प्रगतिशील चेतना

प्रा. डॉ.दळवे सूर्यकांत माधवराव

हिन्दी विभाग, शोध निर्देशक शरदचंद्र महाविद्यालय, शिराढोण, ता. कळंब जि. उस्मानाबाद

Corresponding author- **प्रा. डॉ.दळवे सूर्यकांत माधवराव**

Email-suryakantdalve@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7694844

प्रस्तावना :-

भारत मे संत कवियों का साहितय प्रगतिशील दृष्टिकोण से सर्वश्रेष्ठ है | प्रगतिशील लेखन साहित्य की परंपरा प्राचीन रही है | प्रगतिशील चेतना की दृष्टि से संत रैदास का साहित्य बेजोड है | भारत मे समाज कल्याण के क्षेत्र में संतो का अहम योगदान रहा है | संतो ने अपनी वाणी और उपदेशों से समाज में एकता, सद्भावना और प्रेम फैलाने का कार्य किया है | संत रैदास भी ऐसे महान संतो में से एक थे जिन्होंने कर्म को ही पूजा मानकर ईश्वर प्राप्ति का रास्ता बताया है | संत रैदास का जन्म निम्न परिवार मे होकर भी उत्तम जीवन शैली, उत्कृष्ट साधना पध्दति और उल्लेखनीय आचरण के कारण वे आज भी भारतीय धर्म साधना के इतिहास में आदर के साथ याद किये जाते है | संत रैदास पहले भक्त थे बाद में कवि चौदहवी शती 1398 में उत्तर भारत के काशी के समीप मंडुआ नामक गाँव में गरीब चम्हार परिवार में रैदास का जन्म हुआ | वे स्वयं अपनी जाति को बताते हुए कहते है कह रैदास खलास चमार | या ऐशी मेरी जाति विख्यात चमार |

संत रैदास ने अपने काव्य साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराईयों को खत्म करने का अहम प्रयास किया है और उसमे उन्हे सफलता भी मिली है | संत रैदास की मधुर एवं सहज वाणी भारतीय धर्मशाखाओं के मध्य सेतु की राह है | बचपन से ही रैदास का झुकाव संत मत की तरफ रहा और उन्होंने समाज में फैली छुआ-छुत, उँच-नीच की भावनाओं को दूर करने का सफल प्रयास किया है |रविदास के पद नारद भक्ति सूत्र और रविदास की बाणी उनके प्रमुख साहित्य संगृह है | रैदास ने उँच-नीच की भावना तथा ईश्वर भक्ति के नाम पर किये जानेवाले विवाद को निरर्थक बताया है | सभी भारतीय समाज मिल जुलकर, प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया है | रैदास स्वयं भक्तिपूर्ण तथा मधुर भजनों की रचना करते थे और उन्हे भाव विभोर होकर सुनाते थे | उनका मानना था कि राम, कृष्ण, अल्लाह, करीम, राघव आदि सभी एक ही ईश्वर के अलग-अलग नाम है | वेद, पुरान, कुराण आदि ग्रंथो में एक ही परमेश्वर का गुणगाण किया गया है |

कृस्न, करीम, राम, हरि, राघव जब लग एक न देखा |
वेद, कुशन, पुरानन सहज एक नहिं देखा |

संत रैदास जाति पाती की प्रथा का कठोर शब्दों मे विरोध करते है | रैदास चाहते है कि जाति प्रथा मानव जीवन से सदा-सदा के लिए खत्म हो | लेकिन भारतीय समाज व्यवस्था जाति-पाती के बंधन में ऐसी जकड गई है कि उससे बाहर निकलना नामुनकिन था | फिर भी संत रैदास ने ऐसी सडी गली रुढी परंपराओं पर तीखा प्रहार अपने दोहों के माध्यम से किया है | केले के तने को छिला जाये तो पते के निचे और पते के नीचे पता मिलता है और अंत में कुछ भी नहीं मिलता है | ठीक उसी पकार से मानव भी जातियों मे बंट गया है | इन जातियों मे इन्सान को आलग-आलग हिस्सों मे बांट दिया है | अंत मे इन्सान भी खत्म हो जाता है | लेकिन जातियाँ खत्म नही होती है | संत रैदास कहते है कि जब तक जातियाँ खत्म नही होंगी तब तक इन्सान एक नही हो सकता है |

जाति जाति में जाति है, जो केतन के पात |
रैदास मनुष ना जुड सके जब तक जाति न जात ||

आज के वैज्ञानिक युग में भी जाति विषमता पनप रही है, इस कारण मानव में दूरी बढ रही है | नैतिक मुल्यों का दिन ब दिन होता ऱ्हास | सभी में बढ रही स्वार्थी वृत्ति यह मानव जाति को लगा हुआ रोग है | इसे जड से निकाल फेकना होगा, हर क्षेत्र में समानता लानी होगी इस संदर्भ में संत रैदास कहते है - जात पात के फेरमहि उरझि रहइ सम लोग | मानुषता कूं खता हइ रविदास जात का रोग ||

समाज में मानवता का ज्ञान देनेवाले ज्ञानी पुरुष को संत कहा जाता है | संत रैदास की प्रगतिशील चेतना पोथियों के पढने से नही आयी बल्कि इसमें आत्मानुभूति की कडवाहट भी है | संत रैदास ने समाज जागृती हेतु अहिंसा, परोपकार का जहाँ समर्थन किया है, वही काम, क्रोध, मद्यपान, अंधविश्वास आदि व्यसनों का विरोध भी किया है |

सुरसरी सलत कित बारुनी रे | संतजन करत नहि पानं |
सुरा अपवित्र नत अवर जल रे | सुरसरी मिलत नहि होत आन |

प्रगतिशील चेतना के पक्षधर संत रैदास लोगों की मानसिकता में परिवर्तन लाना चाहते थे | संत रैदास समानता के पक्षधर है |

संत रैदास हर एक व्यक्ति में समानता लाना चाहते है | उनकी नजर में सब के सब एक समान है | प्रभु के दरबार में सब समान है | किसी को भी किसकी जन्म जाति पूछने का हक्क नही है | प्रभू के लिए हर एक व्यक्ति एक समान है, उसमे भेदभाव नही है | लेकिन भेदभाव व्यक्ति ने बनाएँ है | संत रैदास कहते है कि सब प्रभू के पूत्र है और इसलिए प्रभू नजरों मे हम सब समान है | ऐसे में हम इस झमेले में क्यो पडते है कि कौन किस जाति का है | लेकिन प्रभू के दरबार में कोई भी जाति नहीं है | इस संदर्भ में संत रैदास कहते है

किसी की जन्म जाति पूछने का हक नही है |
जन्म जात मत पूछिए का जात अरु पात |
रैदास पूत सी◌ा प्रभू पूछिए का जात अरु पात |

भक्तीकालीन काव्य लोकमंगल की कामना को केंन्द्र में रखकर लिखा गया साहित्य है | आज जीवन मूल्य टुट रहे है | दया, प्रेम, सहानुभूति, संवेदना, सुविचार इन मान मूल्यों का महत्व दिन प्रति दिन क्षीण होता जा रहा है | लोभ, अहँकार, आचार, विचार में हीनता धन प्राप्ती के लिए मोह यह प्रवृत्तियाँ पनप रही है | संत रैदास ने धर्म को मानव धर्म के रूप में देखा और एकता और समानता की बात की है| मान जाति के प्रति आदर, कर्म के प्रति निष्ठा और प्रेम भावना से ही व्यक्ति, समाज और देश का कल्याण हो सकता है | मानव की जाति एक है | सब समान है, परिश्रम ही उन्नति का पथ है | समाज में दिन ब दिन बढती हिंसा, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार शोषण को खत्म करने का सफल प्रयास संत रैदासजी ने किया है | आज मानव के भीतर से प्रेम तत्व खत्म हो गया है | स्वार्थ में मानव आज अंधा हो गया है, तो लोकल्याण की भावना बहुत दूर की बात है | वर्तमान परिवेश में संत रैदास के विचार प्रासंगिक है | दीन दलितों की सेवा से ही मानव को मुक्ति प्राप्त हो सकती है | यह सेवा भावना लोककल्याण और प्रभू प्राप्ती का रास्ता है इस संदर्भ में संत रैदास जी कहते है -

दीन दुखी करि सेव महि, लागि रहयो रविदास
निसि बासर की सेव सी, प्रभु मिलन की आस |

दीन दलितों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है | कर्म करते रहो फकी अपेक्षा मत करो |

निष्कर्ष :

आज भी संत रैदास का नाम बडे गर्व के साथ लिया जाता है | प्रगतिशील विचारधारा से जुडे संत कवियों में रैदास अपनी अलग पहचान बनाने में सफल सिध्द हुए है | संत रैदास जाति-पाती विरहीत एक आदर्श स माज की कल्पना करते है, जिसमे सभी को समान न्याय मिले | समाज में समजा स्थापित करने की बात करते है, तो दुसरी ओर समाज में फैले भ्रष्टाचार नैतिक मुल्यों का ऱ्हास, हिंसा, पाखंडत्व और जाति-पाती के बंधनों के परे समाज की कामना करते है | मानवता की पताका लहराने के लिए संत रैदास का साहित्य प्रासंगिक है | संत रैदास का साहित्य जन सामान्य में क्रांति लानेवाला साहित्य है | संत रैदास ने अपने साहित्य के माध्यम से जाति, वर्ग एवं धर्म के मध्य की दूरियाँ मिटाने का भरसक प्रयास किया है | उनका साहित्य सुधारणावादी साहित्य रहा है | संत रैदास के विचार सामाजिक निती मुल्यों से बंधे हुए है इसी कारण संत रैदास का साहित्य कालजयी है |

संदर्भ संकेत :-

1. गुरु रैदास - बौध्द स्वरुप चंद्र - पृ.31
2. संत रविदास - विवेक मोहन
3. गुरु रविदास वाणी एवं महत्व - मीरा गौतम पृ.102
4. प्रमुख संत कवि (दृष्टव्य) - डॉ.रामप्रसाद मिश्र प.27
5. रैदास रचनावली - रजनीश गोविंद
6. संत रविदास विचारक और कवि - डॉ.पदम गुरुचरण सिंह

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

पारधी जमातीचे सामाजीक परिवर्तन एक संशोधन
(नागपूर जिल्हयातील ग्रामीण भागात स्थायी झालेल्या पारधी जमाती)

डॉ. प्रल्हाद धोटे
सहयोगी प्राध्यापक जोतीराव फुले समाजकार्य महाविद्यालय उमरेड, जि–नागपूर
Corresponding author- डॉ. प्रल्हाद धोटे
Email-pralhaddhote50@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7694849

पारधी हा शब्द 'पारधी' या शब्दापासून निर्माण झाला आहे. पारधी म्हणजे शिकार म्हणून शिकार करणारे असे पारधी जमात शिकार करणे आणि आपली उपजिविका भागविणे हा त्यांचा पारंपारीक व्यवसाय असल्याचे इतर साहित्यावरुन दिसून येते. भारतामध्ये अजूनही रानावनात भटकणाऱ्या ज्या जमाती आहे. त्यापैकी पारधी जमात ही एक पूर्वाश्रमीची आदिवासी जमात आहे. ही पारधी जमात भरतीय संविधानीक अर्थाने अनुसुचित जमाती मध्ये मोडते. सेट्रल प्रोव्हीजन्स आणि बेरार मधील 1911 मध्ये त्याची संख्या भारतात 15000 होते. ते भारत भर पसरलेले होते. पारधी जमात फासे पारधी गाय पारधी, चित्ता पारधी, बैल पारधी, बहेलीचा मिशीकर, मोघारी, शिकारी टाकणकर अश्या अनेक नावांनी ओळखले जाते. ते रानावनातील लहान–लहान प्राण्यांची, मोठया प्राण्यांची व पक्षांची शिकार करतात. घरातील स्त्रिया गावात भिक मागुन आणतात. मुलाबाळांचा व कुटुंबाचा उदर निर्वाहाचा प्रश्न सोडवितात.

पारध्याच्या वस्तीत पारधवाडा तांडा अशा नावांनी ओळखले जाते. शहराजवळ अधवा खेडयाच्या एका कोपऱ्यात ते तात्पुरती वस्ती उभाारुन राहतात. त्यांची घरे म्हणजे कापडाची अथवा गवताची पाळे आणतात.

सदर संशोधन नागपूर जिल्यातील ग्रामीण भागात स्थायी झालेल्या नागपूर जिल्यातील सावनेर, काटोल, पारशिवनी, कामठी, भिवापूर, उमरेड, हिंगणा, कळमेश्वर अशा बारा तालूक्यात डोंगरगाव, उमठा, दहेगांव, शेकनगर, वानाडोंगरी, गड्डेपार, राजुरवाडी, चांपा, वळद या गावात पारधी कुटुंबे स्थायी स्वरूपात आढळते. जवळपास 550 पारधी कुटुंबे स्थायी असून यापैकी 225 कुटुंबाचा अध्ययनसाठी उपयोग केला.

मुख्य शब्दः– सामाजिक मुल्ये, संस्थागत बदल, मालकी हक्कामध्ये परिवर्तन, कुटुंबव्यस्थेमध्ये परिवर्तन.

उद्देशः–

1) पारधी जमातीच्या सामाजिक मुल्ये व संस्थागत परिवर्तन कितपत झाले याचा अभ्यास करणे.

2) पारधी जमातीच्या कुटुंबव्यस्था व संबधीत चालीरीती मध्ये काय परिवर्तन झाले याचा अभ्यास करणे.

उपकल्पनाः–

1) पारधी जमातीच्या कुटुंबव्यस्थेत परिवर्तन बदल झालेले नाही.

2) पारधी जमातीचे वैचारीक दुष्टया आत्मसातीकरण झालेले आहे.

3) पारधी जमातीच्या सामाजीक मुल्ये व संस्थागत परिवर्तन झालेले आहे.

पारधी जमातीचे सामाजीक परीवर्तनामध्ये समाजीक मुल्ये, संस्थात्मक बदल, मालकी हक्क यामध्ये झालेले परिवर्तन पुढील प्रमाणे

1. पारधी जमातीचा शैक्षणिक दर्जा अत्यंत खालावलेला आहे. त्यांच्यातील बहुतांश वृध्द व प्रौढ व्यक्ती निरक्षर व प्राथमिक शिक्षण घेतलेले आहे. परंतू सध्याच्या परिस्थितीत पारधी कुटूंबातील मुले मुली शिक्षण घेतात. हि जमातीच्या शैक्षणिक दर्जात भविष्यात वाढ करणारी बाब आहे. डॉ. लिनकुमार बावने लिखित ''भटक्यांचा भग्न संसार आणि संस्कृती'' या पुस्तकात पारधी समाज पिढयानपिढया निरक्षर आहे असे म्हटले आहे.

2. पारधी जमाती आर्थिकदृष्टया मागासलेले आहे. त्यांचा पारंपारिक व्यवसाय शिकार करणे यामध्ये परिवर्तन झाले आहे. त्याजागी दारु व शेती व्यवसाय त्यांनी स्विकारला आहे. वन विभागाच्या कायदयामुळे तसेच पोलिस खाते त्यांना सतत शिकारी व चोर समजून त्यांचा सतत छळ करीत आहे. तसेच शिक्षण नसल्यामुळे शासकिय, अशासकीय तसेच खाजगी नोकरी पासून वंचित आहे. इतर सभ्य समाजसुध्दा त्यांना काम देण्यास असमर्थता दर्शवितात. म्हणून त्यांनी दारु व्यवसाय स्विकारला आहे. त्यातून त्यांना थोडाभार पैसा तसेच त्यांच्यातीलच इतर लोकांना मजूरीसुध्दा मिळते. तसेच काही लोकांकडे शेती असून बरेचशे अल्पभूधारक आहे. शेती जवळपास कोरडवाहू आहे. शेती उत्पादनाच्या बाबतीत मागास आहे. बऱ्याच शेतकऱ्यांना शेतीवरील मालकी हक्क मिळाला नाही. याचे कारण जात प्रमाणपत्र मिळण्यास अनेक शासकिय अडचणी आहे. डॉ. लिनकुमार बावने लिखित ''भटक्यांचा भग्न संसार आणि संस्कृती'' या पुस्तकात या जमातीचा मुख्य व्यवसाय जंगलातील प्राण्यांची व पक्षांची शिकार करणे, त्यांचे मांस विकून आपला प्रपंच चालविणे हा आहे असे आढळून येते.

3. पारधी जमातीत अजूनही संयुक्त कुटुंब पध्दती अस्तित्वात आहे. परंतू त्यांच्यातील कुटूंबात मातृसत्ताक पध्दती राहली नाही. त्यामध्ये परिवर्तन होऊन त्याजागी पितृसयत्तक कुटुंब पध्दती अस्तित्वात आहे. पारधी जमातीत कुटुंबात मातृसत्ताक पध्दती होती असे त्यांच्या विषयी असलेल्या दुर्मिळ साहित्यावरुन आढळून येते.

4. पारधी जमातीचे वास्तव्य आजही गावाच्या बाजूला एखादया टेकडयावर दिसून येते. त्यांच्या निवासाच्या

व्यवस्थेत परिवर्तन झालेले नाही. परंतू पूर्वीच्या काळी पालाची, कुडाची घरे होती असा उल्लेख श्री पंढरीनाथ पाटील यांच्या ''भटके भाईबंध'' या पुस्तकात उल्लेख आला आहे. परंतु आजच्या परिस्थितीत पालाचे, कुडाचे तसेच थोडेफार विटामातीचे परंतु कच्च्या स्वरुपात घरे दिसून येतात.

5. पारधी जमातीतील आपसातील सर्वच व्यवहार त्यांच्या बोलीभोषेतच (वाघरी भाषेतच) होतात. त्यामध्ये परिवर्तन झालेले नाही.

6. पारधी जमातीतील जाती पंचायती आजही अस्तित्वात असून त्यामध्ये परिवर्तन झालेले नाही. श्री पंढरीनाथ पाटील यांच्या ''भटके भाईबंध'' या पुस्तकात पारधी जमातीच्या जाती पंचायतीचा उल्लेख आढळतो.

7. पारधी जमातीतील वयोवृध्द व प्रौढव्यक्ती जे निरक्षर व प्राथमीक शिक्षण घेतलेले आहे. त्यांच्यामुळेच पारधी जमातीतील जातीपंचायतीचे अस्तित्व टिकून आहे.

8. पारधी जमीच्या विवाह संस्थेत बऱ्याच बाबतीत परिवर्तन झालेले आहे. या जमातीतील विवाहाच्या बाबतीत सौ. पुष्पा ना. चौधरी यांच्या ''पारधी–जिवन आणि भाषा'' श्री पंढरीनाथ पाटील यांच्या 'भटके भाईबंध'', डॉ. लिनकुमार बावने यांच्या ''भटक्यांचा भग्न संसार आणि संस्कृती'' या पुस्तकांमध्ये उल्लेख आढळतो.

9. पारधी जमातीतील विवाह संस्थेच्या बऱ्याच बाबतीत जमातीतील लोकांच्या मानसिकतेते बदल झालेला आहे.

10. पारधी जमातीतील शिक्षित लोकांचा जमातीतील आंतरजातीय विवाहास मान्यतेच्या विचाराशी सहसंबंध आहे.

11. पारधी जमातीतील देवीदेवतांविषयीची श्रध्दा व विश्वास यामध्ये परिवर्तन झालेले नाही. आजही जमातीतील लोक कालीमाता, भवानी, शंकरभगवान, नागोबा, या देवतांची पुजा करतात.

12. बहूतांश पारधी सिसोदिया या वंशाचे आहेत. इतर पारधी जमातीच्या साहित्यात महाराणा प्रताप यांचे वंशज असल्याचे लिखानात आढळतात.

13. पारधी जमाती दसरा, दिवाळी, होळी साजरी करतात. त्यांच्या धार्मिक संस्थेत वरील सण समारंभाच्या बाबतीत परिवर्तन झालेले नाही.

14. पारधी जमातीच्या लोकांमध्ये अंधश्रध्देच्या बाबतीत विचारामध्ये परिवर्तन झालेले नाही.

15. पारधी जमातीतील रुढी, परंपरेनुसार स्त्री प्रसूतीविषयीच्या धर्म कल्पनेविषयीच्या जमातीच बहूतांश लोकांच्या मानसिकतेत परिवर्तन झालेले नाही. आजही कुटुंबातील स्त्रीची प्रसूती त्यांच्यातील रुढी परंपरेनूसार केली जाते.

16. पारधी जमातीतील फार कमी लोक शिक्षित असून त्यांच्यात जमातीच्या स्त्री प्रसूतीविषयीच्या विचारात परिवर्तन झाले आहे.

17. पारधी जमातीतील प्रथा परंपरेनूसार स्त्री/पुरुषामध्ये वागणूकीबाबत दिलेल्या मर्यादा विषयीच्या धर्मकल्पनेबाबत जमातीतील लोकांच्या मानसिकतेत बदल झालेला नाही.

18. पारधी जमातीतील रुढी परंपरेनूसार असलेल्या मृत व्यक्तीच्या अंत्य संस्काराविषयीच्या कल्पनेत जमातीतील लोकांच्या मानसिकतेत बदल झालेला नाही.

19. पारधी जमातीतील लोकांचे वैचारिक दृष्टया आत्मसातीकरण झालेला आहे. आत्मसातीकरण म्हणजे इतर समूहाच्या संस्कृतीशी समरस होणे होय. पारधी लोक हातात इतर समूहाशी चांगले संबंधी ठेवणे, संबंध जोडणे, टिकवून ठेवणे, धार्मिक कार्यात भाग घेणे, इत्यादी बाबतीत त्यांच्या आत्मसातीकरण झालेले आहे.

निष्कर्ष, उपाय, सुचनाः–

पारधी जमातीच्या लोकांनी शासकीय योजनांचा उपयोग स्वतःच्या विकासाकरीता करावा. पारधी समाजामध्ये असलेल्या अंधश्रध्दा दूरकरण्यासाठी विविध सामाजिक संस्था व प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्त्यादवारे जाणीव–जागृती विषयीचे कार्यक्रम त्यांच्या वस्तीत राबविणे गरजेचे आहे. पारधी वस्तीत आरोग्यावर आधारीत कार्यक्रमाचे आयोजन करून त्या समाजात जण–जागृती करणे महत्वाचे आहे. जेणेकरून त्यांच्यातील अंधश्रध्दा दूर होऊन त्यांचे सामुहिक आरोग्य चांगले होईल. शासनाने रोजगार विषय कार्यक्रम पारधी वस्तीमध्ये राबवावे. पारधी वस्तीत विविध लोकजागृतीचे, विकासाचे शिक्षणाचे कार्यक्रम राबवावे. जेणेकरून त्यांच्यामध्ये शैक्षणिक जागृती होऊन शैक्षणिक मागसलेपणा दूर होईल. सामाजिक संस्थानी विविध सामाजिक, आर्थिक व आरोग्य विषयक शासकिय योजनाच्या माध्यमातून पारधी बेडे यांची निवड करावी. विकासाच्या प्रक्रियेत या समाजाला आणावे. तसेच विविध योजनांची माहिती देऊन जनजागृती करावी. जेणे करून सभ्य समाजासोबत राहून विकासाच्या प्रक्रियेत येऊन सकारात्मक समाजीक मुल्ये, संस्थात्मक बदल, मालकी हक्क यामध्ये परिवर्तन होईल.

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बावने लीनकुमार 2009 भटक्यांचा भग्न संसार आणि संस्कृती, सुधीर प्रकाशन, वर्धा
2. चौधरी पुष्पा ना. ऑक्टो. 2006 पारधी :– जिवन आणि भाषा
3. देवगांवकर शैलेजा 2006. वैदर्भीय आदिवासी जीवन आणि संस्कृती मंगेश प्रकाशन, नागपूर
4. मेश्राम सुरेश, सप्टेंबर 2000, प्रात्यक्षीक सामाजिक संशोधन
5. पाटील पंढरीनाथ, 1 डिसेंबर 1990. भटके भाईबंध सुरेश एजन्सी, पुणे

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

तांबूल सेवनाचे (विड्याचे पान खाणे) प्राचीन व आधुनिक दृष्टीने महत्त्व

नेहते मिनल अरविंद[1], डॉ. भाग्यश्री भलवतकर[2]

[1]पीएच.डी. संशोधक विद्यार्थी

[2]संस्कृत विभाग प्रमुख,मू. जे. महाविद्यालय, जळगाव

Corresponding author- **नेहते मिनल अरविंद**

Email-minalsachin152@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7694907

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धती प्राचीन काळापासून देशात अस्तित्वात आहे. विज्ञान आणि तंत्रज्ञानाच्या युगातही आयुर्वेदाचे महत्त्व कमी झालेले नाही. त्यामुळे आजही अनेक लहान-मोठ्या आजारांवर आयुर्वेदिक उपचार फायदेशीर ठरत आहे. पूर्वीच्या काळी मानव निसर्गाच्या सान्निध्यात रहात होता. त्याचे दैनंदिन कार्यक्रम उदा. दंतधावन (दात घासणे), न्याहरी, भोजन, पेयपान, तांबूल (भोजनोत्तर पान खाणे), पाचक औषधे, विविध रोग, प्रसूती, बाळंतपण समारंभ, पूजा-अर्चा वगैरे कार्यक्रमात विविध वनस्पतींचा वापर होत असे. त्यामुळे मानवाला वनस्पतींचा चांगला परिचय होता. प्राचीन भारतीय संस्कृतीची शेती आणि आयुर्वेद ही प्रमुख वैशिष्ट्ये होती. त्यामुळेच भारतीयांना तेव्हापासून आयुर्वेदाचे व वनस्पतींचे सखोल ज्ञान होते. मानव दैनंदिन जीवनात अनेक वनस्पतींचा वापर करतो जसे कडूनिंब, कोरफड, हळद, आवळा, भृंगराज, तुळस, अद्रक, नागवेलीचे पान, बेलाची पाने, आंब्याची पाने, मेथीच्या बिया, मसाल्याचे पदार्थ - लवंग, मिरे, वेलदोडे, तेजपान, मोहरी, ओवा, दगडफूल इत्यादी.

प्राचीन काळापासून भोजनोत्तर तांबूलग्रहण (पान खाणे) करण्याची पद्धत आहे. संस्कृत महाकाव्य रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक ग्रंथ तसेच संस्कृत साहित्य ग्रंथांमध्ये नागवेलीचा उल्लेख प्रचुर मात्रेत आहे. याच्या उत्पत्तीविषयी बरई जमातीच्या (नागवेलीच्या पानांचा व्यापार करणारे लोक) लोकांविषयी कथा प्रचलित आहे. ती अशी महाभारतातील युद्धोपरांत पांडवांनी अश्वमेध यज्ञ आयोजित केले होते. मांगलिक कार्यासाठी त्यांनी पाताळलोकातील वासुकी नागराजाजवळ आपला दूत पाठविला. वासुकीने त्याची करंगळी कापून दिली व तिला जमिनीत रोपण करण्यास (पेरण्यास) सांगून त्यातून नागवेल या वनस्पतीची निर्मिती झाली. म्हणून तिला नागवेल्ल असेही म्हणतात. अतिप्राचीन काळामध्येही याचा उपयोग मुखशुद्धी, सुगंधी तसेच रूचीवृद्धी (तोंडाला चव येण्यासाठी) यासाठी व देवपूजनादि शुभकर्म, उत्सवांध्ये सुस्वागतार्थ नागवेलीचा उपयोग होत असे.

बाणभट्टाच्या साहित्यामध्ये मुख्यत: कादंबरीमध्ये तांबूल सेवनाचे भरपूर संदर्भ सापडतात. अतिथींना पान देणे व पानांची खरेदी -विक्री करणारे तांबूलिक यांचाही उल्लेख आढळतो.

परिपीतधूमवर्तिरूपस्पृश्य च गृहीतताम्बूल तस्मात् ॥91॥[1]

उपजातपरिचयश्चास्मै ताम्बूलमदापयत्..... ।[2]

ताम्बूलिकं भवनमिवकृतं ..... ॥93॥[3]

त्याकाळी अतिथींना, गृहस्थांना पान देण्यासाठी एक सेवकाची योजना केलेली असायची.

कादम्बर्यास्ताम्बूलदायिनी तमालिकां ..... ॥94॥[4]

कृतसन्ध्यानमस्कृतिगृहीतताम्बूल: केयूरक।[5]

पत्रलेखानामताम्बूल करङ्कवाहिनी ..... ॥96॥[6]

बाणाने एकास्थानी लतेच्या ऐवजी वृक्षही म्हटले आहे.

ताम्बूलवृक्षकान् बिभ्राणेनानुगम्यमानानि ..... ॥97॥7

विंध्याटवीमध्ये जांभूळ आणि लिंबाच्या झाडांवर नागवेल चढल्याचा उल्लेख आहे.

तरल-ताम्बूलीस्तम्बजालकितजम्बूजम्भीरवीथय: .....॥98॥[8]

त्याचप्रमाणे आयुर्वेदाचे बृहत्रयी ग्रंथ यामध्येही नागवेलीच्या पानांचे गुणधर्म वर्णन केलेले आहे. चरकसंहितेत मात्राशितीयम् अध्यायामध्ये सुगंधी द्रव्यांनी मुखधारण करण्याचा उल्लेख आहे. मुखशुद्धी भोजनात रूचि उत्पन्न होण्यासाठी, मुख दौर्गंध नाश करण्यासाठी सुपारी, कंकोळ, लवंग, नागवेलीची पाने वेलची तोंडात चघळण्यास सांगितले आहे.

धार्याण्यास्येन वैशद्यरूचि सौगन्ध्यमिच्छता।

कक्कोलस्य फलं पत्रं ताम्बूलस्य शुभं तथा॥77॥ [9]

सुश्रुतसंहितेत अन्नपानविधी अध्यायात शाकवर्गात ताम्बूलचा उल्लेख आहे. ताम्बूल सुगंधी स्वरहितकर, मुखकण्डू (मुखप्रदेशी खाज), क्लेद, दौर्गंध्यनाशक आहे.

ताम्बूलपत्रं तीक्ष्णोष्णं कटुपित्तप्रकोपणम्।
सुगन्धि विशदं तिक्तं स्वरं वातकफापहम्॥279॥ [10]

अष्टांगहृदय संहितेत सूत्रस्थानातील दिनचर्या अध्यायामध्ये ताम्बूल सेवनाचा विधी सांगितला आहे.

ततो नावन गण्डूष धूमताम्बूलभाग्भवेत् ॥6॥ [11]

नस्य (नाकात औषध टाकणे) गण्डूष (औषधी द्रव्यांच्या काढ्याचा गुळणा), धुम्रपान (औषधी द्रव्यांचा धूर ओढणे) यानंतर ताम्बूल सेवन करावे. तसेच ताम्बूलसेवन निषेध म्हणजेच पान कोणी खाऊ नये याचाही उल्लेख आहे.

ताम्बूलं क्षतपित्तास्त्र रूक्षोत्कुपितचक्षुषाम्।
विषमूर्च्छा मदार्तानामपथ्यं शोषिणामपि ॥7॥[12]

क्षत तथा उर:क्षत व्याधीने (छातीचे आजार) पीडित, पित्तविकार, रक्तविकार (रक्तपित्त), रूक्ष शरीर असणारे, नेत्ररोगी, विषविकार, मूर्च्छा (चक्कर), मदात्यय, शोषरोग (कृशता) यामध्ये ताम्बूल सेवन करू नये कारण नागवेलीचे पान तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, रूचिकारक, कषाय (तुरट रसाचे), तिक्त, कटु (तिखट, कडवट) व लघु (पचनास हलके) असते. यामुळे कामवासना, रक्तधातू, पित्तधातू वाढते. शरीरात अधिक उष्णता निर्माण होते. याचे अधिक सेवन दुर्व्यसन आहे. उपाशीपोटी पान कधीही सेवन करू नये.

आयुर्वेदामध्ये वनस्पतींना चिकित्सेमध्ये अनन्य साधारण महत्त्व दिलेले आहे. या भरपूर वनसपतींची माहिती एकत्र करून पूर्वीच्या काळी निघंटुची रचना विविध आचार्याकडून केली गेली. यामध्ये, 16 व्या शतकातील भावमिश्र विरचित भावप्रकाशनिघंटु हे वनस्पतींची उत्कृष्ट, सखोल व अचूक माहिती देणाऱ्यांमध्ये प्रसिद्ध आहे. यामध्ये ताम्बूल या संस्कृत नावाने नागवेलीचे गुणधर्म, उपयोग वर्णित आहे.

ताम्बूलं-तमु ग्लानौ। (याची पाने पाण्याशिवाय कोमेजून जातात) भावप्रकाश निघंटुमध्ये गुडुच्यादि वर्गामध्ये ताम्बूलाचे (नागवेलीचे) वर्णन आहे.

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागिनी नागवल्लरी।
ताम्बूलं विशदं रूच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरं सरम्॥11॥ [13]
वश्यं तिक्तं कटु क्षारं रक्तपित्तकरं लघु।
बल्यं श्लेष्मास्य दौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् ॥12॥[14]

नागवेलीचे संस्कृत नावे व गुण :

नागवेलीचे ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागिनी, नागवल्लरी, ताम्बूल ही सर्व संस्कृत नावे आहेत. पानांचे गुण-विशद गुण युक्त रूचिकारक, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, कषाय रसयुक्त, वश्य (वशकारक), तिक्त (कडवट), कटु रसयुक्त (तिखट), क्षार गुणयुक्त, रक्तपित्त उत्पादक, लघु (पचनास हलके), बलकारक आहे. कफ, मुखाची दुर्गंधी, मल, वात तसेच श्रम यांचा नाश करणारे आहे.

राजनिघंटुमध्ये श्रीवाटी (सिरिवाडी पान), अम्लवाटी (अंबाडे पर्ण), सतसा (सातसीपर्ण), गुहागरे (अडगर पर्ण), अम्लसरा (मालवामध्ये उगवणारे अंगरापर्ण), पटुलिका (आंध्रप्रदेशात उगवणारे पोटकुली पर्ण), ह्वेसणीया (समुद्र देश पर्ण) हे सात भेद व त्याचे गुणवर्णन केले आहे.

श्रीवाटी मधुरा तीक्ष्णावातपित्तकफापहा । ..... ॥ [15]

धन्वन्तरि निघंटु मध्ये पानाचे 13 गुण वर्णित आहे जे स्वर्गातही दुर्लभ आहे पान, तीक्ष्ण (तिखट), कटु, उष्ण, मधुर, क्षारगुणयुक्त, कषाय (तुरट), तसेच वात, कृमि, कफ, दु:ख यांचे नाशक आहे. हे धारणशक्ति (बुद्धी) व कामशक्ती यांचे वर्धन करते.

भावप्रकाश ग्रंथामध्ये दिनचर्या प्रकरणामध्ये झोपून उठल्यावर, स्नानानंतर, भोजनपश्चात्, वमनानंतर (उलटी नंतर), तसेच राजसम्मान, विद्वत्सम्मान, रतिकाल, युद्धावर जाताना, ताम्बूल सेवनाचे विशेष महत्त्व असल्याचे वर्णित आहे.

नागवेल - विविध भाषांमधील नाव

हिन्दी	-	पान
बंगाली	-	पान, खासीपान
मराठी	-	नागवेल, विड्याचे पान
तेलगु	-	तमालपाकु
तामिळ	-	वेत्तिलै
गुजराती, मारवाडी	-	नागरवेल
मल्याळम	-	वेत्तिल
फारसी	-	तंबोल, बर्गे, तम्बोल
कोकणी	-	पान
कन्नड	-	अम्बाडीयेले
उर्दू	-	पान
उडिया	-	पानो
अरबी	-	तंबूल

इंग्लीश - बिटल लिफ (Betel leaf)

लॅटीन - पाईपर बिटल लिन्न (Piper betal. Linn)

Family (कुळ) - Piperaceae

स्वरूप - सर्वप्रसिद्ध, सर्वप्रिय वेल, मूलरोहिणी वेलकिंवा लता, अत्यंत मनमोहक कोमल.

कांड - अर्धकाष्ठमय, मजबूत तथा गाठीच्या जागी जाडसर.

पान - पिंपळाच्या पानाप्रमाणे चौडे, अंडाकार हृदयाकृति, लंबाग्र, प्राय: 7 शिरांनी युक्त, चिकण, जाडसर, 2.5 सेमी लांब पर्णवृन्ताने जोडलेले.

पुष्प - अवृन्त, काण्डज (स्पाईक), पुष्पव्युह

फळ - जवळपास 5 सेमी लांब, मांसल, लटकणारे, छोटे-छोटे फळ.पानांमधून विशिष्ट सुगंध येतो तसेच त्याचा स्वाद काही उष्ण व सुगंधयुक्त असतो.

उत्पत्तीस्थान :

भारतात (बिहार, बंगाल, उडीसा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र), श्रीलंका व मलयद्वीप येथे उष्ण व आद्रर्प्रदेशी शेती केली जाते. याच्या शेतामध्ये मध्यभागाची जमिन उंच व किनाऱ्याची उतरती असते. त्यामुळे शेतामध्ये पाणी साचत नाही. तसेच ऊन व हवेपासून वेलींचे संरक्षणासाठी नेटशेडही शेतामध्ये लावलेले असतात. शेतामध्ये ठिकठिकाणी बांबू रोवून वेलींना चढण्याची सोय केलेली असते.

उपयुक्तां- पत्र (पान - मुख्यत:), तैल, फळ

गुण- रस -कषाय, कटु

विपाक -कटु

वीर्य - उष्ण

मुख्य गुण - उत्तम दीपन (भूख वाढविणारे), पाचन (पचन करणारे), श्लेष्मघ्न (कफाचा नाश करणारे), वातहर (वातघ्न), पित्तप्रकोपक, उष्ण, स्वर्य (स्वरासाठी चांगले), सुगंधित, शोथघ्न (सूजेचा नाश करणारे), व्रणरोपक (जखम भरून काढणारे), प्रतिदूषक (antibiotic), कृमिघ्न (जंताचा नाश करणारे), वृष्य (कामोत्तेजक), मुखातील कंडू-मल-क्लेद, दुर्गंधीनाशक.

कर्म व उपयोग :

शिरशूल (डोकेदुखी) - डोक्यावर याच्या पानांचा रस लावल्यास किंवा पान डोक्यावर बांधल्यास शिरशूल शांत होतो.

कास (खोकला) - पानांचा रस मधाबरोबर दिल्यास खोकला कमी होतो.

पीनस (जुनाट सर्दी) - प्रतिश्याय (सर्दी), लहान मुलांचा खोकला यामध्ये नागवेलीचे पान गरम करून एरंड तेल लावून छातीवर बांधल्यास लाभ होतो. तसेच नागवेलीचे पान कुटून मधासोबत सेवन केल्यास रूग्णास आराम मिळतो.

मुखरोग - सुपारी, चुना, काथ, वेलचि, बडीशेप आदि द्रव्य पानात ठेवून त्यांचा विडा बनवून मुखशुद्धीसाठी याचा वापर होतो. तसेच नागवेलीच्या पानांना वाटून त्यांचा लेप दातांवर ठेवल्यास दंतमूलगत शूल शोथ (सूज) आदिंचे शमन होते शिवाय मुखदुर्गंधीचाही नाश होतो.

पचनासंबंधीचे आजार – आध्मान (पोटफुगी), आनाह (पोटात गुडगुड होणे, गॅसेस) नागवेलीचे पान किंवा विड्याच्या सेवनाने स्टार्च व पिष्टमय पदार्थांच्या पचनाला सहाय्य होते. तसेच पान खाल्ल्याने लालास्त्रावाची वृद्धी होऊन पाचन सुधारते. भात खाणाऱ्यांमध्ये याचा विशेष लाभ होतो. जर त्यांनी पान खाणे मध्येच बंद केले तर पचन व्यवस्थित होत नाही.

पानाचे वृष्य गुणधर्म:

ज्यांना पान खाण्याचे व्यसन असते त्यांना पान खाल्याने बरे वाटते, मन प्रसन्न होते, थकवा दूर होतो, तहान, भूक लागत नाही. तसेच काही अंशी कामोत्तेजना होते. म्हणून भोजनानंतर, स्नानानंतर, वमनानंतर (उल्टी नंतर) पान खाण्याचे विधान आहे.

कफप्रधान रोग, तमकश्वास (दमा), श्वसनिका शोथ (श्वासनलिकेला सूज), स्वरयंत्र शोथ (स्वरयंत्राला सूज) यामध्ये पानांचा रस प्यायला देतात व वरून बांधतात.

रोहिणी, (Diptheria- घटसर्प) नामक लहान मुलांच्या गळ्याच्या आजारामध्ये या पानांचा रस गरम पाण्यासोबत एकत्र करून गुळणे करायला सांगतात.

गांठ, शोथ (सूज) - व्रणावर याचे पाने गरम करून बांधल्याने सूज व वेदना कमी होतात. तसेच व्रण लवकर बरा होतो. याच प्रकारे स्तनांवर बांधल्याने दुध थांबते व सूजही कमी

होते. पानाच्या रसात थोडा चूना टाकून सूजेवर पोटलीच्या रूपाने त्याचा उपयोग करतात.

मात्रा (Dose) - 5-10 मिली.

रासायनिक संगठन :

विड्याच्या पानामध्ये एक सुगंधित तैल (0.2-1.0%), स्टार्च, शर्करा, टॅनिन, डायास्टेस (Diastase 0.8-1.8%) हे पदार्थ असतात. याचे तेल हलक्या पिवळ्या रंगाचे, सुगंधित स्वादामध्ये तीक्ष्ण व दाहकारक असते. याच्या तेलामध्ये चॅविकॉल (Chavicol) कॅडेनीन (Cadenene), चॅविबेटॉल (Chavibetol), युजेनॉल चे सभाजिक (Isomeride of Eugenol) व सेस्क्विटर्पेन (Sesquiterpene) हे पदार्थ आढळतात. जावा तथा मनिला मध्ये या तेलात फिनॉल (Phenol) ची मात्रा अधिक असते. जुन्या पानांपेक्षा नवीन पानांमध्ये तेल, डायास्टेस, शर्करा अधिक असते. चॅविकॉल हे कार्बोलिक ॲसिडपेक्षा 5 पट अधिक प्रतिदूषक (Antiseptic) असते जे त्याच्या स्वररसामध्ये असते.

विड्याच्या पानात प्रथिने, स्निग्ध पदार्थ, कर्बोदके, खनिज, कॅल्शियम व विटामिन अ (Carotene), विटामिन क (Vit-C), विटामिन ब (thiamine, riboflavin, niacin) आढळतात.

अतिमात्रेत सेवनाने होणारे परिणाम :

अतिमात्रेमध्ये फक्त नागवेलीचे पान खाल्ल्यास विशिष्ट आजार सोडल्यास काहीही हानी होत नाही पण सुपारी, काथ आणि चुना यांच्या सोबत अतिमात्रेत पानाचे सेवन केल्यास पित्त प्रकोपक व्याधी, मूर्च्छा, रक्तपित्त, रूक्षता, कृशता वगैरे त्रास होऊ शकतो. सुपारीमध्ये अर्कीडाईन नामक विषारी पदार्थ असतो म्हणून सुपारी कमी घेणे योग्यच आहे. काथ अतिप्रमाणात घेतल्याने फुफ्फुसाचे आजार होण्याची भिती असते. चुना अति घेतल्यास दात खराब होतात.

पर्णाधिक्ये दीपनी रङ्दात्री पूगाधिक्ये रूक्षदा कृच्छदात्री।
साराधिक्ये खादिरे शोषदात्री चूर्णाधिक्ये पित्तकृत्पूतिगंधा॥ 16

निष्कर्ष :

नागवेलीचे पान तीक्ष्ण, कटु, कषाय असते पण यामध्ये सुपारी, काथ, चुना आणि सुगंधी द्रव्य जसे वेलची, लवंग, बडीशेप, जायफळ, कापूर, पेपरमिंट, कंकोल, खण्डशर्करा (खडीसाखर), चेरी (गोडसर लागण्यासाठी) एकत्र करून खाण्याची पद्धत आहे. ताम्बूल सेवन हे प्राचीन काळापासून प्रचलित असून आजही आधुनिक काळातही विविध प्रकारांनी पान सेवन चालू आहे. यामध्ये जयपुरी पान, बनारसी पान प्रसिद्ध आहे. नागवेलीचे पान औषधी गुणधर्मयुक्त असले तरीही प्रत्येक गोष्टीचे योग्य प्रमाणात व योग्य पदार्थ एकत्र करून खाणे शरीराला लाभदायक ठरते.

संदर्भ :

1) कादम्बरी पूर्वार्ध पृ. 80
2) कादम्बरी पूर्वार्ध पृ. 1024
3) कादम्बरी पूर्वार्ध पृ. 441
4) कादम्बरी पूर्वार्ध पृ. 880
5) कादम्बरी पूर्वार्ध पृ. 932
6) कादम्बरी पूर्वार्ध पृ. 980
7) हर्षचरितम्-चतुर्थ उच्छवास, पृ. 221
8) हर्षचरितम्-सप्तम् उच्छवास, पृ. 419
9) चरकसंहिता पूर्वार्ध, सूत्रस्थान, अध्याय 5, पृ. 92
10) सुश्रुतसंहिता पूर्वार्ध, सूत्रस्थान, अध्याय 46, पृ. 266.
11) अष्टांगहृदय, सूत्रस्थान, अध्याय-2, पृ.28.
12) अष्टांगहृदय, सूत्रस्थान, अध्याय-2, पृ.29
13) भावप्रकाश निघण्टु, पृ. 260.
14) भावप्रकाश निघण्टु, पृ. 260
15) भावप्रकाश निघण्टु, पृ. 260.
16) राजनिघण्टू , श्लोक क्र. 260

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) डॉ. जयशंकरलाल त्रिपाठी-महाकवि श्रीमद्बाणभट्टविरचिता कादम्बरी सविमर्श 'भावबोधिनी'-संस्कृत-हिन्दी व्याख्याद्वयोपेता पूर्वार्ध, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, २०१३.
2) प्रो. कृष्णचंद्र चुनेकर, डॉ. गंगासहाय पाण्डेय-श्रीमद्भावमिश्रप्रणीत: भावप्रकाशनिघण्टु: सविमर्श-हिन्दी व्याख्योपेत: चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी, २०१०.
3) प्रा. वै.य.गो जोशी-चरकसंहिता श्रीचक्रपाणिदत्त विरचित आयुर्वेददीपिका व्याख्या, मराठी भाषांतर आणि यशवंत टीकेसह (खण्ड पहिला), वैद्यमित्र प्रकाशन, पुणे, २००३.

4) कविराज डॉ. अम्बिका दत्तशास्त्री-सुश्रुतसंहिता 'आयुर्वेद तत्त्वसन्दीपिका' – हिन्दी व्याख्या - वैज्ञानिक विमर्श-टिप्पणी सहिता, प्रथम भाग (पूर्वार्ध), चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, २००९.
5) डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी-अष्टाङ्गहृदयम् 'निर्मला'-हिन्दी व्याख्या विशेषवक्तव्यादिभिश्चविभूषितम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, २००९.
6) पं. श्री. जगन्नाथ पाठक: –महाकविबाणभट्टविरचितम् हर्षचरितम् श्री शंकर विरचित 'संकेत'-व्याख्यासहित हिन्दी व्याख्योपेतम्, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, २०१७.

आधार ग्रंथ सूची

1) डॉ. इंद्रदेव त्रिपाठी – राजनिघंटु : - 'द्रव्यगुणप्रकाशिका', हिन्दी व्याख्योपेत:, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, २००२.
2) Dr. S. D. Kamat – Studies on Medicinal Plants & Drugs in Dhanvantari – Nighantu, Published by Chaukhamba Sanskrit Pratishthan, Varanasi, 2011.
3) Websites -
4) https://www.researchgate.net research paper by Subhash Chander Ahuja, 2011, Betel leaf and betel nut in India : History and uses.https://www.1gm.com>Patanjali

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

आत्मनिर्भर भारत योजना की वर्तमान समय में प्रासंगिकता: कोविड-१९ के विशेष संदर्भ में

राहुल पासवान
शोध छात्र स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर दरभंगा
Corresponding author- **राहुल पासवान**
Email- abcrahul2019@gmail.com
DOI-10.5281/zenodo.7694914

सार-संक्षेप:

कोविड-१९ महामारी के कारण उत्पन्न मौजूदा संकट दुनिया के अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है। इसमें विकासशील देशों के साथ-साथ कुछ अत्यधिक विकसित राष्ट्र भी शामिल हैं। भारत जैसे देशों के पास मौजूद आर्थिक संसाधनों की कमी को देखते हुए, विभिन्न क्षेत्रों को मजबूत वित्तीय सहायता प्रदान करने के बारे में सोचना इनके लिए अधिक महत्वपूर्ण था। इसका उद्देश्य देश और उसके नागरिकों को सभी क्षेत्रों में स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाना है। आत्मनिर्भर भारत के पांच स्तंभ- अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढ़ाचा, टेक्नोलॉजी से संचालित तंत्र, जीवंत जनसांख्यिकी और मांग हैं। आत्मनिर्भर भारत देश में अर्थव्यवस्था के विकास के संबंध में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत सरकार द्वारा एक लोकप्रिय वाक्यांश है। इस संदर्भ में, इस शब्द का उपयोग भारत को विश्व अर्थव्यवस्था का एक बड़ा और अधिक शामिल हिस्सा बनाने, कुशल, प्रतिस्पर्धी और लचीला नीतियों का पालन करने, जो इक्विटी को प्रोत्साहित करने, और स्व-उत्पादक होने के संबंध में एक छत्र अवधारणा के रूप में किया जाता है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैश्वीकरण का बहिष्कार नहीं किया जाएगा अपितु दुनिया के विकास में मदद की जाएगी। १२ मई २०२० को, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसका पहले बार सार्वजनिक उल्लेख किया था जब वे कोरोना-वायरस विश्वमहामारी संबंधित एक आर्थिक पैकेज की घोषणा कर रहे थे। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के कल्याण के लिए तथा गरीबों, श्रमिकों और किसानों के लिए अनेक घोषणाएँ की गईं।

परिचय:

भारत में कोरोना वायरस महामारी की पृष्ठभूमि में महामारी प्रेरित लॉकडाउन, और घरेलू अर्थव्यवस्था के विकास में पहले से मौजूद मंदी और महामारी के आर्थिक प्रभाव के कारण सरकार आत्मनिर्भरता के एक अनुकूलित विचार के साथ सामने आई। महामारी ने कई अर्थव्यवस्थाओं को बुरी तरह प्रभावित किया है। स्वास्थ्य के बुनियादी ढ़ांचे के गंभीर रूप से चरमराने की अत्यधिक आशंका ने देशों को औद्योगिक और साथ ही सामाजिक स्तर पर विभिन्न उपायों को लागू करने के लिए प्रेरित किया है ताकि महामारी को नियंत्रित किया जा सके या विनाश को कम किया जा सके। अमेरिका, ब्रिटेन एवं इटली जैसे विकसित देशों तथा भारत, चीन एवं ब्राजील जैसे विकासशील देशों ने इसके परिणाम देखे है। कई देशों ने महामारी से समाज को होने वाले नुकसान से बचाने के लिए लंबे समय तक लॉकडाउन लागू किया। अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले कई महत्वपूर्ण क्षेत्र लॉकडाउन के कारण प्रभावित हो रहे थे तथा राजस्व के मामले में कोई प्रगति नहीं कर पा रही थी। कुल मिलाकर, अर्थव्यवस्थाओं की स्थिति निराशाजनक हो गई थी। विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों पर विपरीत प्रभाव पड़ा क्योंकि वे इस तरह की मंदी के लिए सबसे अधिक असुरक्षित थे।

भारत दुनिया का दुसरी सबसे अधिक आबादी वाला देश है। यहाँ सीमित वित्तीय संसाधनों के साथ-साथ अपर्याप्त चिकित्सा ढ़ाँचा है। शुरू में ही आर्थिक उथल-पुथल के बीच भारत बहुत कमजोर दिख रहा था, लेकिन भारत सरकार उन क्षेत्रों या उद्योगों को आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए समर्पित थी जो नुकसान सहने के स्थिति में नहीं थे। भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख रूप से प्रभावित क्षेत्रों में स्थानीय विनिर्माण इकाईयाँ, मनोरंजन, शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी, खुदरा एवं विमानन जैसे क्षेत्र शामिल थे। आयात-निर्यात, परिवहन आपूर्ति, श्रृंखलाओं के मामले में प्रतिबंधित व्यवसायिक गतिविधियों और नगण्य या बहुत कम औद्योगिक तथा खुदरा खपत से प्रभावित होने के कारण देश के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम सबसे खराब स्थिति में विभिन्न व्यवसायिक और सामाजिक गतिविधियों पर निरंतर प्रतिबंधों के कारण जब भारतीय अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई थी तो भारत सरकार के लिए देश को मंदी से उबारने के लिए मजबूत आर्थिक राहत और वित्तीय सहायता उपाय करना समय की आवश्यकता थी। इसी बात को देखते हुए १२ मई २०२० को प्रधानमंत्री ने वित मंत्रालय के साथ एक व्यापक समावेशी पैकेज लेकर आए जिसे आत्मनिर्भर भारत अभियान कहा जाता है। विशेष आर्थिक प्रावधानों वाले इस पैकेज का उद्देश्य मजदूरों, कुटीर उद्योगों, मध्यम वर्ग, सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्योगों और अन्य वर्गों के लिए २० लाख करोड़ रूपये तक की सहायता प्रदान करना था। यह देश के सकल घरेलू उत्पाद के लगभग १० प्रतिशत के बराबर है। इसमें स्थानीय उत्पादन पर ध्यान केन्द्रित करना, राष्ट्र को आत्मनिर्भरता के ओर अग्रसर करना और देश की आर्थिक स्थिति में सुधार करना शामिल था।

सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्योगों का सहायता

व्यवसायों और सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्योगों को मौजूदा ऋणों के भुगतान, कच्चा माल की खरीद और व्यवसायिक गकतविधियों को फिर से शुरू करने जैसी मांगों को पुरा करने के लिए अधिक वितपोषण की आवश्यकता होती है। इसका उद्देश्य ऐसे उद्यमों के लिए रियायती ब्याज दरों पर कार्यशील पूंजी के रूप में ३ लाख करोड़ रूपये की राशि प्रदान करना था। इस सुधार की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इस तरह के वितपोषण का लाभ उठाने के लिए व्यवसायों को कोई संपति गिरवी नहीं रखनी पड़ेगी। इस योजना के तहत आपातकालीन ऋण के लिए ४७ लाख से अधिक सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्योगों को वितीय सहायता प्रदान करने का प्रावधान था, इसके अलावा वितीय संकट का समना कर रहे सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्योगों के प्रमोटरों को २० हजार करोड़ तक का ऋण दिया जाएगा। इसके अलावा उभरते हुए उद्यमों को सूचीबद्ध होने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा और लगभग पचास हजार करोड़ रूपये का फंड ऑफ फंड्स की स्थापना की जाएगी। फंडिंग एजेंसियों के लिए तंत्र में आवश्यक विश्वास पैदा करने के लिए प्रयाप्त तरलता होना महत्वपूर्ण है इसलिए इस पैकेज के तहत तरलता जरूरतों पर ध्यान केन्द्रित करने वाली एक विशेष योजना को ध्यान में रखा गया जिसमें सरकार बाजार में ऐसे फंडिंग निकायों के विभिन्न ऋण साधनों में निवेश करके ३० हजार करोड़ तक की सहायता प्रदान करती है।

प्रवासी किसानों और गरीबों की सहायता

लॉकडाउन की घोषणा और परिणामस्वरूप नौकरी छुटने के कारण विभिन्न राज्यों में मजदूरों का भारी पलायन हुआ। हमारे समाज के लिए दिन प्रतिदिन के अस्तित्व का

प्रश्न था। राज्य सरकारों को प्रवासीयों को भोजन, आश्रय और पानी उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार के ११ हजार करोड़ रूपये के योगदान के साथ-साथ राज्य आपदा कार्यवाही कोष के तहत धन का उपयोग करने का निर्देश दिया गया था। इसके बाद उनकी सुरक्षा उपायों के लिए मास्क और सैनिटाइजर भी प्रदान किए गए। इसमें विभिन्न वितीय और गैर वितीय सहायता के अलावा गरीबों के लाभ के लिए उपाय भी शामिल थे। वर्तमान समय में केन्द्र सरकार इन चुनौतियों से निपटने के लिए तथा चीजों को अगले स्तर पर ले जाने के लिए गंभीरता से ध्यान दे रही है। रोजगार को बढ़ावा देने के लिए मनरेगा के लिए आवंटन में ४० हजार करोड़ रूपये की वृद्धि के अलावा क्षेत्रों में कराधान मानदंडों को सरल बनाना संपति के पंजीकरण को आसान बनाना तथा वाणिज्यिक गतिविधियों में तेजी लाना आदि शामिल है। सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्योगों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए तथा दिवालिएपन के लिए कार्यवाही शुरू करने के लिए न्यूनतम सीमा को १ लाख से बढ़ाकर १ करोड़ रूपये कर दिया गया। अर्थव्यवस्था और व्यापार में उत्पन्न संकट को दूर करने के लिए वर्तमान महामारी के मद्देनजर सरकार द्वारा विभिन्न सुधारों की योजना बनाई और कार्यान्वित की जा रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रीय सुरक्षा में आत्मनिर्भरता के लिए रक्षा निर्माण के संबंध में जून २०१४ में आत्मनिर्भरता शब्द का प्रयोग किया था । इसके बाद उन्होंने कई बार नारे का इस्तेमाल किया। अगस्त २०१४ में उन्होंने आत्मनिर्भरता को डिजिटल इंडिया से जोड़ा। सितंबर २०१४ में गरीबों को आत्मनिर्भर बनाने के बारे में बतायें। भारत के योजना आयोग का प्रमुख दस्तावेज, १९५१ से २०१४ तक प्रकाशित बारह पंचवर्षीय योजनाएं है, जिसमें लक्ष्य के रूप में आत्मनिर्भरता शामिल है। पहली दो योजनाओं ने सरकारी नीति में आत्मनिर्भरता की नींव रखी, जिसे आयात-प्रतिस्थापन जैसी अवधारणाओं के माध्यम से लागू किया गया। जब पर्याप्त प्रगति हासिल नहीं हुई, तो योजनाएं आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने पर स्थानांतरित हो गईं। इसका उद्देश्य यह था कि भारत के पास अपनी जरूरत की चीजें खरीदने के लिए पर्याप्त धन होना चाहिए। १९९१ के जून के विपरीत, भारत के पास केवल दो सप्ताह के लिए विदेशी मुद्रा भंडार था। लाइसेंस राज के दौरान इन स्थितियों और प्रथाओं ने आत्मनिर्भरता के लिए नए सिरे से आह्वान किया।

भारत आज पीपीई किट का विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक बन गया है। सीएसआईआर-एनएएल ने ३५ दिनों के भीतर बाईपैप वेण्टिलेटर का विकास किया। वस्त्र समिति (मुम्बई) ने पूर्ण रूप से स्वदेशी डिजाइन और 'मेक इन इण्डिया' वाला पीपीई जाँच उपकरण बनाया। बिजली क्षेत्र में ट्रांसमिशन लाइन टॉवर से लेकर, ट्रांसफार्मर और इन्सुलेटर तक देश में ही बनाने पर जोर दिया गया है। सभी सेवाओं में सरकारी खरीद व अन्य के लिए 'मेक इन इण्डिया' नीति में संशोधन किया गया है। रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता के लिए 'मेक इन इण्डिया,' को बढ़ावा दिया जा रहा है। एक निश्चित समयावधि के भीतर आयात पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए हथियारों / प्लेटफार्मों की एक सूची को अधिसूचित किया जा रहा है। आयातित पुर्जों का स्वदेशीकरण किया जा रहा है और इसके लिए अलग से बजट का प्रावधान किया गया है।

प्रधानमन्त्री स्वनिधि योजना

भारत में कोरोना महामारी से लॉकडाउन के कारण नाई की दुकानें, मोची, पान की दुकानें व कपड़े धोने की दूकानें, रेहड़ी-पटरी वालों की आजीविका पर सबसे ज्यादा असर पड़ा है। इस समस्या को खत्म करने के लिए प्रधानमंत्री के द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत एक नई योजना की घोषणा की है जिसका नाम है पीएम स्वनिधि योजना। इस योजना के अंतर्गत रेहड़ी पटरी वालों को सरकार द्वारा १०,००० रूपये का ऋण मुहैया कराया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत दी जा रही अल्पकालिक सहायता १०,००० रुपया छोटे विक्रेताओं को अपना काम फिर से शुरू करने में सक्षम बनाएंगे। इस योजना के ज़रिये भी आत्मनिर्भर भारत अभियान को गति मिलेगी।

निष्कर्ष:

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा अनेक प्रकार की योजनाओं को शुरू किया गया। जिससे देश की आर्थिक स्थिति को गति मिल सके। आत्मनिर्भर भारत अभियान में सबसे ज्यादा जोर स्वरोजगार पर दिया गया, जिससे सभी लोगों के पास रोजगार हो सके। इसके लिए भारत सरकार द्वारा लोगों को अनेक प्रकार की लोन, तथा सब्सिडी योजनाओं का शुभारम्भ किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने देश की अर्थव्यवस्था को सही रास्ते में लाने के लिए "आत्मनिर्भर भारत अभियान" की शुरुवात की है। जिससे देश के नागरिक आत्मनिर्भर बन कर स्वयं का रोजगार शुरू कर सके और साथ ही दूसरों को भी रोजगार उपलब्ध करा सके। आत्मनिर्भर भारत योजना के अंतर्गत अनेक प्रकार की योजनाएं आती हैं। जिसे आत्मनिर्भर भारत अभियान के नाम से शुरू किया गया है। इस अभियान को शुरू करने के लिए मोदी सरकार द्वारा पहला २० लाख करोड़ रुपए का आर्थिक पैकेज दिया गया। जिसमें आत्मनिर्भर भारत योजना लोन के तहत लोन, किसान क्रेडिट कार्ड, शिशु मुद्रा ऋण, क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी आदि लोन और सब्सिडी तथा अन्य प्रकारी की योजनायें शामिल हैं। आत्मनिर्भर भारत योजना में सबसे ज्यादा ध्यान इंटेंट (इरादा), इन्क्लूजन (समावेशन), इन्वेस्टमेंट (निवेश), इन्फ्रास्ट्रक्चर (बुनियादी ढांचा), इनोवेशन (नवोन्मेष) में दिया जा रहा है। जिससे भारत वैश्विक स्तर पर समृद्ध और संपन्न बन सके।

संदर्भ स्रोत:-

1. दैनिक जागरण, १२ अप्रैल २०२०. पृ०-३.
2. दी टाईम्स ऑफ इंडिया, २४ मई २०२०. पृ०-६.
3. दी हिन्दु, २० जून २०२०. पृ०-२.
4. योजाना, मासिक पत्रिका, दिसम्बर २०२१, पृ०-२५.
5. कुरूक्षेत्र, मासिक पत्रिका, दिसम्बर २०२१, पृ०-१४.

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

साक्षात्कार : एक मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

डॉ. गीता श्रीवास्तव

Department - B.Ed
College - D.S.N. P.G. College, Unnao, Uttar Pradesh
Corresponding author- **डा गीता श्रीवास्तव**
Email- geetasrivastava299@gmail.com

DOI-10.5281/zenodo.7694942

हर साक्षात्कार दूसरे साक्षात्कार से भिन्न होता है- साक्षात्कार देने वाले तथा साक्षात्कार लेने वाले दोनों के लिये। हर साक्षात्कार पूर्व के कई साक्षात्कारों से एकाधिक रूप में अलग-भिन्न होता है। साक्षात्कार के समय अनगिनत ऐसी सावधानियाँ हैं जिन पर काम करके, अन्य कई महत्त्वपूर्ण बातों के अनुसार उपयोगी तथा व्यावहारिक कदम लेकर आप किसी कार्य के लिये दिये जाने वाले साक्षात्कार सफलता प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिये या तो आपको किसी पद के लिये साक्षात्कार का निमंत्रण पत्र मिला है या साक्षात्कार से पूर्व आपसे कोई अतिरिक्त जानकारी या सूचनाएं चाही गई है। साक्षात्कार के लिये अच्छी तैयारी से आपका आत्मविश्वास बढ़ता है, मन को दिमाग को शांति मिलती है और इन सबसे आपका साक्षात्कार प्रभावित होता है। अब आप अच्छा प्रदर्शन करने की स्थिति में होते हैं। प्रथम स्थान पर, आप साक्षात्कार के सामान्य रूप के बारे में जानिये। आप मान कर चलिये कि कई बार साक्षात्कार के समय आप विषम या अवांछनीय स्थिति में हो सकते हैं। फिर आप यह भी मान कर चलिये के जिस प्रकार आपको काम की तत्काल आवश्यकता है उसी भांति नियोक्ता को कर्मचारी की जरूरत है। स्पष्ट है कि चयनमण्डल को पद पर नियुक्ति हेतु सर्वाधिक योग्य व्यक्ति का चयन करना है जिससे नियुक्ति के बाद काम की हानि न हो।

यह तथ्य यह सोचने का अवसर देता है कि नियुक्ति चाहने वाले तथा नियुक्ति देने वाले दोनों का सकारात्मक सोच है। दोनों की सोच दोनों के अपने अपने दृष्टिकोण से उपयोगी है। कई आदमी बार-बार चयन मण्डल में काम करते हुए पारखी बन जाते हैं, वे साक्षात्कार की तकनीक जान लेते है। साक्षात्कार की कोई मात्र एक ही विधि सही हो तथा दूसरी विधि सदैव ही गलत हो, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता। स्थितियों का इस पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि साक्षात्कार की रचना कैसे हुई है? या आरम्भ कैसे हुआ है? महत्वपूर्ण यह है कि आप हर स्थिति में साक्षात्कार को अच्छा से अच्छा मोड़ दे सकें। कारण कि साक्षात्कार एक प्रकार से दो अजनाबियों के बीच बिना पूर्व योजना के परस्पर वार्तालाप है। अब यह वार्तालाप कैसे आगे बढ़ता है? स्पष्ट है कि यह चयन मण्डल के सदस्यों की संख्या जितने रूप ले सकता है। यही कारण है कि कौन सदस्य किस समय क्या प्रश्न पूछ बैठे? यह निश्चय करना शत-प्रतिशत अत्यन्त कठिन है पर आप पूर्व में व्यापक एवं गहन तैयारी कर कुछ सीमा तक विषम स्थिति को टाल सकते हैं। आपको केवल एक ही बात ध्यान में रखना है कि प्रत्येक साक्षात्कार पूर्व के साक्षात्कार से भिन्न होता है तथा वह नया अनुभव देता है, तथा अनोखा या आश्चर्यजनक है, अनूठा या अद्वितीय है।

साक्षात्कार की तैयारी

आज के इस बेकारी के युग में नौकरी के लिये इन्टरव्यू का महत्व स्वयं स्पष्ट है इसका महत्व स्वीकार किया ही जाना चाहिए साक्षात्कार लेने वाले आपकी तैयारी से कार्य में आपकी रुचि एवं सजगता का अनुमान लगा लेते हैं। कार्य में रुचि तथा ठोस तैयारी आपको नये पुराने तथा प्रश्न के अनुसार उत्तर देने के लिये सहायता पहुंचाती है किसी भी काम के लिये चयन मण्डल आपको सर्वाधिक अच्छा प्रत्याशी पायें. इसके लिये जरूरी है कि आप अपने आप के बारे में पूरी जानकारी, प्रबल पक्ष तथा कमजोरियां सही रूप में जानें न केवल इतना ही बल्कि जो काम आपसे करने की अपेक्षा है या जो काम आपको करना है उसके प्रत्येक अंग के बारे में, प्रत्येक बारीकी को भी जाने। अच्छा यह होगा कि आप कम्पनी, संस्थान, फर्म तथा क्षेत्र की भी जानकारी रखें। कुछ अंशों में प्रश्नों में आपकी योग्यताओं तथा कुशलताओं की दृष्टि से काम खोजना कठिन है पर आप आरम्भ में सामान्य कुशलताओं का विकास कर अपने को काम के सामान्य पक्ष के लिये तैयार कर सकते हैं।

स्वयं को जानना

कई लोग बिना सोचे समझे यह विश्वास पाले रहते हैं कि वे अपने बारे में पूरी जानकारी रखते हैं तथा साक्षात्कार की दृष्टि से अब उन्हें अपने बारे में अधिक सोच विचार करने के लिए समय तथा प्रयत्न नहीं गंवाने चाहिए। आप किस कार्य के लिये उपयुक्त हैं- इस पर सोच विचार करना महत्वपूर्ण है तथा महत्वपूर्ण यह भी है कि किस प्रकार आपने अपने को उस विशिष्ट कार्य के लिए तैयार किया है। या उस काम को स्वीकार कर पूर्व के अनुमानों से लाभ उठा सकते हैं। आप अपने बारे में सोचिये तथा निम्नलिखिति बिन्दुओं पर भी ध्यान केन्द्रित कीजिये : लम्बे समय का अनुभव तथा एकदम नया प्रत्याशी रुचि कार्य, आपकी योग्यताओं तथा शारीरिक क्षमताएं, जिनका आप कार्य करने के समय प्रायः उपयोग करेंगे, कुशलतायें जिनका आप विकास कर सकें या विधि प्रक्रिया तथा कार्यक्रमों में सुधार कर सकें तथा वे नियोंग्यताऐं जिन्हें कार्य सम्पन्नता के समय आप दूर कर सकें। आपको अपनी दिनचर्या, मूल्य निर्धारण, जीवन क्रम पारिश्रमिक, संगी साथी तथा पर्यावरण जिसके बीच आपको काम करना है- आदि पर भी विचार करना है, प्राथमिकतायें तय करनी हैं। आज की जीविका, शैक्षिक उद्देश्य, पिछला अनुभव आदि पर भी आपको विचार करना है। किसी भी कार्य को स्वीकार करने या न करने में इन बातों का महत्वपूर्ण स्थान है। महत्वपूर्ण यह भी है कि इन अनुभवों से आपने क्या सीखा? तथा सीख कर आप अपने में कितना परिवर्तन करने को तैयार है? इनमें अनुभव, स्वतंत्रता, शैक्षिक उपलब्धि, रुचि, कलात्मकता या सौंदर्य बोध, यात्रा या पर्यटन आदि बातों पर विचार किया जा सकता है। मूल बात यह है कि सोचने का क्षेत्र व्यापक-विस्तृत बनाइये।

संगठन या संस्थान के बारे में जानना

जिस संगठन में आपको काम करना है उसकी पूरी जानकारी रखिये, फर्म के बारे में पढ़िये । उस संगठन सम्बन्धी साहित्य पुस्तकालय में मिल सकता है, यदि वहां उपलब्ध न हो तो संगठन या फर्म से मंगाया जा सकता है। इस कार्य में उनके वार्षिक प्रतिवेदन भी मदद कर सकते है।

जिस पद के लिये आपको साक्षात्कार देना है, प्रयत्न कीजिये कि उस पद के विशिष्ट कार्य तथा उत्तरदायित्वों को पूर्ण रूप से आप जान लें यह जानना भी लाभदायक रहेगा कि सम्पूर्ण संगठन में उस पद विशेष की क्या स्थिति है? विचार कीजिये कि कम्पनी या संगठन या फर्म की सफलता में आपके पद की क्या भूमिका है? योगदान बनता है? किस प्रकार आपकी पृष्ठभूमि, आपकी रुचियां, आपका ज्ञान संगठन की सफलता में उसकी प्रगति में मदद कर सकता है। इन्हीं सब बातों पर आपका चयन निर्भर करेगा।

प्रथम प्रभाव

कई चयन मण्डल के सदस्य स्वीकार करते है तथा अनुसंधान के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ है कि वे प्रत्याशी से साक्षात्कार की भेंट के समय प्रारम्भ के ४-५ मिनिट के समय में ही उसके चयन या निरस्त करने का अनुमान ही नहीं लगा लेते है बल्कि लगभग निश्चय भी कर लेते है। इससे स्पष्ट है कि

प्रथम प्रभाव का ही चयन में वर्चस्व रहता है। विश्वास एवं दृढ़ता के साथ सामान्य सहज गतिविधि, अंग-चालन, गतिशील पर स्थिर आंख से सम्पर्क, उचित समय पर मुस्कराहट, सही आसन अपने को सहज स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करना तथा आत्मविश्वास के साथ प्रश्नोत्तर, वार्तालाप तथा व्यवहार आदि का महत्व कौन नहीं जानता? यही सब साक्षात्कार के समय विजयश्री दिलाते हैं।

आप चयन मण्डल पर अनुकूल प्रभाव डालें- इसके लिये जरूरी है कि आप साक्षात्कार स्थल पर समय से पूर्व पहुंचे। यदि आप रास्ते की भीड़ के लिए निश्चित नहीं है तो घर से काफी समय पूर्व ही चल सकते हैं, स्कूटर या मोटर साइकिल कहां खड़ा करेंगे- यह चिंता हो सकती है। यदि आप बस से चल कर साक्षात्कार स्थल को पहुंचने वाले हैं तो रास्तें में बदली जाने वाली बसों तथा उनमें लगने वाले समय को भी ध्यान में आपको रखना है आप साफ सुथरी तथा पद के अनुरूप पोशाक का ध्यान तो सदैव रखेंगे ही। इसके विपरीत स्थिति में अच्छा से अच्छा साक्षात्कार होने पर भी सम्भव है आपका नाम चयनित अभ्यर्थियों की सूची में न हो। उदाहरण के लिये उपयुक्त ढंग से सिले बहुत तंग कपड़े पहनकर यदि कोई व्याख्याता या प्रधानाध्यापक के पद का साक्षात्कार दे तो निश्चय ही उसे निराशा ही हाथ लगेगी। तंग कपड़े मशीनों पर काम करने वालों के लिये उपयुक्त हो सकते हैं। साक्षात्कार से एक दो दिन पहले ही निश्चय कर लीजिये कि आप क्या पोशाक पहनेंगे? इस दृष्टि से इस्तरी की हुई-साफ सुथरी धुली पोशाक का आप ध्यान रखेंगे।

किसी पद के लिये साक्षात्कार देते समय पोशाक का निर्धारण करना एक कठिन एवं जोखिम भरा काम है। पर सही निर्णय के लिये उस धंधे में लगे अधिकांश लोगों की पोशाक देखकर निश्चय किया जा सकता है। पुरुष तथा महिलाओं को परम्परागत पोशाक सामान्य रंग की ही चुनना चाहिए तथा पहननी भी चाहिए कुछ नये सृजनात्मक क्षेत्रों के लिये आप सर्वथा लीक से हटकर आधुनिक या परम्परागत पोशाक चुनने के लिए स्वतंत्र हो सकते हैं। यहां भी कई विशेषज्ञों के अनुसार परम्परागत पोशाक ही सकारात्मक प्रभाव डालती है। लाभ दिलाती है। इसलिये जिस प्रकार की हवा हो, उसके अनुसार ही पोशाक पहनना उपयुक्त रहता हैं यदि बाल लम्बे हैं तो ठीक से जमें। महिलाओं की स्थिति में वेणी गुंथी हुई हो, या ऐसी व्यवस्था हो कि बाल पीछे पीठ पर ही हों। असाधारण लम्बे बाल होने की स्थिति में भी वे पीछे ही रहे। पुरुष भद्दी दिखने वाली टाई न बांधे तथा महिलायें चयन मण्डल के सदस्यों का ध्यान खींचने वाली ज्वेलरी या गहने आभूषण न पहनें, भयंकर, तेज सुगन्ध देने वाले सेंट या इत्र आदि का प्रयोग न करें, इन्हें घर पर ही छोड़ दें, इनसे सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः इनसे बचना चाहिए।

मुख्य साक्षात्कार

पीढ़ियों से सुस्थापित यह परम्परा आज भी अच्छी मानी जाती है कि आप चयन मण्डल के सदस्य बनकर अपना साक्षात्कार स्वयं ले लीजिये। प्रत्याशियों को यह कठिनाई हो सकती है यह जानकर वे दुविधा में हो सकते हैं कि वे अन्य प्रत्याशियों के समान नहीं हैं। यदि आपको काम मिल जाता है तो अपना पूर्ण रूप से व्यापक रूप से आत्म परीक्षण कर लीजिये, दूसरों की स्थिति में रह कर सोचिये, अब आप जो निष्कर्ष निकाल रहे हैं. अब जो आपका वास्तविक रूप सामने आ रहा है उससे आप तथा आपके नियोक्ता दोनों, बहुत सम्भव है आश्चर्य कर रहे हों। जब आप अपने बारे में सोचते हैं तो अपना सर्वाधिक अच्छा रूप सामने रखिये या यह बात याद रखिये। साक्षात्कार, समय की वह छोटी अवधि है जिसमें आपको अपना प्रभाव डालना है आपका यह प्रयत्न होना चाहिए कि चयन मण्डल के सदस्य आपके बारे में सकारात्मक राय बनाये, वे आपकी बातचीत, पोशाक, व्यवहार से प्रभावित हो। प्रयत्न कीजिये कि आप अपना सकारात्मक पक्ष अपने लक्षण तथा गुणों को सामने लाने का कोई अवसर न छोड़ें एवं नकारात्मक पक्ष या हानि पहुंचाने वाले पक्ष को सामने न आने दें यह प्रयत्न जरूरी है प्रसन्नतावर्धक बातों को सामने लायें, प्रकट होने दे न कि सन्देहपूर्ण या अधूरी बातें या जानकारियां प्रस्तुत करें- यह सावधानी तो रखनी ही है।

इसमें कोई दो राय नहीं है या इस तथ्य से कोई इन्कार नहीं करता कि अधिकांश अभ्यार्थियों के अनुभव या उनकी राय नकारात्मक है। (कारण स्पष्ट है कि एक पद के लिए ४०-४० गुणा अधिक अभ्यर्थी होते हैं, चयन तो किसी एक का होना है तथा शेष को निरस्त घोषित होना है।) कारण कि साक्षात्कार तो कुछ ही मिनट चलता है, मुख्य बातों तक कई बार चयनकर्ता पहुंचते ही नहीं है, उनका निर्णय अनिश्चित होता है, मुख्य बातों पर चयन मण्डल के सदस्य बात ही नहीं करते हैं। सकारात्मक तथ्यों को सामने लाकर उन पर चयन मण्डल का ध्यान केन्द्रित कर पूरे साक्षात्कार को ही आप अपने पक्ष में अनुकूल मोड़ दे सकते हैं यह तकनीक या सावधानी आपको सीखनी ही चाहिए। उदाहरण के लिये यदि आपको पूछा जाय कि अपनी किसी असफल या नकारात्मक या कमजोर या अवांछित घटना का वर्णन करिये तो आपका प्रयत्न होना चाहिए कि आपका उत्तर असाधारण रूप से, बेजोड़ तरीके से प्रसन्नता दायक एवं अनुकूल टिप्पणी से समाप्त हो आपको ऐसा करने में कठिनाई हो सकती है पर उस घटना से आपने क्या पाठ सीखा- इस टिप्पणी से आप अपना आशावादी एवं सकारात्मक पक्ष उजागर या प्रस्तुत कर सकते हैं। उस स्थिति में आपने कैसे विकास किया, कैसे उस कठिन स्थिति से उबरे या आप अपनी निर्योग्यताओं पर कमजोरियों पर कैसे विजय पाई या सुधार किया। आप असफलता का वर्णन करते हुये यह भी बता सकते है कि किस भांति आगे चलकर आपने उसे सफलता में बदल दिया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कई बार कमजोरी पर निरन्तर काम करके उसे सम्भव बना दिया जाता है। इस प्रकार के इन प्रयत्नों से स्पष्ट होगा कि आप सकारात्मक सोच या विचार धारा के व्यक्ति है, आपने भविष्य को सही रूप से समझने की क्षमता है। आप दूरदर्शी दृष्टिकोण के धनी व्यक्ति हैं। इसी प्रकार के सब प्रयत्नों से चयन मण्डल के सदस्य आपसे प्रभावित हो सकते हैं।

कई बार न चाहते हुए भी नकारात्मक बात कहनी पड़ती है। यदि ऐसी स्थिति आ जाय तो उसे संक्षेप में कहिये, जल्दी कहिये, कम से कम शब्दों में कहिये तथा प्रयत्न कीजिए कि शीघ्र ही पुनः सकारात्मक पक्ष पर आ जायें। कई बार चयनकर्ता जानबूझकर आपको ऐसी स्थिति में लाते हैं- पर आपका प्रयत्न यह होना चाहिए कि आप सावधानी से इन स्थितियों से बचकर बाहर निकल आयें। नकारात्मक पक्ष या विषय पर बातचीत का सहज तथा सरल मुद्दा कई बार पिछला नियोजक या अधिकारी बनाया जाता है या फिर बिना रुचि की बात चीत भी इसी प्रकार का उदाहरण है। आप जो भी कह रहे है या जो भी मूल्यांकन या सिद्धान्त आप प्रस्तुत कर रहे है, वह ठीक है- सही है, औचित्यपूर्ण है पर आपका प्रयत्न यह हो कि आप इस प्रकार के वार्तालाप या प्रस्तुतिकरण से बच सकें तथा अन्य दूसरी बात करें। आपकी बातचीत, प्रस्तुतीकरण या वार्तालाप से यह संदेश नहीं जाना चाहिए कि आप नकारात्मक या ध्वंसात्मक सोच के व्यक्ति हैं। यदि कभी ऐसी स्थिति बनती या आती भी है तो प्रयत्न कीजिये कि जैसे आप भविष्य में होने वाले किसी सम्भावित घटनावृत्त का संकेत कर रहे हैं या ऐसा निश्चय करने का आपका मन नहीं है या सम्भव है भविष्य में ऐसा शायद ही कभी घट सके। किसी बात पर दृढ़ता से चिपक भी न जाइये. सुविचार बातें या विकल्प दिमाग में रखिये जिन पर आप सावधानीपूर्वक चयन मण्डल के सदस्यों को वार्तालाप के लिये ला सके।

कुछ वैयक्तिक गुण या चातुर्य ऐसे हो सकते हैं जो काम करते करते अनुभव से सीखे जा सकते हैं। जिनके आधार पर काम का निष्पादन सुचारू रूप से सरलतापूर्वक करने का आप भरोसा दिला सकते हैं। किसी विशेष पद के साक्षात्कार के समय ये बिन्दु क्या हो सकते हैं। यह आप समय से पूर्व सोच विचार कर निश्चय कर लीजिये। ऐसा यदि आप कर लेते हैं तो साक्षात्कार के समय आप वार्तालाप को मोड़ देने में सहजता

अनुभव करेंगे। अपने पिछले जीवन की एक दो घटनायें या उदाहरण भी जो साक्षात्कार से सम्बन्धित हो तथा मदद कर सके, दिमाग में बिठा लीजिये जिनका समय पर उपयोग किया जा सके। ये घटनायें यदि ऐसी हो जो आपके उत्तरों की पुष्टि कर सके तो सोने में सुहागा है। हर प्रत्याशी द्वारा कही जाने वाली सामान्य बातों से बचिये- ये बातें अच्छ प्रभाव नहीं छोड़ती हैं। ये कमजोरियां मानी जाती है, इनसे बचिये किसी बिन्दु को स्पष्ट करने के लिये या उसकी पुष्टि करने के लिए विशिष्ट उदाहरण दीजिए विशिष्ट तर्क भी प्रस्तुत कीजिये। यदि आप किसी दल के साथ साक्षात्कार दे रहे हैं जिन्हें अपने क्षेत्र का सीधा अनुभव नहीं है या बहुत कम अनुभव है तो उत्साह का महत्वपूर्ण ही नहीं अपितु निर्णायक प्रभाव हो सकता है। यदि आप किसी पद के लिये उत्साही नहीं है तो उस पद के लिये रुचि नहीं बता सकते, उसमें रुचि बताना आपका बहाना बनाना सिद्ध होगा क्योंकि चयनकर्ता पूरक प्रश्नों से यह जान लेते हैं। यदि आप सही रूप से उत्साही हैं, काम करने के लिये उत्साही हैं तो उसे बताने से न डरिये प्रयत्न कीजिये कि उस पद या काम के प्रति आपका सही रूप चयन मण्डल के सम्मुख आ सके। यदि नियोक्ता द्वारा चाही गई चतुराइयों, गुणों, योग्यताओं, अनुभवों या कुशलताओं के बारे में आप स्वयं स्पष्ट नहीं हैं, पशोपेश या असमंजस की स्थिति में हैं तो आप एक क्षण के लिये अपने को नियोक्ता के रूप में रखकर सोचिये तथा निश्चित कीजिये कि आपको कैसा आदमी चाहिए या कैसा आदमी चुनना है अब आप अपने विवरण पर फिर से विचार कीजिये तथा आवेदन पत्र की समीक्षा भी कीजिये तथा अपने पिछले जीवन पर उसकी घटनाओं पर विचार कीजिये, अपने को ऐसी घटनाओं तथा विचारों पर केन्द्रित कीजिये, जो आपकी गतिशीलता, समायोजन, सृजनात्मकता, नमनीयत पहल, नेतृत्व, उत्तरदायित्व, दूरदर्शिता, त्वरित निर्णयन क्षमता की परिचायक हो। ये सामान्य गुण हैं जिन्हें नियोजक हर प्रत्याशी में पाना चाहता है। आप अपने गुणों, उपलब्धियों, प्रगति तथा उन्नति के बारे में भी बता सकते हैं। उदाहरण से अपने उत्तरों को रोचक बना सकते है।

उत्तर देने के पूर्व आप सहजता अनुभव कीजिये, जितना जरूरी हो सोचने में समय लगाइये तथा स्वतंत्र सहज होकर उत्तर दीजिये। खास करके तब, जब कि आपका उत्तर चिन्तन प्रधान हो। आप द्वारा दस सेकेण्ड सोचने के लिये लेना सामान्य बात है, इसमें कोई हानि नहीं है. इतना समय लेना चयन मण्डल स्वीकार करता है, खोजपूर्ण उत्तर देने के पूर्व इतना समय लेना चयन मण्डल की दृष्टि से कोई अनुचित कार्य नहीं है। कुछ प्रश्न ऐसे अवश्य ही पूछे जाते हैं कि उत्तर देने वाला उत्तेजित हो जाय तथा ऐसे समय में सही उत्तर देने की अपेक्षा अन्य उत्तर देने का खतरा लेना ही होता है। यदि ऐसा लगे कि आपने गलती कर दी है या लगे कि कुछ नहीं कही जाने वाली बात कह दी है तो इसके लिये सीधा स्पष्ट कह सकते हैं और माफी मांगी जा सकती है। इस स्थिति में माफी मांगना कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालेगा वरन् स्पष्ट वादिता के लिये आपके साहस की प्रशंसा भी हो सकती है।

यदि आपका साक्षात्कार ऐसे स्थान पर हो रहा है जहां चयनकर्ता एक न होकर चयन मण्डल या कई सदस्य हैं तो आप उत्तर देते समय मुंह इस प्रकार रखिये कि सबको सम्बोधन हो जाये या आप चयन मण्डल के सभी सदस्यों की ओर संकेत करके उत्तर दें- चाहे प्रश्न किसी एक ही सदस्य द्वारा पूछा गया हो या इन्टरव्यू के समय अधिकांश प्रश्न एक ही सदस्य पूछ रहा हो या एक के बाद दूसरा सदस्य पूरक या वैकल्पिक प्रश्न पूछ रहा हो। व्यावहारिक दृष्टिकोण से यह उचित है कि आप प्रत्येक सदस्य से आंख का सम्पर्क बनाये रखें, यही शालीनता कहलाती है, भिन्न शब्दों में इसे व्यावसायिक नैतिकता कह सकते हैं। अपने विषय में कोई सूचना पहुंचाना आपका उत्तरदायित्व है। इसका क्या तरीका उपयुक्त होगा? यह आपको निश्चित करना है। साक्षात्कार लेने वाले का यह कार्य नहीं है कि वह आपको खोद खोद कर प्रश्न पूछ कर सूचना या उत्तर प्राप्त करे। जब चयन मण्डल के सदस्य कोई प्रश्न आप पर छोड़ दे अर्थात् यदि वे कहें कि आपको कुछ पूछना है या आपको कोई सूचना लेनी है तो समझिये कि यह कहना साक्षात्कार की समाप्ति का सूचक है। अब गेंद आपके पाले में है। अब तक यदि कोई महत्वपूर्ण बात रह गई है या आप बता नहीं पाये हैं. तो उस पर नम्रतापूर्वक बातचीत कीजिये- पहल तो आपको ही करनी होगी। अब आपको कहना चाहिए- श्रीमन् इसके पूर्व कि मैं कोई प्रश्न पूछूं या सन्देह आपके सामने प्रस्तुत करूं या रखूं कुछ बिन्दु ऐसे हैं जो मैं आपके सामने स्पष्ट करना चाहता हूं। ऐसा करके प्रश्न पूछने के बजाय आप सदस्यों से स्पष्टकीरण प्राप्त कर लेंगे ऐसा करके आप प्रश्न पूछने से बच जायेंगे। यदि ऐसा हो सका तो चयन मण्डल पर आपका अनोखा प्रभाव पड़ेगा, चयन मण्डल सकारात्मक राय बना लेगा जो आपके चयन में मदद करेगी।

यदि आपने साक्षात्कार की पूरी तैयारी की है तो शायद ही कोई ऐसा प्रश्न हो जिसका उत्तर देने के लिये आप तैयार न हो अर्थात् बहुत कम अवसर ऐसे हों कि आप उत्तर न दे सकें। वैसे तो परीक्षा के नाम से ही घबराहट होती है, पसीना छूटता है, इसलिये साक्षात्कार के समय मायूस होना अस्वाभाविक नहीं है आपका प्रयत्न तो यह होना चाहिए कि अनावश्यक मायूसी को पास न फटकने दें। ऐसा करने के लिये पूरी तैयारी आवश्यक है। रात्रि की अच्छी पूरी तथा गहरी नींद, प्रातःकाल का स्वास्थ्यप्रद एवं पौष्टिक नाश्ता तथा साक्षात्कार स्थल तक पहुंचने के लिये पर्याप्त समय आप को सहज रख सकता है। यह सब मायूसी या उदासीनता पास नहीं फटकने देगा। याद रखिये- सहज होना आदर्श कहा जा सकता है जबकि प्रक्रिया सहज स्वाभाविक रूप में चल पड़ती है। यदि आपने इन्टरव्यू को सहज रूप में लिया, पूरी तैयारी के साथ चयन मण्डल के सम्मुख प्रस्तुत हुए, आपने आत्मविश्वास का संदेश दिया, शक्ति का सकारात्मक रूप से उपयोग किया तो साक्षात्कार में आपकी विजय श्री निश्चित है।

साक्षात्कार लेने वालों द्वारा साधारणतः पूछे जाने वाले प्रश्नों पर भी आपको सजग रहना है। नीचे दिये गये प्रश्न साधारणतया हर इन्टरव्यू में पूछे जा सकते हैं। आपको इनके उत्तर दिमाग में रखने हैं जो चयन मण्डल पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकें। प्रश्न है-

- अपने बारे में कुछ कहिए आपके मित्र आपके बारे में क्या सोचते हैं? वे कैसी राय रखते हैं?
- इस पद के लिये अन्य प्रत्याशियों से आप कैसे भिन्न या विशिष्ट है?
- इस पद पर आपको ही क्यों चुना जाए। अपने जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सफलता का वर्णन कीजिये।
- अपने सबल पक्ष के बारे में बताइये।
- किन गुणों या विशिष्टताओं के कारण आपको इस पद के लिये चुना जाय?
- उस घटना का वर्णन कीजिये जिसने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया हो।
- पाठ्यक्रम के अतिरिक्त गतिविधियों में आपकी क्या भूमिका रही है। आप किन-किन में भाग लेते थे?
- क्या कभी आप ग्रीष्मावकाश में कार्य करते रहे हैं?
- उस कार्य या गतिविधि के बारे में बताइये जिसने आपके रोजगार चयन को सर्वाधिक प्रभावित किया हो।
- आपकी रोजगार सम्बन्धी प्राथमिकताएं क्या है?
- क्या आप रोजगार के साथ साथ पढ़ना भी चाहते हैं?
- आपकी शैक्षिक योजनाएं क्या है? आप कहां तक पढ़ना चाहते है?
- आज से ८-१० वर्ष बाद आप क्या बनना चाहेंगे? आपके दूरगामी उद्देश्य क्या है?
- आप इसी क्षेत्र में क्यों काम करना चाहते हैं?
- इस कम्पनी या फर्म या संगठन के बारे में आप क्यों रुचिशील हैं?

- आपके औद्योगिक जगत की सामान्य/प्रमुख समस्यायें क्या है?
- आज के औद्योगिक क्षेत्र के प्रमुख विचारणीय मुद्दे क्या है?
- क्या आप इस क्षेत्र के काम में सफल होने की सोचते हैं?
- आप अपने को अन्य किन-किन व्यवसायों/क्षेत्रों के लिये उपयुक्त मानते हैं?
- किस प्रकार के वातावरण में आप सर्वाधिक अच्छ काम कर सकते हैं?
- कार्य की संस्कृति से आप क्या समझते हैं?
- आप किस प्रकार के या किन लोगों के साथ काम करना पसंद करते हैं?
- किस प्रकार का काम या उत्तरदायित्व आपको सबसे अधिक प्रोत्साहित करते हैं?
- आप किसे आदर्श मानते हैं? आपकी क्या कोई भौगोलिक क्षेत्र सम्बन्धी प्राथमिकतायें हैं?
- आप अपने पिछ्ले कार्य के अनुभव बताइये। पिछ्ले कार्य से आपने क्या करना सीखा? बताइये।
- पिछ्ले कार्य का कौन सा बिन्दु या भाग आपको पूर्णतः नापसंद था?
- किसी भी कम्पनी/फर्म/संगठन/कार्य का कौन सा हिस्सा आप नही करना चाहते? या आपकी सबसे कम पसंदगी है?
- आपकी सबसे बड़ी कमजोरी क्या है?
- क्या कभी किसी काम में आप असफल भी हुए हैं?
- आपके सामने सबसे बड़ी चुनौती क्या है? फुरसत के समय में आप क्या काम करना पसंद करते हैं?
- आप अवकाश कैसे/किस प्रकार बिताना चाहते है।
- इन दिनों आपने ताजा क्या पढ़ा है?
- क्या आप पढ़ने में आनन्द अनुभव करते है? आदि-आदि।

भूमिका निर्वहन के प्रश्न

कई साक्षात्कार लेने वाले आपको भूमिका निर्वहन के लिये पूछ्ते हैं वे कहते हैं कि मान लीजिए- आप शिक्षा निदेशक हैं तथा क्षेत्रीय कार्यकर्ता या अधिकारी, शैक्षिक स्तर के ह्रास की समस्या को आपके सामने रखते हैं- आप क्या करेंगे या क्या कदम सुधार के लिये लेंगे? मान लीजिये आप बिक्री निदेशक है। तथा क्षेत्रीय कार्यकर्ता समस्या उधार बिक्री की या पुरानी उधार बिक्री वस्तुओं की राशि प्राप्त न हो सकने की समस्या लेकर आपके सामने आते हैं तो आप क्या कदम लेंगे? इन स्थितियों में आपकी भूमिकाएं अनन्त हो सकती है और जो उत्तर आप देंगे, वही सही होगा। आपका उत्तर तर्क पर आधारित होना चाहिए। उत्तर देने के पूर्व आप तनिक समय सोचने के लिये ले सकते हैं। ऐसा होना स्वाभाविक है। आपको ऐसे प्रश्नों के लिये तैयार रहना चाहिए।

उद्योग पर आधारित प्रश्न

कई बार बहुत छोटे या नीचे के पदों पर भर्ती के समय साक्षात्कार लेने वाले विषय के प्रारम्भिक ज्ञान का स्तर या गहराई जानना चाहते हैं। उदाहरण के लिये- वे पूछ सकते हैं कि व्यावसायिक बैंक तथा भूमि विकास बैंक में क्या अन्तर है? या वाणिज्यिक बैंक तथा विनियोग बैंक में अन्तर बताइये या सामान्य बैंक तथा अग्रणी बैंक का अन्तर स्पष्ट कीजिये ।

यदि आपने इन कतिपय बातों, सुझावों एवं सावधानियों पर ध्यान दिया, तैयारी की तो निश्चय ही साक्षात्कार में आप सफलता प्राप्त करेंगे।

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

बिहार के सिवान जिले में पंचायती राज व्यवस्था के सामाजिक भागीदारी :-

डॉ० मो० शाहब उद्दीन[1], इंजमालउल अहमद अंसारी[2]

1हैड एण्ड डिपार्टमेंट, राजनीती विज्ञान रिसर्च स्कॉलर ,एसोसिएट प्रोफ़ेसर जगजीवन कॉलेज आरा वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा भोजपुर बिहार

2शोधार्थी S/o फुल ग्राम:- गम्भीरपुर टोला महुआभूषा पो०:- मिर्जापुर थाना:- नौतन

Corresponding author- **डॉ० मो० शाहब उद्दीन**

Email-inzamam.htw@gmail.com

DOI-10.5281/zenodo.7694955

भूमिका :-पंचायती राज का अर्थ है कि 5 लोगों की एक परिषद भारत में 2/3 जनसंख्या गांव में निवास करती है महात्मा गांधी ने गांव को एक छोटा उप राज्य का स्थापना किया भारत में प्राचीन काल से ही पंचायती राज व्यवस्था अस्तित्व में रही है समाज का जगउधार अभी भी ग्राम पंचायत ही है भारत में पंचायती राज्य व्यवस्था में ग्राम तहसील तालुका जिला आते हैं पंचायती राज राज्य के भूमि में सम्मिलित है ब्रिटिश शासन काल में स्थानीय स्वायत शासन प्रथम प्रयास 1882 में वायसराय लार्ड रियन ने किया था 1907 में सही आयोग का गठन उसके बाद 1920 में संयुक्त प्रोत, असन बंगाल बिहार मद्रास के दौरान भी संघ ससस्त् लोगों के लिए पंचायती राज की व्यवस्था की गई भारतीय राजनीतिक प्रणाली का अभिन्न अंग पंचायती राज हैं इसका उद्देश्य सत्ता का विकेंद्रीकरण सबसे निचले पाददान की प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित करना है राज्य के गति निर्देशक सिद्धांत के अनुच्छेद 40 में 29 तत्व को राजीव को ग्राम पंचायतों को स्वशासन के रूप में देखा गया है बलवंत राय मेहता समिति और कार्य में रयाली में सुधार के लिए सुधा सुझाव देने के लिए किया गया संविधान के 73वें संशोधन द्वारा पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा दिया गया है 11वी अनुसूचित जोड़ी गई जोड़ी गई जो पंचायतों की कार्यप्रणाली से संबंधित है अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति और महिलाओं के लिए रिजर्व की गई आरक्षण बिहार में अनिवार्य प्रधान के अलावे पिछड़े वर्ग से संबंधित आरक्षण को लागू किया गया है बिहार एक ऐसा राज्य है जो कि महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत की आरक्षण को सुनिश्चित करता हैबिहार के राजनीतिक व्यवहार में 2004 से अलग तरह का रोचक बन गया है और यह जनकल्याणकारी साबित हुआ है जिससे कि एक से बढ़कर एक जन भागीदारी देखने को मिला सिवान जिले के धरती से पंचायती राज्य से निकल कर संसद तक की उपलब्धि हासिल किया है हर बार की तरह इस बार भी 2021 में काफी पंचायती राज की चुनाव में उथल-पुथल देखने को मिला है यहां तक कि सिवान जिला के लोगों में अपराधी छवि के आवेदक को दर किंग कर करती चली आ गई है जिससे बिहार की राजनीति में सुधार की गुंजाइश देखने को मिला है एक आम आदमी की सपना पंचायती अस्थान से भागीदारी निभाने में सहायक साबित हुआ है

संविधान में पंचायतों के लिए तीन स्तरीय प्रणाली की परिकल्पना की गई है पंचायत राज भारत में प्रशासन की मूल इकाई जिसमें तीन स्तर शामिल है

पंचायती राज

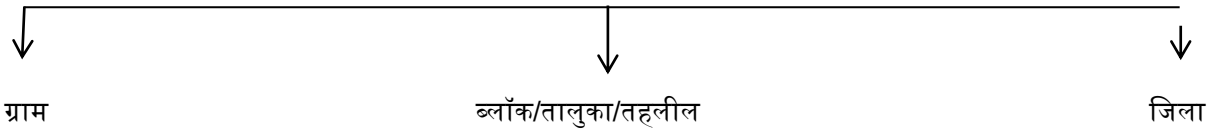

एक या एक से अधिक भाव के लिए पंचायत समिति जिला पंचायत पंचायत प्रतिनिधि के द्वारा विधान परिषद को चुनने का अधिकार प्राप्त होता है जो कि अपने राज्य सिवान जिला की भागीदारी ने परस्पर समर्थन करता है हम यह पाते हैं कि अपने पंचायती राज की अपेक्षाओं को खड़ी-खड़ी उतरने की बाध्य होता है बिहार के राजनीतिक परिवर्तन करने की क्षमता होता है अतः बिहार की राजनीति में हाल-फिलहाल में विधान परिषद के चुनाव में सिवान के राजद कैंडिडेट **विनोद विनोद अग्रवाल और निर्दलीय कैंडिडेट आयूब खान बड़ी टक्कर** चुनाव देखने को मिला और चुनाव परिणाम विनोद जायसवाल के पक्ष में आया जो कि पंचायत राज चुनाव अधिक सक्रिय परिणाम देख देखने को मिला जिससे कि राजनेताओं के करीबी एवं रिश्तेदार भी पंचायती चुनाव में हिस्से लेने की कोई कसर नहीं छोड़ते हैं।

संदर्भ:- पंचायती राज का मतलब यह है कि सामाजिक उत्थान एवं सत्ता के विकेंद्रीकरण को मुख्य धारा में लाना है। सिवान की धरती पर पंचायती राज विकास का मिसाल पेश किया है गली नली पक्की सड़क नाला रोजगार शिक्षा आर्थिक समाजिक जाति लिंग के भेदभाव से प्रेरित पर्चा से मुक्ति मिल

रहा है । अतः जन कल्याण के लिए धनिक उपलब्धि हासिल कर रहा। पंचायती राज में रवि करण को देखते हुए पेड़ पौधों में किया गया उपायों को नीचे अस्तर से लागू किया गया पंचायत के जनभागीदारी का उपलब्धि को निभाने की

क्षमता रखता है पंचायती राज के प्रतिनिधियों को सरकार द्वारा संज्ञान में दिया गया कार्य बहुत ही जटिल तरीके से निर्वहन करता है ।

सिवान की सामाजिक भागीदारी :-सिवान जिला के तत्पर किया गया कार्य की संभवत धरातल पर देखने को मिलता है जहां भी ग्रामीण क्षेत्रों में किए गए योजनाओं की समीक्षा स्वत: प्रथम मिलता है (1) नल जल हरियाली (2) स्वस्थ्य (3) प्रौद्योगिकी (4) टेक्नोलॉजी (5) इंटरनेट पंचायत के द्वारा आजमाया गया है तो अब नेट की प्रवृत्ति को तेज गति दिया गया है गांव गांव को जोड़ने की कार्य किया जा रहा है केंद्र सरकार के द्वारा आदर्श ग्राम बनाने महत्वपूर्ण कदम उठाया पंचायतों में से एक पंचायत जीरादेई पंचायती राज को आदर्श ग्राम बनाने की निश्चय किया गया और बिहार सरकार के तरफ से सात निश्चय से सिवान जिला को विकास का धारा में तबदील हो

गयापंचायती राज और मनरेगा में सामाजिक परिवर्तन :- पंचायती राज मनरेगा की 2 फरवरी 2006 से 200 जिलों में लागू किया गया तथा बाद में 01 अप्रैल 2008 से इसे समूचे भारत में लागू कर दिया गया|

(1) एक योजना नहीं अभीतु एक अधिनियम के मध्य एक महत्वपूर्ण अंतर है की योजना को समाप्त किया जा सकता है लेकिन अधिनियमसामान्यतः स्थाई होता है

(2) मनरेगा के माध्यम से संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में वर्णित कार्य के अधिकार को कानूनी रूप प्रदान किया गया है। मनरेगा के द्वारा ग्रामीण निवासियों को वर्ष में कम से कम 100 दिन का रोजगार अनिवार्य रूप से दिया जाता है।

(3) महिलाओं को ऑल निर्भर बनाने के लिए सूक्ष्म लघु उद्योग में भागीदारी है

(4) हर घर महिलाओं को परीक्षण अधिगम का व्यवस्था सरकार द्वारा कराया जा रहा है जो कि महिलाओं को कुशल बनाने के लिए माल व्यवस्था कराया जा रहा है। उन्हें प्रशिक्षण देने के बाद उत्पादन में भागीदार समझा जा रहा है

(5) महिलाओं को कौशल विकास का प्रशिक्षण करा रहा है। सबसे अधिक महिलाओं को ऊर्जावान बनाया गया है जो कि आज उनको रेलवे स्टेशनों पर भी सरकार द्वारा स्टाल लगाकर हस्तकरघा से बने सामानों को सीधे ग्राहकों के बीच सके ताकि उनके मेहनत का लाभ उन्हें सीधे-सीधे मिले ना कि बिचौलियों के हाथ में लगे। यहां तक कि बैंकों से उन्हें लोन की व्यवस्था किया जा सके। अलग-अलग तरह से व्यापार के नाम पर लोन की व्यवस्था सरकार द्वारा किया गया। भैंस बकरी कच्चे माल मधुमक्खी पालन मुर्गी अंडे कृषि बगवानी कड़ाई सिलाई कंप्यूटर प्रशिक्षण एवं हस्तलिपि हस्तकरघा का प्रशिक्षित किया गया महिलाओं को जीविकोपार्जन तहत एक मिशन में संगठित होकर फल सब्जी दूध अंडा को उत्पादन में अधिक बल मिला है ।

सिवान जिला पंचायत कर्मी:– भारत के ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्रालय द्वारा भारी मात्रा वित्तीय सहायता प्रदान किए जाने के बावजूद अभी भी पंचायतों के समक्ष वित्तीय समस्या का अभाव है। पंचायतों के पास अपने पदाधिकारी भी नहीं है। सामान्य: अखिल भारतीय सेवक या राज्यों के अधिकारी पंचायतों का प्रशासन करते हैं। अधिकांश राज्यों ने अभी भी विषयों में वीर्यत पंचायती राज्य की शक्तियों के उन्हें नहीं सौंपा है।

समाज का वित्तीय समाधान :– समाज को निर्भर बनाने के लिए सरकारी बैंक नाबार्ड, महिला बैंक एवं ग्रामीण बैंकों का संगठित किया जा चुका है। कृषि कर्मी कोई ऐसा बाधा ना आ सके जिसका निर्धारण सीधे-सीधे किया जाए परंतु सामाजिक उत्पादन के लिए विभिन्न विभिन्न योजनाओं का प्रस्तुत किया जाता है। अपने-अपने अपेक्षाओं को संतुष्ट करने के लिए सरकारी बैंकों का सहारा लेने हैं।

ग्राम पंचायतों के कार्यों को प्रभावी बनाने के लिए समिति:-

(1) विकास समिति:— इसका मूल कार्य कृषि, ग्रामीण उद्योग एवं ग्रामीण विकास योजनाओं का निर्माण करना है।

(2) शिक्षा समिति:– इसके द्वारा ग्राम पंचायतों शैक्षिक कार्यों का प्रबंध करती है। तथा 73वें संविधान संशोधन के बाद प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों पर ग्राम पंचायतों का नियंत्रण स्थापित कर दिया गया है। जिसके द्वारा ग्राम पंचायतों प्राथमिक शिक्षा में भोजन प्रबंध से लेकर छात्रवृत्ति के अवंतन तक विद्यालयों के कार्यों की निगरानी करती है।

(3) लोहित समिति:– इसके द्वारा जन स्वास्थ्य एवं ग्रामीण कार्यों से संबंधित कार्यों या मामलों की देखभाल की जाती है।

(4) समता समिति:– इसके द्वारा महिलाओं बच्चों, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, पिछड़े वर्गो, के लोगों के कल्याण के लिए कार्य संपादित होते हैं।

बिहार के 11 जनता को देखकर योजना का क्रिमयावयम किया जाता है। यद्यपि जनता के हर तपके के लिए योजना का प्रचार प्रसार किया जाता है कि ऐसा कोई लोग वंचित ना रहे। और बिहार के विकास व अभी सरकार के द्वारा योजना को प्रदर्शित करने के लिए संस्कृति वातावरण, रेडियो, टीवी, पेड़ न्यूज़, अखबार एवं पत्रिका के माध्यम से सामाजिक उत्थान के भांति पहुंचाया जा सके बिहार सरकार ने अपेक्षा करके समाज सुधार के लिए प्रत्येक जिले में जाकर लोगों के बीच उत्थान के कार्य कर रहे हैं। शिक्षा का माहौल 2003 में शिक्षामित्र की बहाली करके बिहार की शिक्षा में जान फूंक दीया और उसके बाद फिर 2007 में सरकार ने फिर एक बार सरकार ने बहाली को दोहराया जिससे समाज में काफी हद तक महिलाओं को चौकन से बाहर निकालने को मजबूर किया बिहार के शिक्षा स्तर में दर व दर वृद्धि किया आज के दौर में समाज शिक्षा की ललक और सोच को आधुनिक स्तर पर पहुंचा दिया है यहां तक की बिहार की लड़कियों को कमाने की एवं सेवा देने का अवसर प्राप्त हुआ बिहार की चौमुखी विकास के लिए हर संभव प्रयास रहा। बिहार के पंचायतों में 2006 में महिला आरक्षण प्राप्त हुआ बिहार की राजनीति में जागता–जियता महिलाओं को अधिकार प्राप्त हुआ आर्थिक, सामाजिक एवं विकास कार्य को

उत्सुकता में जान फूंक दिया बिहार में सत्ता परिवर्तन के पश्चात राजद सरकार ने 13 फरवरी 2006 को एक अध्यादेश जारी कर बिहार पंचायती राज्य अधिनियम 1973 के विभिन्न प्रधानों को रूप से संशोधित किया। इस अध्यादेश के तहत एकल पदों यथा मुखिया, सरपंच, प्रमुख तथा जिला परिषद के अध्यक्ष हे तू भी आरक्षण का प्रावधान किया गया। 2001 के पंचायती राज के विभिन्न संस्थाओं के चुनाव में इन एकल पदों आरक्षण व्यवस्थापन पटना उच्च न्यायालय ने रोक लगा दी।इससे संबंधित प्रावधानों को असंवैधानिक घोषित कर दिया था, परंतु बाद में उत्तर प्रदेश तथा झारखंड के उच्च न्यायालय हो ने संबंधित राज्यों के पंचायती राज अधिनियम की व्यवस्था करते हुए एकल पदों हेतु आरक्षण के प्रावधानों को सर्वथा संवैधानिक करार दिया।

निष्कर्ष:– प्रथम दृश्यता से हम देख पाते हैं कि पंचायती राज कपूर एवं सफल विकास के लिए सीधे-सीधे बड़ी सदस्य के हस्तक्षेप होना चाहिए ताकि सफल रुप से योजनाओं का क्रियावयन किया जा सके। और गारंटी होनी चाहिए समिति समय के लिए उपलब्ध का करार होना चाहिए कि भ्रष्टाचार से मुक्ति मिल सके। इसी राह पर शिक्षा स्वास्थ्य कृषि रोजगार न्याय वन एवं पशुपालन की व्यवस्था को प्राथमिक स्तर से विस्तार होना चाहिए पंचायत समिति को किया गया कार्य को पदाधिकारी को अवगत कराना होगा। इसी आधार पर पंचायत का समीक्षा मुखिया को जिला पदाधिकारी को प्रस्तुत करना होगा और समस्या को समापन की कार्य किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(1) पंचायती राज्य व्यवस्था एवं ग्राम विकास, पो० चंद्रिका उकानी रावत प्रकाशन नई दिल्ली 2015
(2) भारतीय स्थानीय स्वशासन चेतकर झा –डॉ० परमेश्वर झा० प्रकाशन –नोवाल्टी एंड कम्पनी – 2011
(3) दैनिक जागरण समाचार पत्र
(4) हिन्दुस्तान सामाचार पत्र
(5) प्रभात सामाचार पत्र
(6) बिहार पंचायती राज का वेबसाईट
(7) यूतुब चौनल
(8) पंचायती राज विकामीडीया
(9) सोसल मिडिया
(10) विहार एक परिश्य- इम्तियाज अहमद रजनीश कुमार
(11) योजना पत्रिका
(12) सामाज एवं कल्याण बिभाग होम पेज

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

घरेलू हिंसा का समाज पर पड़ता दुष्प्रभाव

डॉ० निखिल कुमार

राजनीति विज्ञान, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आर बिहार

Corresponding author- **डॉ० निखिल कुमार**

Email-Nikhilnit325@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7694968

सारांश:-

दुनिया के हर समाज में महिलाओं के ऊपर घरेलू हिंसा होता रहा है। घरेलू हिंसा में घर में रहने वाले लोग ही महिला के ऊपर अनेक प्रकार से हिंसा करते है। महिलाओं के ऊपर केवल शारीरिक शोषण ही हिंसा नहीं है बल्कि भावनात्मक शोषण, मनोवैज्ञानिक दुव्र्यवहार या वंचतिता, आर्थिक शोषण, गाली-गलौज, ताना मारना आदि शामिल है[1] अर्थात् चारदीवारी के भीतर होने वाली हर हिंसा घरेलू हिंसा की श्रेणी में आती है। दो लोगों के बीच जब प्यार, सम्मान और सहानुभूति की भावना समाप्त होकर नफरत और क्रूरता में तब्दील हो जाती है तो वो घरेलू हिंसा बन जाती है। घरेलू हिंसा न केवल विकासशील या अल्प विकसित देशों की समस्या है बल्कि यह विकसित देशों में भी बहुत प्रचलित है। ये शारीरिक, सेक्सुअल और व्यवहारिक तीनो ही तरह की हो सकती है।

कीबोर्ड:- हिंसा, घरेलू, शारीरिक, भावना, समस्या, पीड़ित, महिला

घरेलू हिंसा का प्रभाव:-

घरेलू हिंसा का सबसे बुरा पहलू यह है कि इससे पीड़ित व्यक्ति मानसिक आघात से वापस नहीं आ पाता है। ऐसे मामलों में अक्सर देखा गया है कि लोग या तो अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं या फिर अवसाद का शिकार हो जाते हैं। घरेलू हिंसा का सबसे व्यापक प्रभाव बच्चों पर पड़ता है।[2] बालक अपने पिता से गुस्सैल व आक्रमक व्यवहार सीखते हैं। बालिकाएँ नकारात्मक व्यवहार सीखती हैं वे प्रायः दब्बू, चुप-चाप रहने वाली या परिस्थितियों से दूर भागने वाली बन जाती है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। आज घर की चारदीवारी में महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों की तीव्रता और उनकी बारम्बारता में काफी तेजी आ गई है। आर्थिक उदारीकरण के इस दौर में महिलाओं को अनेक प्रकार के उत्पीड़न झेलने पड़ते हैं लेकिन इनमें सबसे अधिक भयानक उत्पीड़न बलात्कार ही है। कई बार ऐसा देखा गया है कि महिलाओं खास कर छोटी बच्चियों के साथ घर में रहने वाले लोग ही उसका बलात्कार करते हैं[3] और घर के लोग इज्जत बचाने के खातिर उन महिलाओं या बच्चियों को चुप करा देते हं ै। महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों में बलात्कार एक घिनौना अत्याचार है। यह न केवल महिला की अस्मिता से खिलवाड़ है बल्कि बलात्कारी पीड़िता को समाज अपराधी मानता है वह आत्मग्लानि व लज्जा से भी मर जाती है।

बालात्कार की जो घटनाएँ बढ़ रही है वे देश में सनसनी पैदा करती हैं। बलात्कार न केवल शरीर को नुकसान पहुँचाता है लेकिन गंभीर शारीरिक दर्द भी देता है और मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी पैदा करता है। बलात्कार की शिकार स्त्रियाँ लम्बे या छोटे अन्तराल के लिए चोट सहती है। यदि बलात्कार का शिकार कोई एक बच्ची होती है तो वह नहीं जानती कि उसके साथ क्या हो रहा है। जो कुछ इस उम्र में लड़की के साथ हो रहा है वह बाद में चलकर वयस्क अवस्था में उसके लिये हानिकारक हो सकता है। इस लड़की के साथ जो मनोवैज्ञानिक वेदना होती है वह उसके जीवन काल तक चलती है। यौन शोषण के उपरांत ये महिलाएं यौन बीमारियों एवं अन्य रोगों की शिकार होती है जैसे यौन निष्क्रियता, डिप्रेशन, आत्महत्या की प्रवृत्ति, अपराधभाव, एकांत में रहने का भाव, तनावग्रस्त सम्बन्ध, भावनात्मक घुटन आदि। यौन-शोषण के शिकार महिलाओं का सहज जीवन समाप्त हो जाता है वे समाज में बड़े सहम-सहमकर जीवन व्यतीत करने को मजबूर हो जाते हैं। कई किशोरियों के शरीर में एड्स, एच.आई.वी. के जीवाणु प्रवेश कर जाते हैं। समाज एवं सगे सम्बन्धी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। हमारे समाज में नारी प्रतिपल किस सीमा तक भेदभाव, अन्याय, जुल्म, शोषण, उत्पीड़न की शिकार होती है। उसे सम्मान तो दिखावे के तौर पर कुछ फीसदी लोगों द्वारा ही मिल जाता है। जबकि ग्रामीण अशिक्षित महिलाओं को हर पग पर पुरुषों के अंह का शिकार होना पड़ता है। फिर वह घर हो, परिवार हो, सड़क हो या फिर खेत खलिहान हो, पंचायत हो या मजिस्ट्रेट का चैम्बर हर जगह उसे अपमान, घृणा, जिल्लत का सामना करना पड़ता है और इंसानियत को ताक पर रख हैवानियत से भरे नर-पिशाचों की शैतानी भूख और षडयंत्र का शिकार होना पड़ता है।

आत्महत्या कर लेती है। बहुत से महिलाएँ में हिंनता की भावना घर कर लेती है। हीनता की भावना के कारण मानसिक यातनाओं को झेलती है। कई एक महिलाओं ने हिन्दू-देवी-देवताओं के चित्र और मूर्तियाँ सजाए रखी है एवं सुबह शाम उनकी पूजा करती हैं। इसमें प्रमाणित होता

है कि वह निर्मूल भ्रम जैसे मानसिक रोग का दरवाजा खटखटा चुकी है।

ग्रामीण समाज की महिला मानसिक शोषण का शिकार अपने पति के द्वारा होती है। उनके पति शराबी, जुआरी, सट्टेबाज और वेश्यागामी होना उनके परिवारिक जीवन के अत्यंत क्रूर, उत्पीड़ित नरकीय व भ्रमपूर्ण हो जाने का कारण है। परिवार में कलह रहने के कारण उसे बचपन से ही अपमान, गाली-गलौच, कटुवचन का शिकार होना पड़ता है।

घरेलू हिंसा का एक प्रमुख कारण दहेज को भी माना जा सकता है।[4] आधुनिक हिन्दू समाज में विवाह से सम्बन्धित सबसे कठिन और भयंकर समस्या दहेज की है। कभी-कभी कन्या पक्ष विवाह के बाद भी दहेज की रकम चुकाया करते है। कभी-कभी पूरी रकम न चुकाने पर कन्या को अत्याचार झेलने पड़ते हैं। कभी-कभी उसे पिता के घर वापस भेज दिया जाता है या घर से निकाल दिया जाता है। यह ऐसा होता है कि कन्या पक्ष दहेज के बाकी रकम पूरी करें। दहेज प्रथा एक ऐसी कुप्रथा है जो समाज के चेहरे पर नासूर की भांति चमक रही है और जब दहेज के लिए किसी बहू को परेशान किया जाता है[5], उसे उत्पीड़ित किया जाता है तो यह नासूर जानलेवा साबित होता है। दहेज सम्बन्धी अनेकों ऐसे अपराध है जिनके कारण बहुत-सी महिलाओं का जीवन नर्क बन गया है। अब दहेज प्रथा ने इतनी कुरुप शक्ल अख्तियार कर ली है कि कन्या का जन्म ही अभिशाप माना जाने लगा है। कन्या के जन्म के साथ ही अब उसके मां-बाप उसके विवाह की चिन्ता करने लगते हैं। दहेज प्रथा काफी लम्बे समय से भारतीय समाज को घुन की तरह खाए जा रही है। दहेज प्रथा का सबसे खौफनाक पक्ष यह है कि यदि वर पक्ष को इच्छित रकम नहीं मिलती है तो वह नवविवाहिता पर शारीरिक, मानसिक जुल्म ढाने शुरु कर देता है। नवविवाहिता को तरह-तरह से तंग किया जाता है और उसे मायके से अधिकाधिक दहेज लाने के लिए कहा जाता है, उस पर दबाव डाला जाता है। यदि नवविवाहिता मायके से दहेज लाने से इंकार कर देती है या उसके मायके वाले आर्थिक तंगी के चलते वर पक्ष की पैसों की प्यास नहीं बुझा पाते हैं तो वर-पक्ष का कहर नवविवाहिता पर टूट पड़ता है, उसे तरह-तरह के शारीरिक यातनांए दी जाती है, कई बार तो ऐसा भी होता है कि वधू पक्ष द्वारा मांगे पूरी न की जाने पर नवविवाहिता की हत्या कर दी जाती है। कई बार ऐसा भी होता है कि ससुराल वालों की शारीरिक प्रताड़ना और दुव्र्यवहार से तंग आकर नवविवाहिता भावनात्मक रूप से बिल्कुल टूट जाती है। और अन्ततः मौत का वरण कर लेती है। महिलाओं द्वारा की जाने वाली अधिकतर आत्महत्याओं के पीछे दहेज उत्पीड़न ही एक मात्र कारण होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में सबसे अधिक महिलाऐं दहेज के लिये पति, देवर, सास-ससुर, ननद द्वारा प्रताड़ित होती हैं। आंकड़ों के अनुसार वर पक्ष द्वारा दहेज के लिए निम्नलिखित से नवविवाहिता की हत्या अधिकतर की जाती है

हिंसा के प्रकार:-

1. मिट्टी का तेल आदि छिड़ककर जला देने ,
2. भोजन में जहर मिलाकर,
3. कुंए आदि में धकेल कर,
4. फाँसी लगाकर,
5. पेशेवर हत्यारों द्वारा

6- दहेज के लिए मानसिक रूप से प्रताड़ित करना

दहेज एक कुप्रथा है, सामाजिक समस्या और समाज के साथ-साथ मानवता पर ही कलंक है, बदनुमा दाग है। इसी भावना के प्रेरित होकर भारत के प्रथम प्रधनमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1961 में संसद में एक नियम पारित कराया जो "दहेज प्रतिषेद्य अधिनियम 1961" कहलाया।[6] लेकिन परिणामों में कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं आया। इस दहेज प्रथा के ही कारण कन्या का जन्म होते ही घर वालों को दहेज की चिन्ता हो जाती है। वह इस चिंता से उबरने के लिए कन्या का वध कर देते हैं। आजकल कन्या वध तो नहीं होता परन्तु कन्याओं का भारी तिरस्कार होता है। कन्या पैदा होने का समाचार सुनते ही घर वालों के मुँह लटक जाते हैं। आज समाज में इस दहेज प्रथा के कारण ही लोग लड़की पैदा करना नहीं चाहते। जिसके परिणाम स्वरूप दिन-प्रति-दिन हमारे देश में लड़को के मुकाबले लड़कियों का जन्म अनुपात कम होता जा रहा है।[7] अगर इसी प्रकार लड़कियों का जन्म अनुपात कम होता गया तो भविष्य में समाज के लिए काफी समस्या पैदा हो जाएगी।

माता-पिता की चिन्ता और अपमान से मजबूर होकर अनेक किशोरियाँ आत्महत्या कर लेती हैं। दहेज प्रथा के कारण गरीब माता-पिता बड़ी आयु तक अपनी कन्या के हाथ पीले नहीं कर पाते और कभी-कभी तो वे आजन्म कुंवारी ही रह जाती हैं। इस प्रकार दहेज की प्रथा जहाँ एक ओर धनी परिवार की कुरुप कन्या को अच्छा वर मिल जाता है वहीं दूसरी ओर गरीब परिवार की सुन्दर कन्या बूढ़े कुरुप अथवा अनपढ़ व अधेड़ व्यक्तियों के साथ ब्याह दी जाती है।

महिलाओं में हिंसा के प्रति कमी लाने के लिए दहेज प्रथा को समाप्त किया जाना अति आवश्यक हैं यदि ऐसा नहीं किया गया तो समाज में लड़का-लड़की अनुपात में काफी कमी आ जायेगी। जो आगे चलकर समाज में काफी दुष्प्रभाव डालेगी।

हिंसा का समाधान:-

सरकार द्वारा महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई कानून लाए गए हैं फिर भी अशिक्षा एवं आर्थिक साधन के अभाव में अपनों के द्वारा महिलाओं पर घरेलू हिंसा, दहेज जैसे मानसिक एवं शारीरिक उत्पीड़ा देना अनावश्यक एवं अत्यन्त ही हीनतापूर्वक कार्य हमारे समाज में आज भी हो

रहे हैं जो शोचनीय है। इस अवस्था से उभरने के लिए हमें शिक्षा के साथ, एक समान लैंगिकता का विचार हर कोई में होना चाहिए।[8]

आज देश में नारी सुरक्षा एक चुनौती बनकर रह गयी है सरकार के वो बड़े बड़े दावे इन दुष्ट दानवो के आगे फुस्स होते नजर आ रहे हैं. हर रोज बड़े बड़े नेता बड़ी बड़ी बाते करते हैं और हर रोज इन जघन्य अपराधो के नए नए किस्से सामने आ रहे हैं। क्यों आज हम सब मिलकर नारी को सुरक्षित वातावरण नहीं दे पा रहे? जरा सोचिए यह दोष किसका? आपका? हमारा? समाज का? या फिर उन लड़कियों का?,जो उड़ना चाहती हैं कुछ बनना चाहती हैं. क्यों आज भी कुछ लोग अपनी सीमित सोच के दायरे से बाहर नही आ रहे?.. क्यों आज देश में लड़कियों को बस एक ही नजर से देखा जाता है?. यकीन मानिए इसमें दोष मानवीय सोच का है जो किसी न किसी रूप में लड़कियों की स्वतन्त्रता उनका स्वाभिमान बर्दाश्त नही कर पा रहा, जो इस देश को दीमक कि तरह खाये जा रहा है। आज देश को जरूरत है कट्टरवादी सोच के दायरे से निकालकर वक्त के साथ आगे बढ़ने की. आखिर क्यों सरकार के इतने प्रयासों के बाद भी ये कुकृत्य रुकने का नाम नही ले रहे..एक किस्से पर मरहम भी नहीं लग पाता कि दूसरा किस्सा कालिख लिए हमारे देश की शान पर मलने को तैयार हो जाता है. आज अगर इन बहु बेटियो कि सुरक्षा नही कि गयी तो इस देश में माताओ का पूजा जाना व्यर्थ है क्यों कि जहां नारियो का सम्मान नही होता क्या उस देश में माँ को सम्मान देने में हम कामयाब हो पाएंगे?. आज जरूरत है जन चेतना की इन सब के खिलाफ आवाज उठाने की क्यों की अगर आज हम अपनी जिम्मेदारी न समझ के पीछे हटे तो देश में नारियो का सम्मान वापस ला पाना नामुमकिन हो जायेगा।

यदि हम सही मायनों में ''महिलाओं के विरुद्ध हिंसा से मुक्त भारत'' बनाना चाहते है, तो वक्त आ चुका है कि हमें एक राष्ट्र के रूप में सामूहिक तौर पर इस विषय पर चर्चा करनी चाहिए। एक अच्छा तरीका यह हो सकता है कि हम राष्ट्रव्यापी, अनवरत तथा समृद्ध सामाजिक अभियान की शुरूआत

निष्कर्ष:

जिस देश में स्त्रियों को देवी एवं माता का स्थान प्राप्त उस देश में मां पर हिंसा एक सोचनीय विषय है। फिर भी इन् हिंसाओं को रोक पाने में हम तथा हमारे समाज पीछे छूटते नजर आ रहे हैं। हम यह जान नहीं पाते कि आकाश में थूकने पर वह शरीर पर ही पड़ता है फिर भी लोग आकाश में थूकने पर आतुर है। इसका मूल वजह हमारी सोच है हमारी सोच हमारे आहार से उत्पन्न होता है तथा इसका निर्माण संगति से होता है। तभी तो वैदिक पुराणों में यह मिलता है कि "अहारो शुद्धि आसनों शुद्धि व्यवहारों शुद्धि" इसको यदि हमारे समाज में ईमानदारी पूर्वक लागू किया जाए तो शायद एक अच्छे समाज का निर्माण हो सके और घरेलू हिंसा रुक सके आज के आधुनिक परिदृश्य के बढ़ते व्यापक प्रभाव के कारण मानव मानव में भय सा व्याप्त हो रहा है। लड़के लड़कियां समय की धारा में प्रवाहित हो रही है। मर्यादा का पल्लू उडते चले जा रहे हैं। आइए रिश्तो को जोड़ने एवं निर्वहन करने की संकल्प के साथ शुद्ध एवं स्वस्थ समाज का निर्माण करें तथा चलो चले संयुक्त परिवार की ओर को बढ़ावा दें।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1-दैनिक जागरण समाचार पत्र 12- 8 -2020

2-सरस सलील पत्रिका अंक 12

3-हिंदुस्तान समाचार पत्र दिसंबर 2020

4-वही

5-आरा महिला कॉलेज सेमिनार का अंश

6-दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 का गेट

7-सोशल मीडिया अंश

8-दैनिक भास्कर समाचार पत्र आरा विशेषांक 17 जनवरी 2022

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

बिहार में राजनीतिक दलों का उदय

संयोग लाल

शोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा

Corresponding author- **संयोग लाल**

Email-Sanyoglal8465@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7694977

शोध सारांश:-

हमारे देश में बहुदलीय व्यवस्था है, लोकतांत्रिक प्रणाली में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दालों की अहम भूमिका होती है। समाज में विषमताओं के कारण क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ लेकिन राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों में टकराव की स्थिति बनी रही भले ही दोनों ने एक दूसरे का सहयोग लिया हो, इसके बावजूद राष्ट्रीय दलों की प्रतिक्रिया इस रूप में सामने आती रहती है, जो बताती है कि वे क्षेत्रीय दलों को लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए सही नहीं मानते, वैसे तो हमारे देश में ना केवल राष्ट्रीय दल हैं बल्कि क्षेत्रीय और राज्यस्तरीय दलों की संख्या भी अच्छी खासी है। क्षेत्रीय दलों की बात की जाए तो इसका इतिहास भी पुराना है। पंजाब में 1920 से ही अकाली दल राजनीति में अपना पकड़ बनाये हुए हैं।[1] वहीं यदि बिहार की बात की जाए तो भारतीय स्वतंत्रता की शुरुआत में छोटे-छोटे दलों ने राष्ट्रीय दलों के साथ महत्वपूर्ण भूमिका राष्ट्रीय दलों के साथ मिलकर निभाया और उन्हीं में समाहित हो गया पुनः आजादी के उपरांत आठवीं दशक के बाद पुनः क्षेत्रीय पार्टीयो ने उदय लिया और वर्तमान तक राज्य पर अपनी पकड़ बनायी हुई है।

कीवर्ड:- क्षेत्रिय, पार्टी, गठबंधन, राज्य, बिहार,उदय

परिचय:-

जाति, धर्म एवं क्षेत्र के आधार पर अपने आप को सीमित कर राज्य के शासन व्यवस्था पर अपना पकड़ बनाने हेतु तैयार संगठन जो राज्य स्तरीय चुनाव में भाग लेकर अपने क्षेत्र का नेतृत्व करते हुए विधायिका का अंग बनकर सेवा करने वाले संगठन जो कुछ चुनाव आयोग के मापदंडों को पूरा करे वे राज्य स्तरीय पार्टी के स्वरूप में होती है। हमारे बिहार राज्य में आजादी के उपरांत आठवीं दशक तक क्षेत्रीय पार्टियां राष्ट्रीय पार्टियों की अनुगामी रही है। उसके उपरांत राजभोग कहें या अपने क्षेत्र विशेष की भला के नाम पर क्षेत्रीय दलों ने बिहार की राजनीति में पदार्पण किया और वर्तमान समय तक बनी हुई है। वह भी आज के समय में राष्ट्रीय पार्टियों को अपना अनुगामी बनाकर रखी हुई है। हाल ही के समय में बीजेपी के किसी नेता ने राज्य स्तरीय पार्टियों को राष्ट्र के लिए घातक बताया[2] जिसके बदौलत आज राज्य स्तरीय पार्टियों में कौतूहल का विषय बना हुआ है।

राज्य स्तरीय राजनीतिक दल के मान्यता की शर्तें:-

राजनीतिक दालों को राज्य स्तरीय मान्यता प्राप्त करने के लिए कुछ मानको को पूरा करना पड़ता है, जिसको चुनाव आयोग ने लागू किया है। जिसको निम्न स्वरूप में समझा जा सकता है।

1-विधानसभा के लिए हुए चुनाव में कुल सीटों का 3% या कम से कम तीन सीटें जो भी अधिक प्राप्त किया हो उसके आधार पर उस दल को राज्य स्तरीय राजनीतिक दल की मान्यता प्राप्त होती है।[3]

2-लोकसभा के लिए हुए आम चुनाव दल ने राज्य के लिए निर्धारित प्रत्येक 25 सीटों में 1 सीट पर जीत दर्ज की हो।

3-राज्य में हुए लोकसभा या विधानसभा के चुनाव में दल ने कुल वैध मतों के 6% मत प्राप्त किए हों तथा इसके अतिरिक्त एक लोकसभा सीट या विधानसभा में कुल 2 सीट प्राप्त किया हो।[4]

4-राज्य में लोकसभा या विधानसभा के लिए हुए चुनाव में राजनीतिक दल कुल वैध मतों का 8% मत प्राप्त किए हों।

क्षेत्रीय दलों के उत्पन्न होने के कारण:-

विविधता में एकता ही हमारे देश की विशेषता है जो कि देखने को मिलता है उसमें विभिन्न प्रकार के जात, धर्म, क्षेत्र के लोग निवास करते हैं तथा अपने अपने क्षेत्र की विकास के नाम पर क्षेत्रीय संगठन का रूप बनाकर राज्य सरकार पर दबाव बनाने हेतु या अपना स्वार्थ साधने के लिए क्षेत्र के आधार पर क्षेत्रीय संगठन का निर्माण करते हैं। तथा कुछ लोग अपने जाति को एकत्रित या जातीय विकास के लिए जाति आधारित संगठन तथा धर्म संप्रदाय के नाम पर लोगों को संगठित कर

संगठन तैयार करते हैं मूलतः

रूप से राजनीति में बने रहने हेतु इस प्रकार के संगठन का निर्माण होता है जो सामने देखा जा सकता है।[5]

जाति आधारित क्षेत्रीय पार्टी:-

हमारे बिहार राज्य में कई ऐसे दलों का गठन जाति के आधार पर हुआ। कई नेताओं का उदय एवं पतन भी जाति के आधार पर ही हुआ कारण कि हमारे राज्य में भी कई प्रकार की जातियां निवास करती है।

परिणाम स्वरूप कई नेता जातिगत समर्थन के आधार पर अपने महत्व को बनाए रखने के लिए क्षेत्रीय दलों का निर्माण करते हैं, उदाहरण स्वरूप यादव और मुस्लिमों को संगठित करके राजद का निर्माण हुआ जातियों का इंजीनियर नीतीश कुमार जी ने समता का दामन छोड़ जदयू का गठन किया अपने जाति को आगे बढ़ाने हेतु रामविलास जी ने लोजपा का गठन किया मलाहो को संगठित कर मुकेश साहनी ने तथा मूशहरों को संगठित कर जीतन राम मांझी ने हम पार्टी का निर्माण किया।

क्षेत्रीय दल बनने का भौगोलिक कारण:-

बिहार एक बड़ा राज्य है जो देश में तीसरा स्थान रखता है। आजादी के उपरांत जब राज्यों का गठन पुनः किया गया तो उसमें क्षेत्रवाद अपना प्रमुख स्थान रखा इस भौगोलिक परिस्थितियों के कारण कुछ क्षेत्रों को राज्य के अन्य क्षेत्रों से अलग करने की मांग पर भी क्षेत्रीय दलों का गठन हुआ। उसमें झारखंड मुक्ति मोर्चा भी अपना प्रमुख स्थान रखता है। जिसके विरोध में कभी लालू प्रसाद यादव ने कहा था कि झारखंड हमारे मृत शरीर पर बनेगा लेकिन राजनीति भी अपनी अजीब गुल खिलाती है बिहार में उन्हीं की सत्ता थी उन्हीं के सत्ता में उन्हीं के छांव में 2000 में झारखंड मुक्ति मोर्चा दल का चिर परिचित मांग पूरा हुआ[6] और बिहार से अलग झारखंड एक नया राज्य बना।

क्षेत्रीय दलों के उदय का राजनीतिक कारण:-

राजनेताओं ने भी क्षेत्रीय दलों के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ऐसे कई राजनेता हैं जिनके पास सत्ता नहीं है। वे अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अपने स्वार्थों के लिए क्षेत्रीय भावनाओं का उपयोग करते हुए क्षेत्रीय दलों का निर्माण करते हैं। इसके अलावा राजनीतिक दलों के आंतरिक शक्ति से संघर्ष के कारण पार्टी के नेता अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए क्षेत्रीय भावनाओं का उपयोग करते हैं। समता पार्टी जब अपने उच्चतम शिखर पर था उस समय अपने-अपने महत्वाकांक्षा को प्राप्त करने के लिए उसे तोड़कर जनता दल यूनाइटेड का निर्माण हुआ।

बिहार के राज्य स्तरीय क्षेत्रीय दल:-

बिहार में जन नायक जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति से उत्पन्न लगभग सभी नेताओं ने अपना अपना एक अलग संगठन तैयार किया है, जो बाद में राजनीतिक भागीदारी का अंग बना और आज वही संगठन राज्य स्तरीय पार्टी का स्वरूप धारण कर गई उनमें से कुछ का वर्णन निम्न रूप में किया जा सकता है।

राष्ट्रीय जनता दल:-

राष्ट्रीय जनता दल बिहार ही नहीं अपितु भारत की एक प्रमुख राजनीतिक दल है। जो कि सामाजिक न्याय, पंथनिरपेक्षता, समाजवाद एवं प्रगतिवाद के विचारधारा को लेकर चला और आज से 25 वर्ष पहले इस पार्टी के निर्माण की नींव माननीय लालू प्रसाद यादव की अध्यक्षता में 5 जुलाई 1997 में की गई[7]

जनता दल यूनाइटेड:-

बिहार का प्रमुख राजनीतिक दल जिसको बिहार तथा अरुणाचल प्रदेश में राज्य स्तरीय पार्टी का दर्जा प्राप्त है। पार्टी का गठन 1999 में जनता दल के शरद यादव गुट ने लोक शक्ति पार्टी और समता पार्टी के विलय के बाद हुआ। इसके संस्थापक शरद यादव, जार्ज फर्नांडिस एवं नीतीश कुमार ही है।[8] यदि इसके विचारधारा को समझा जाए तो लेखनी के भाषा में समाजवाद एवं पंथनिरपेक्षता लेकिन हकीकत कुछ और ही ब्यान करता है, क्योंकि बिहार में जातियों का इंजीनियरिंग का ताज इन्हीं के नाम है समाज में समाज को समाज से तोड़ने की प्रवृत्तियों के जन्मदाता भी नीतीश जी के नाम ही अंकित है साथ ही सुशासन बाबू के नाम का भी ताज इन्हीं के सर की सोभा बढ़ाती है। जो आज जनता दल यूनाइटेड की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं इस पार्टी के वयोवृद्ध नेता भी है।

लोक जनशक्ति पार्टी:-

बिहार राज्य का एक प्रमुख राजनैतिक दल जिसकी उत्पत्ति आज से 22 वर्ष पहले 28 नवंबर 2000 को समाजवाद एवं अंबेडकरवादी विचारधारा को लेकर उत्पन्न हुआ[9] इसके उत्पत्ति का श्रेय श्री रामविलास पासवान को जाता है, जो कि जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति की ही उपज है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा:-

इस पार्टी की स्थापना विनोद बिहारी महतो शिबू सोरेन एवं अरुण कुमार राय ने आज से 50 वर्ष पहले 15 नवंबर 1972 को किया।[10] यह पार्टी बिहार झारखंड संयुक्त था उस समय से है। लेकिन 2000 से यह झारखंड की पार्टी है, क्योंकि 2000 में झारखंड बिहार से पृथक राज्य बन गया इस पार्टी का निर्माण क्षेत्रवाद के आधार पर हुआ था।

बिहार की राजनीति में भागीदार क्षेत्रीय पार्टियां:-

बिहार के राजनीति में और भी कुछ क्षेत्रीय पार्टियों की भागीदारी हैं जिनका प्रभाव क्षेत्र के राजनीति पर पड़ता रहता है जो निम्न रूप में है।

1-हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा

2-जन अधिकार पार्टी

3-विकासशील इंसान पार्टी

4-राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी

5- लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास

6-ऑल इंडिया मजलिस ए इत्तेहादुल मुस्लिमीन

7-भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी(मार्क्सवादी लेनिनवादी) लिबरेशन

8-जन अधिकार पार्टी

9-भारतीय जन कांग्रेश

10-बिहार पीपुल्स पार्टी

11-किसान विकास पार्टी

12-अखिल भारतीय फारवर्ड ब्लाक

13-क्रांतिकारी साम्यवादी पार्टी

14-राष्ट्रवादी किसान संगठन

15-समाजवादी क्रांतिकारी सेना

16-संपूर्ण विकास दल

17-राष्ट्रीय जन पार्टी

18-प्लूरल्स पार्टी

20-क्रांतिकारी मुक्ति मोर्चा

निष्कर्ष:-

"आवश्यकता आविष्कार की जननी है" जब हमें किसी क्षेत्र वस्तु एवं अपनी महत्वाकांक्षा की आवश्यकता होती है तब तब किसी अविष्कार की आवश्यकता होती है उसी कड़ी का एक अंग राज्य की क्षेत्रीय पार्टियां जिन की उत्पत्ति आवश्यकता के अनुसार हुई कुछ पहलुओं पर इसकी उत्पत्ति सीमित क्षेत्रों में आवश्यक एवं क्षेत्र विशेष के तौर पर जरूरी सा प्रतीत होता है। लेकिन जहां राष्ट्रीय स्तर पर इसका विचार किया जाए तो अवश्य ही घातक होता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि क्षेत्रीय दलों पर कुछ प्रतिबंधों के साथ कायम रखा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1-सोशल मीडिया का एक लेख का अंश

2-बिहार चैनल दूरदर्शन के डिबेट का अंत

3-दृष्टि आईएएस राज्य स्तरीय राजनीतिक दल पीडीएफ

4-चुनाव आयोग की वेबसाइट

5- दैनिक समाचार पत्र के 20 10 2020 के अंश

6-हिंदुस्तान समाचार पत्र 20 सितंबर 2020

7-राष्ट्रीय जनता दल का वेवसाईट

8-जनता दल यूनाइटेड का वेवसाईट

9-लोक जनशक्ति पार्टी की वेबसाइट

10-झारखंड मुक्ति मोर्चा की वेबसाइट

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

स्वाधीनता आंदोलन और दुष्यंतकुमार का काव्य

डॉ. अर्चना चंद्रकांत पत्की

विभाग प्रमुख, हिंदी विभाग, नूतन महाविद्यालय,सेलू जिल्हा परभणी.

Email:patkiac@gmail.com

DOI-10.5281/zenodo.7695458

'आजादी, स्वतंत्रता' हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। चाहे मनुष्य हो या पशुपक्षी उसे छिन ने का किसी को भी अधिकार नही। हमारे देश को स्वतंत्र करने के लिए कईयौ का बलिदान रहा है। ब्रिटिश साम्राज्य से 1947 तक की बात करेंगे तो हम देखते है कि हमारा देश गुलामी से जुझता रहा है। आजादी को लेकर देश मे व्याप्त उथल-पुथल को हिंदी कवियों ने अपनी कविता का विषय बनाकर साहित्य के क्षेत्र में दोहरे दायित्व का निर्वाहन कर साहित्य को नई दिशा दी है। हिंदी कवियों ने अपने कविता के माध्यम से स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा के लिये राष्ट्रीय चेतना का आधार बनाया। स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ती तक भिन्नभिन्न चरणो मे कविताओ मे राष्ट्रीय भावना ओत-पोत भर दी है। कवी नवीन की कविता से राष्ट्रीय भावना एवं सहज स्पष्ट होती दिखाई देती है। 'कवी कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाये, एक हिलोर इधर से आये एक हिलोर उधर को जाये नाश! नाश! हा महानाश की प्रलयंकारी आख खुल जाये।'

स्वतंत्रता के बाद भारत का शासन कांग्रेस के हाथों में आया। देश के विकास के लिए पंडित नेहरू जी ने औद्योगिक क्रांति का दामन थामा। भारत-पाक युद्ध भारत-चीन युद्ध का परिणाम कांग्रेस नेतृत्व पर हुआ। इंदिरा गांधी के कुशल प्रशासन के कारण परिस्थिति में थोड़ा परिवर्तन हुआ किंतु 1975 के आपातकाल के कारण जन-आक्रोश व्यापक मात्रा में उफन पड़ा। उसी समय संजय गांधी युवा नेता के रूप में सामने आये। किंतु तत्कालिन राजनीति चापलूसी और जी हुजूरी के रूप में ढल गई। आपसी फूट, और असंतोष वश सरकार पूर्णावधि टिक नहीं पाई। आपातकाल के बाद स्वयं कांग्रेस भी विभाजित हो गई और दलबदल की स्थिति बनी रही। कुलमिलाकर स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक परिवेश में बहुत बड़े परिवर्तन हुए। राजनीति भाषावाद, जातिवाद, प्रांतीयता, सांप्रदायिकता, मानवीयता और अराष्ट्रीयता को कांधे पर लिए चलती दिखाई देती थी।

राजनीति में हुए परिवर्तन साठोत्तरी कविता में दिखाई देते हैं। 1960 के बाद में लिखी गई कविता जनसाधारण की अपेक्षाओं को पूरी करती दिखाई देती है। वास्तविकता को आवाहन देकर ठोस परिवेश के निर्माण में कवि निरंतर काव्य लिखने लगे। खोखले प्रजातंत्र और उसके प्रति सजगता, राजनीतिक विडंबना, भ्रष्ट व्यवस्था, अपाहिज कानून, रुपए का बल, धर्मोन्माद, वर्ग-वंश-धर्म और जाति के भेद, सांस्कृतिक पतन, राष्ट्र सम्मान परिवार और व्यक्ति स्तर की टूटन, अधिकार, रिश्तो में कटुता, निराशा कविता का मुख्य विषय रहा। इसी राजनीतिक परिवेश को कई कवियोंने अपने काव्य का मुख्य विषय बनाकर रचनाएं लिखी। इन रचनाओं में प्रमुख रचनाकार दुष्यंत कुमार जिन्होंने अपनी रचनाओं में अपने परिवेश को सजगता, सतर्कता के साथ अपने काव्य में उद्घाटित किया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि युगीन परिस्थितियों की अभिव्यक्ति **दुष्यंत कुमार** के काव्य में स्वाभाविक रूप में हुई है। दुष्यंत कुमार का काव्य मानव और समाज की अवस्था को अभिव्यक्त करती है। युगीन परिस्थितियों को जनसाधारण के जीवन से जुड़े पहलुओं, देश की अस्मिता, मदांध शासन, निरर्थक स्वतंत्रता, झूठे वायदे, बहकते युवक, पड़ोसी देश के आक्रमण, तानाशाही का जनतंत्र आदि को दुष्यंत कुमार ने अपने काव्य द्वारा प्रस्तुत किया है।

देश स्वतंत्र हुआ, देश से जनता को आशा बंधी थी। किंतु कुछ समय पश्चात जनता के सपने टूटे। जनता असमंजस में थी विषम परिस्थितियों के कारण जनता के सामने केवल प्रश्न है, उत्तर कहीं नजर नहीं आ रहा था।

'वे खेत जो सोना उगलते हैं - किसके हैं?
ये खेत जो सूख गए
इनमें क्या बोया गया था?
चारों तरफ पहले और
घिरे हुए लोगों की चीखें
कहां से निकलती है?
मेरे चारों और झोपडो के जाल
और तरह-तरह के सवाल क्यों है?
क्यों किसी भी सवाल का जवाब
मुझे नजर नहीं आता है।'

आजादी के बाद जनसेवा का बाजार तेजी का है। हर क्षेत्र में वेतन के बाद भी कोई दायित्व नहीं निभाता। बच्चे मां-बाप को बोझ समझने लगे। भेड़ों से भी बुरा व्यवहार राजनेता

जनता से करते रहे। राजनेताओं का ऐशो आराम कवि ने 'मंत्री की मैना' में इस तरह चित्रित किया है।

"जनता की सेवा करने के भूखे
सारे दल भेड़ियों से टूटते हैं।
ऐसी-ऐसी बातें
और ऐसे-ऐसे शब्द सामने रखते हैं।
जैसे कुछ नहीं हुआ है
और सब कुछ हो जाएगा।"

देश के विकास के नाम पर केवल लूट मची है। यह लूट लगातार आजादी के बाद भी जनता झेलती रही। जनता भ्रम में जीती रही। बड़ी श्रद्धा से जनता ने राजनेताओं के भाषण और समाचारों को स्वीकार किया था। देश प्रेम एक भावना है वह कोई अभिनय पूर्ण प्रदर्शनी वस्तु नहीं है। देश के रक्षक ही भक्षक बन गए। जनता ने राजनेताओं के घिनौने चेहरे को बेनकाब करने की कोशिश की। किंतु राजनेताओं की स्वार्थी वृत्ति को जनता समझ न सकी। ऐसे ढोंगी राजनेता व्यक्ति पर संकट आते ही माध्यमों को साधन बनाकर देश प्रेम का अभिनय करते हैं। सत्ता की चाह के कारण इन राजनेताओं का समाज और उनकी किसी भी समस्या पर ध्यान न रहा। **दुष्यंत कुमार** नेताओं की क्रियाहीनता के विरुद्ध अपनी असंतुष्टि को प्रखरता से वाणी देते हैं-

'नेताओं।
मुझे माफ करना
जरूर कुछ सुनहरेम स्वप्न होंगे-
जिन्हें मैंने नहीं देखा।
मैंने तो देखा
जो मशालें उठाकर चले थे
वे तिमिर जयी
अंधेरे की कहानियां सुनाने में खो गए
सहारा टटोलते हुए दोनों दशक
ठोकरें खा-खाकर लंगड़े हो गए।
अपंग और अपाहिज बच्चों की तरह नंगे बदन
ठंड में कांपता हुआ एक-एक वर्ष
ऐन मेरी पलकों के नीचे से गुजरा।'

दुष्यंत कुमार केवल असंतोष और आक्रोश पर रुकते नहीं बल्कि जनता को अपनी क्षमता से जागृत होने का आवाहन करते हैं। 'दिग्विजय का अश्व' कविता में दुष्यंत कुमार ने पुरातन कथा के माध्यम से आधुनिक संघर्ष को चित्रित किया है। कृष्ण, अर्जुन का उदाहरण देकर कवी जनता में साहस उत्पन्न करना चाहते हैं। मूल्यों का जो विघटन हुआ है उसे दूर कर उनमें मानवता की खोज कवि ने की है। कवि पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव रहा है। मानवतावादी दृष्टि का प्रभाव दुष्यंत कुमार की कविताओं में दिखाई देता है।

'तुम मुझ को दोषी ठहराओ
मैंने तुम्हारे सुनसान का गला घोटा है
पर मैं गाऊंगा
चाहे इस प्रार्थना सभा में
तुम सब मुझ पर गोलियां चलाओ।
मैं मर जाऊंगा
लेकिन मैं कल फिर जनम लूंगा
कल फिर आऊंगा।'

कवी जीवन में संघर्ष समान मानव मूल्य को लेकर चल रहे हैं। मानवता के लिए संघर्ष की स्वीकृति अकेले करते हैं और उसे निष्ठा, विश्वास और प्रयत्न पूर्वक सामूहिक बनाते हैं।

कवि दुष्यंत कुमार का मानना है कि आज रामराज्य नहीं है। इसलिए आदर्शों की बातों से भी अन्य कई बातें महत्वपूर्ण है। शांति और अहिंसा को कवि अधिक महत्व देते हैं। शांति और अहिंसा को बहुत बड़ी उपलब्धि मानते हैं। घृणा, बेबसी के वातावरण में अहिंसा का गीत कवि गाते हैं-

"मामूली बात नहीं है दोस्तों।
कि आज जब दुनिया शक्ति के मसीहों को पूछती है
लोग घरों में भी तलवारों पर मचल रहे हैं,
हम युद्ध स्थल में
एक मुर्दे को शांति का पैगंबर समझकर
उठाए चल रहे हैं।"

स्वतंत्रता के बाद भी भारत आए दिन छुट-पुट घटनाओं से युद्ध को लगातार झेल रहा है। युद्ध का आतंक संपूर्ण विश्व में फैला हुआ है। रशिया और यूक्रेन युद्ध की बात करें तो स्थिति चिंताजनक है। शांति के लिए अहिंसा की आवश्यकता है। मानवता अहिंसा शांति के स्वर के साथ हमें अस्त्र-शस्त्र क्षमता का परिचय देना होगा तात्पर्य दुष्यंत कुमार के लिए या किसी भी कवि के लिए संसार में असंभव जैसा कोई शब्द नहीं। हर स्थिति में परिवर्तन कर दिखाने की क्षमता मनुष्य में है।

स्वतंत्रता भारत में स्वार्थी, अराजक तत्वों ने लूट के लिए देशभक्ति और जनसेवा का चोला ओढा। जनता के साथ निरंतर राजनीतिक खिलवाड़ होते रही। इसी राजनीतिक व्यवस्था के विरुद्ध दुष्यंत कुमार का स्वर मुखरित होता है। स्वतंत्र्योत्तर भारत में नेतृत्व द्वारा शोषण से पीड़ित और असहाय जनता निराश हुई थी। निराश समाज में आशा पल्लवित करने का कार्य दुष्यंत कुमार के काव्य ने किया।

'वे मुतमइन है कि पत्थर पिघल नहीं सकता,
मैं बेकरार हूं आवाज में असर के लिए।'

कवि दुष्यंतकुमार जनता में खुशहाली उत्पन्न करना चाहते हैं। स्वतंत्र्योत्तर भारत में परिवेश के प्रति सजगता, सतर्कता से परिस्थितियों को संवारनेका का प्रयत्न दुष्यंतकुमार ने किया है। काव्य के माध्यम से मानव नुकुल तथा समाज नुकूल बनाने के लिए कवि परिवेश से प्रभावित है और इसी का परिणाम स्वाधीनता आंदोलन के पश्चात व्यवस्था का स्वर दुष्यंतकुमार के काव्य में निहित है। स्वाधीनता आंदोलन के बाद परिवेश में स्वार्थाधीन, भाषावाद, जातिवाद, प्रांतीयता, सांप्रदायिकता, अमानवीयता और अराष्ट्रीयता को कांधे पर लिए चलते हैं। क्योंकि कवि चाहते हैं स्वतंत्रता के बाद भारत एक विशाल गणतंत्र के रूप में स्थापित हो। देश एक महाशक्ति के रूप में उभरे। कवि कहते हैं-

'सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए'

दुष्यंत कुमार अपने काव्य में काव्य के माध्यम से युगीन स्थिति, व्यवस्था का चित्रण कर जनता में परिवर्तन की लहर देखता चाहते हैं। दुष्यंत कुमार के काव्य में विद्रोह, परिवर्तन चित्रित हुआ है। तात्पर्य जनता के मन की वेदना कवि उद्वेलित करते हैं। यही वेदना एक दिन व्यवस्था के विरुद्ध आगाज होगी, ऐसी कवि को आशा है। कवि सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक, वैयक्तिक मूल्यों के प्रति आस्था रखते दिखाई देते हैं। दुष्यंतकुमार का समग्र काव्य मानवीयता का व्यापक पटल है, ऐसा कहना उचित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. सिंह मानवी, आधुनिक हिंदी काव्य और परंपरा लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. सिंह बनम, दुष्यंत कुमार और नई कविता: एक अनुशीलन साहित्यकार प्रकाशन, जयपुर।
3. डॉ. किशोर, रचनाकार दुष्यंत कुमार - विनय प्रकाशन, कानपुर (2007)
4. देवराज - नई कविता में राष्ट्रीय चेतना - कादंबरी प्रकाशन, दिल्ली।
5. देवराज, भारतीय स्वाधीनता की अर्धशती सृजन, स्वरूप और परंपरा - कादंबरी प्रकाशन, दिल्ली।
6. डॉ रणजीत, हिंदी के प्रगतिशील और समकालीन कवि रत्नालय, कानपूर।

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

मूलमंत्र गायकीचा....!

प्रा. डॉ. अस्मिता नानोटी
संगीत विभाग प्रमुख, अशोक मोहरकर कला व वाणिज्य महाविद्यालय, अड्याळ, ता.—पवनी, जि.—भंडारा
Corresponding author- **प्रा. डॉ. अस्मिता नानोटी**
DOI- 10.5281/zenodo.7701152

प्रस्तावना—

कोणत्याही देशातील कोणतीही व्यक्ती कलेची आवश्यकता, उपयोगिता आणि संमोहनशक्ती याविषयी साशंक नसते. काव्य, गायन, वादन व नृत्य आवडत नाही अशी व्यक्ती अपवादानेच सापडेल. मानवाचे संगीताप्रती स्वाभाविक प्रेम प्रमाणित करते की हे एक नैसर्गिक तत्व आणि प्रक्रिया आहे. संगीताचे प्रमुख ध्येय म्हणजे जनरंजन! गायनाच्या बाबतीत हे जनरंजन दर्जेदार व रसभरीत गायनात घडून आले तर ते निश्चितच स्वानंदाचा आणि परमानंदाचा लाभ करून देण्यास समर्थ ठरते मात्र त्यासाठी सुरेल स्वरपात्राची आवश्यकता आहे. आवाज साधना हाच सुरेल गायकीचा मूलमंत्र आहे!

आवाजाचे महत्व—

'संगीत' हा आनंदाचा ईश्वरीय अविर्भाव आहे. एक श्राव्य आणि सर्व ललित कलांमध्ये श्रेष्ठ दर्जाची ही कला मानवी कंठातून उमटणाऱ्या ध्वनीची एक प्रकट अभिव्यक्ती आहे! सामान्य दर्जाचे गाणे ऐकल्यावर चित्त भरकटते, परंतु प्रभावी आवाज व स्वर ऐकल्यावर मन एकाग्र होते. आजकाल गाणे शिकणे म्हणजे चीजा शिकणे अशी बहुतेक लोकांची समजूत झाली आहे. सप्तस्वर आठ दिवस शिकले की, लागलीच चीजा शिकण्यास प्रारंभ होतो. यामुळे आपल्या निसर्गदत्त आवाजाचे आणि सर्व स्वरांचे आपल्याला आजन्म ज्ञानच होत नाही. मग त्या शिकलेल्या चीजांमध्ये कोणता सूर, स्वर आणि आवाज आहे हे कशावरून समजणार? गायकाच्या आवाजाची नजाकत कशी कळणार? आपल्या आवाजाचा परिचय गायकालाच न झाल्यास त्या ईश्वरीय आनंदाची अनुभूती तो कशी घेणार? आणि श्रोत्यांनाही कशी घडवून देणार? केसरबाईंनी आयुष्यभर संगीताशिवाय दुसरे काहीच केले नाही. आपल्याला संगीत हवे, नाटकात काम करायला हवे, सभेत भाषण करायला ही हवे अशाने गळा कसा काय तयार होणार? आपला आवाज आवश्यक तेवढा रंजक व प्रभावपूर्ण कसा होणार?

चांगला आवाज असणे ही केवळ गायक, अभिनेता किंवा वक्त्यासाठीच आवश्यक असलेली गोष्ट नाही तर ती मानव प्राण्याची नितांत गरज आहे. आवाज हा मानवाच्या व्यक्तीमत्वाचे अभिन्न अंग आहे. बुध्दिमत्ता, चारित्र्य, वाक्पटुता, आकृती, वेशभूषा आणि व्यवहाराप्रमाणे आवाज हा सुध्दा आमच्या व्यक्तीमत्वाला सुशोभित करणारा एक अलंकार आहे. मधुर स्वर मनुष्याला अधिक भव्य, सभ्य? विनित, नम्र तसाच विवेकी बनवतो.

प्रश्न असा पडतो की भारतात कला—पूजाऱ्यांची वानवा नसतांनाही बरेच वर्षांनी एखादाच 'चमत्कारी आवाजाचा गायक' जन्माला येतो! असे कां? या प्रश्नाच्या योग्य उत्तरासाठी आपल्याला स्वामी हरिदास, तानसेन, बैजूबावरा, गोपाल नायक यांच्या सारख्या चमत्कारी गायकांच्या काळातील इतिहासाची पाने चाळावी लागतील. या महान विभूतींच्या जीवनचरित्रांचे अभ्यासपूर्ण मनन, चिंतन करावे लागेल. त्यांच्या चमत्कारिक आवाजाचे तथ्य शोधून काढावे लागेल. या दिग्गजांनी किती दिवस संगीताचे शिक्षण घेतले? किती दिवस आवाज साधना व स्वराभ्यास केला? किती दिवस आणि किती काळ रियाज केला? या महाभागांनी आपल्या जीवनाच्या अध्यकाळातील किती काळ सप्तस्वरांच्या योग्य सुरावटी कंठातून प्रकट होण्यासाठी व्यतीत केला? तर प्राप्त आयुष्यातील किती काळ या स्वरांना सुमधुर करण्यात खर्ची घातला? तेव्हा कुठे, 'धरा—मेरू सब डोलते तानसेनकी तान' या म्हणीचा अर्थ हळुहळु उमगायला लागेल.

आवाजाचा हा चमत्कार म्हणजे काही कांडी फिरविणारी जादू नव्हे तर ती एक परिश्रम साध्य वस्तू आहे. या चमत्काराला कुणीही कर्मनिष्ठ व्यक्ती सहज साध्य करू शकते. जर आपल्याजवळ आवाजाचा चमत्कार नाही तर तो आपण नियम, संयम व रोजच्या स्वराभ्यासाने सहज प्राप्त करू शकतो यात शंका नाही. श्रेष्ठ गायक होण्यासाठी आवाज व स्वरसौंदर्याकडे विशेष लक्ष देणे गरजेचे आहे. काही भाग्यवंतांना जन्मापासूनच आवाजाची देण लाभलेली असते. मात्र अशा व्यक्तींनी निसर्गदत्त स्वरसौंदर्याकडे दुर्लक्ष केल्यास त्यांची ती ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा एकदिवस अंध:कारात विलिन झाल्याशिवाय राहणार नाही. या व्यतिरिक्त जर या भाग्यवंतांनी आपल्या आवाजाच्या सौंदर्याचे रक्षण, जतन व संगोपन शास्त्रशुध्द पध्दतीने केली तर ते निश्चितच सुगंधित सुवर्ण शलाकेसारखे होईल! प्रत्येक गायकाची हीच हार्दीक इच्छा असते की त्याचा आवाज मधुर व चित्तवेधक असावा! मानवी स्वरयंत्राला विकसिक करू शकेल किंवा आवाजाचा पोत सुधारू शकेल असे कोणतेही उपकरण सध्यातरी अस्तित्वात नाही. त्यामुळे युगानुयुगे आवाज साधनेला व स्वरसाधनेला पर्याय नाही!

आवाज साधना—

आवाज कमविणे ही केवळ एक साधना नसून स्वरयंत्रावर हेतुपुरस्सर करण्याचा संस्कार आहे! संगीतात या संस्काराचे एक शास्त्र आहे! या शास्त्राला ''आवाज साधना शास्त्र'' असे संबोधिले जाते! मनुष्याचा आवाज जाडाभरडा, पातळ, कर्कश, विश्रृंखल कसाही असो तो मधुर व आकर्षक बनविल्या जाउ शकतो. हा आवाज साधनाशास्त्राचा मूळ विषय आहे. आवाज साधना शास्त्र हे शरीररचनाशास्त्र, शरीरविज्ञानशास्त्र तसेच ध्वनी भौतिकीशास्त्र या तीनही शास्त्रांवर आधारित आहे आणि शास्त्रीय निकषांवर टिकणारे आहे. हल्ली संगीताच्या आधुनिक व प्रचलित शिक्षण व प्रशिक्षणात या शास्त्राकडे गांभीर्याने पाहिले जात नाही असे दुर्दैवाने म्हणावेसे वाटते. कदाचित आजकालच्या धावपळीच्या आणि कमी कष्टात यशस्वी होण्याच्या राजमार्गाचा अवलंब करण्याच्या हव्यासापोटी ही गल्लत होत असावी असे म्हटल्यास वावगे ठरु नये.

इतर विषयातील अभ्यासप्रमाणेच संगीतात सुध्दा चिकाटी, विश्वास, एकाग्रता, संयम, महेनतीची तयारी, नियीमत सराव अर्थात रियाज आणि शास्त्रशुध्द प्रशिक्षणाची गरज आहे. संगीत ही विद्या गुरुमुखी असल्याने अर्धवट ज्ञानावर व फाजील आत्मविश्वासावर कुणीही गायनाचा प्रयोग केल्यास आवाजाला अनिष्ट वळण लागण्याची शक्यताच अधिक असते. तज्ञ व अनुभवी मार्गदर्शकाकडून या शास्त्राचे धडे गिरविणे हेच उत्तम! या शास्त्राला वयाच्या मर्यादेचे बंधन नसले तरी कंठातील स्वरयंत्राच्या नैसर्गिक मर्यादांचे बंधन निश्चित आहे हे स्वीकारवेच लागते! यशस्वी गायक होण्यासाठी आपल्या नैसर्गिक आवाजातच गाउन, त्यावर संस्कार करून आवाजाचा स्वाभाविक विकास करणे योग्य ठरेल. उत्कृष्ठ गायक होण्यासाठी स्वत:च्या अंगभूत व कंठभूत मर्यादा ओळखून अन्यथा जाणून घेउन त्यांचे पालन करणे हाच उत्तम गायकीचा प्रशस्त मार्ग आहे.

आवाज साधना शास्त्रात कलावंताची प्रतिभा, प्रयास त्याच्या पंचेंन्द्रियांची कार्यक्षमता श्वसनावरील नियंत्रण तसचे मानसीक स्थिती या घटकांचा विचार करण्यात आला आहे. सर्वसाधारणपणे आपल्यालाच आपल्या आवाजाची जाण नसणे, कुणाचे तरी अनुकरण करण्याची चुकीची सवय किंवा हौस असणे, चुकीची पट्टी आणि चुकीचा स्वरोच्चार करणे, श्वासावर यथायोग्य नियंत्रण नसणे, गळ्याला विश्रांती न दिल्यामुळे चुकीचे गायनासन घडणे, स्वरयंत्राचा चुकीच्या पध्दतीने वापर करणे तसेच मानसिक ताणतणाव ही आवाजात दोष निर्माण होण्याची संभाव्य कारणे असू शकतात.

आपल्या स्वर यंत्राची व आवाजाची रचना आपण करू शकत नाही. किंवा बदलू शकत नाही हे जरी खरे असले तरी त्यातील हीण मात्रा निश्चित काढू शकतो. आवाजाच्या पल्ल्यापेक्षा 'नादगुण' महत्वाचा आहे असे हे साधनाशास्त्र सांगते. या शास्त्रामध्ये आवाज निर्मितीसाठी मानेपासून कपाळापर्यंत सहभागी होणाऱ्या सर्व अवयवांसाठी 'स्वरपात्र' ही संकल्पना एकत्रितपणे वापरली जाते. या स्वरपात्रामध्ये स्वरयंत्र, स्नायू, नादगृह, जीभ, तोंड, जबडा इत्यादि अवयव अंतर्भूत आहेत. आपले स्वरपात्र हे सहज स्थितीमध्ये ठेवून त्याचा आकार सांभाळणे, सहजोपचार करणे आणि आकार—उकार—ईकार—एकार इत्यादि स्वरांची वाढ नादगृहामध्ये होउ देणे, त्या त्या स्वरांसाठी तोंड—जबडा व्यवस्थित म्हणजेच प्रमाणबध्द उघडणे या क्रिया आणि या सर्वांची सवय होण्यासाठी विविध आणि विशिष्ट सुरावलींचा अभ्यास अशी प्राथमिक तयारी करणे गरजेचे आहे.

आवाज साफ लागावा यासाठी स्वरसाधना कशी करावी? हयाबद्दल कै. बाळकृष्णबुवा इचलकरंजीकर आपल्या ''दर्पण'' नामक संगीत विषयक मासिकातील ८१ क्रमांकाच्या पृष्ठावर लिहितात, 'स्वरशुध्दी म्हणजे कंठ निर्दोष होउन आवाज साफ लागावा अशा करीता महेनत करण्याची रिती!' कै. केशवराव भोळे यांचे, 'वसंतकाकांची पत्रे' या पुस्तकातील, रियाजाचे महत्व, खर्ज साधना, आकारात आवाज लावण्याचे महत्व, महेनत कशी करावी वगैरे विषयांवरील मांडलेले विचार प्रथितयश गायकांसाठी तसचे प्रशिक्षणार्थ्यांसाठी सुध्दा निश्चितच मोलाचे आहे!

कै. केशवराव म्हणतात, 'गळा ही अशी चीज आहे की जी रोज घासून पुसून साफ ठेवावी लागते त्यात हयगय कामाची नाही. निदान १५ मिनिटे खर्ज भरून पाच सहा पलटे निरनिराळ्या लयीत घोटावे लागतात त्याशिवाय गळा साफ राहायचा नाही. अशा पध्दतीने रोज गळा साफ करूनच त्याच्यावर स्वच्छतेची जिल्हई चढते व त्या जिल्हईत स्वरांचे प्रतिबिंब दिसू लागते. या साफ करण्याच्या महेनतीतच गळ्याच्या स्नायुंना ताण पडून ते मोकळे होतात. त्यामुळेच आवाज मनासारखा वळविण्यास हुकुमत येते. मग म्हणाल ती तान, म्हणाल ती हरकत, गमक, आलाप काढता येतो. ही हुकुमत, हा गळ्यावरील ताबा रोजच्या आवाज साधनेच्या अखंड महेनतीनेच मिळविता येतो. त्या महेनतीला खळ पडताच उपयोगी नाही'. गळा रोज गाता राहिला पाहिजे तरच तो गळा सहज फिरेल, टवटवीत राहील. आपण आपल्या मनाला अशी सवयच लावून घ्यावी लागते. ती लागली की ते मन मग कसलीच सबब शोधत नाही. त्याला महेनत केली नाही तर व्रतभंग होईल अशी टोचणी लागते. आवाजाच्या साधकाने ही सवय, हा आग्रह मनाला लावूनच घ्यावा असे वाटते.

कै. केशवराव भोळे यांनी 'वसंतकाकांची पत्रे' हया पुस्तकात सुचविलेली आवाज साधना गायक, प्रशिक्षक व प्रशिक्षणार्थ्यांसाठी निश्चितच मनोरंजक व उद्बोधक ठरेल. कै. केशवराव म्हणतात की तार सप्तकातले स्वर लागायला त्रास पडत असेल तर ते स्वर रोज लावले पाहिजेत. खर्ज भरल्यावर वरच्या षड्जावर स्थिर होता होता ऋषभाला हात घालावाच लागतो. हळुहळु त्याला ओंजारून गोंजारून रोज लावल्यास तो वठणीवर येईल. मग गंधार लावावा. वरच्या स्वरांना असेच रोज बेताबेताने गोंजारावे लागते. दुसरी युक्ती म्हणजे तंबोरा नेहमीच्यापेक्षा अर्ध्या स्वराने खाली उतरवावा, एखादे वेळी एक सबंध स्वरही अन् हळुहळु तार सप्तकाशी लगट करावी. सात आठ दिवस ही महेनत केली की मग पुन्हा मुळच्या नेहमीच्या स्वरात तंबोरा मिळवून खर्ज लावावा आणि मग तार सप्तकाकडे जावे. यामुळे ऋषभ तर सहज लागेल, गांधाराला जरा त्रास होईल पण नेटाने प्रयत्न करावा. पुन्हा खाली यावे. जर वेळाने पुन्हा गांधारावर जावे म्हणजे तो सहज लागेल. हे स्नायुंचे शिक्षण आहे. स्नायुंना एकदम हा ताण सहन होत नाही पण रोजच्या सवयीने तो हळुहळु सहन होउ लागतो आणि मग तो न लागणारा स्वर सहज तोलून धरता येतो. गळ्याच्या स्नायुंना एकदम मोठा बोजा सहन होत नाही. एकदम ताण पडला तर ते तुटतात आणि आवाज चिरकतो. रोजच्या महेनतीमध्ये मंद्र सप्तकात पंचमापर्यंत व तार सप्तकात मध्यमापर्यंत सहजपणे सगळे स्वर लावता आले पाहिजे! ही महेनत जड गळ्याला पुष्कळ करावी लागते पण स्वाभाविक तयार गळ्यालाही ती चुकत नाही.

आकाराने आवाज लावण्याचे फायदे सांगतांना केशवराव म्हणतात की तीनही सप्तकांतील स्वरांचे, आलापांचे, तानांचे पलटे घेतांना आकाराने आवाज लावला पाहिजे. ''अ आ'' म्हणतांना 'आ' ला जेवढे स्वाभाविकपणे तोंड उघडते तेवढेच उघडे ठेवून स्वर घ्यावे. अशापध्दतीने खऱ्या आकाराने लागलेला स्वर गळ्याबाहेर पडून सर्वांना ऐकू येतो. गळा उघडा राहिल्याने येणाऱ्या जाणाऱ्या हवेच्या स्पर्शाने घसा येणे, सुजणे, फोड येणे, खर येणे हे विकार आपोआप नाहिसे होतात. कुठल्याही हवेत किंवा हवाफेरात त्यात दोष निर्माण होत नाहीत. त्यामुळे अमुक खाणे, वर्ज्य वगैरे नसती बंधने लादून घेण्याची जरूरत पडत नाही. आवाज चटकन लागतो. खर्जाच्या महेनतीने आवाजाला जिल्हई, गोलपणा येतो. खर म्हणजे नियमितपणे आकाराने खर्ज भरून पलटे घोटणाऱ्या गवैय्याचा आवाज चटकन लागतो हा प्रयोगसिध्द अनुभव आहे.

आवाजधर्माचा वापर—

आवाजाचा आणखी एक धर्म आहे. सकाळी, दुपारपेक्षा मंद्र स्वर चांगले आणि सहज लागतात. दुपारी मध्य व तार स्वर जास्त सहजपणे लागतात. हा गाण्याचा एक धर्म ध्यानात घेण्यासारखा आहे. म्हणून मंद्रसाधना व स्वरांचे पलटे निरनिराळ्या लयीत सहजपणे म्हणण्याचा रियाज करणे योग्य आहे. आवाजाला स्पष्टपणे वळण्याची सवय करायला ही कसरत जरूर करावी. कोणत्याही सप्तकातील स्वर अगदी सहज, सफाईने स्वच्छ व दाणेदार लावता आले पाहिजेत. नव्हे हे ध्येयच ठेवले पाहिजे. तार सप्तकातील स्वर लावतांना स्वरचापल्य व सफाई गायकाने दाखवली पाहिजे. केवढीही दमश्वासाची तान असो, तार सप्तकातले पंचम, धैवतावरचे जाणे—येणे असो, ही सहजता व सफाई मिळविण्यासाठी खूप मेहनत करावी लागते यात शंका नाही.

आवाज साफ लागावा व स्वर शुध्द व्हावा यासाठी करावयाच्या स्वरसाधनेत, आपण तंबोऱ्याचा जो षड्ज स्वर धरतो तो षडज् स्वर आणि दुपटीचा षड्ज स्वर असे दोन्ही स्वर म्हणावे. अर्थात प्रथम एक एक स्वर दीर्घ ठेवून म्हणत जावा. पुढे त्या स्वराची लय वाढवीत जावी. परंतु निवडलेले दोन षड्ज स्वर हे 'सा रे' असे स्वर आहेत म्हणजे मूळ षड्ज व दुपटीचा! त्याठीकाणी सा रे असे न म्हणता 'आ आ' अशा ध्वनीने ते स्वर चौसष्ठ वेळा म्हणावे नंतर मंद्र सप्तकातील खर्जाचा, निषाद म्हणजे तंबोऱ्याचा जो षड्ज त्याच्या खालचा निषाद व मध्य सप्तकातील निषाद असे दोन निषाद स्वर चौसष्ठ वेळा म्हणावे हे सुध्दा आकाराच्याच ध्वनीने म्हणावे. अशारितीने खाली उतरत मंद्र षड्जापर्यंत जाउन असे दुहेरी स्वर चौसष्ठ वेळा म्हणावे. हे झाल्यावर हेच स्वर पुन्हा वरील क्रमाने बत्तीस वेळा, नंतर सोळा वेळा, नंतर आठ, चार व दोन वेळा म्हणावे. याप्रमाणे आकारात स्वरांची मेहनत करावी. त्यानंतर षड्ज, मध्यम, पंचम या स्वरांची महेनत करावी. सर्व स्वर जलद लयीत जोडीने चौसष्ठ वेळा आकारात म्हणावे. जलद म्हणण्याची शक्ती जशी वाढेल तशी वाढवावी. ही आवाज साधना प्रात:काळी व सायंकाळी अशी दोन वेळ करावी. त्यात प्रात:काळी करावयाच्या साधनेत सर्व स्वर कोमल ठेवावेत आणि सायंकाळी मध्यम कोमल ठेवून बाकी सर्व स्वर तीव्र ठेवावे. नंतर मध्यम तीव्र ठेवून साधना करावी. गाणे शिकणाऱ्याने तर प्रथम प्रात:काळी उठून खर्जातील स्वर धरावे जेणे करून आपला आवाज जितका खाली पोहचेल तितका नेउन सूर धरीत राहावे. श्वासाच्या दमाने जेवढा वेळ धरवेल तेवढा वेळ धरून पुन्हा श्वास घेउन पुन्हा तोच स्वर धरावा आणि तोच स्वर खर्जातील षड्ज ठैवावा. अशी निदान एक तास महेनत करून पुढे सप्त स्वरांची मेहनत करावी व नंतर मध्यसप्तकातील स्वर म्हणावे. या आवाज साधनेने आवाज कधीही बिघडणार नाही. सदोदित साफ राहील. पण हे सर्व अनुभव घेतल्या वाचून समजायचे नाही हे निश्चित! एखादा फिजिकल कल्चरिस्ट आपले शरीर

रेखीव करण्याकरिता जसा शरीरातील सर्व स्नायुंना व्यायाम देतो, तसेच गळा, छाती व पोट या भागातील स्नायुंना गातांना उपयोगात आणावे. आवाज रेखीव, सहज वळेल इतका मुलायम करण्याकरिता, भरदार, कसदार स्वर लागतील इतका दम श्वास पैदा करण्याकरिता या सकाळच्या महेनतीचे महत्व आहे.

मधुर अथवा कर्णप्रिय आवाज नसणाऱ्यांनी आपल्या आवडीनुसार उपरोक्त प्रयोगांचा सराव करणे श्रेयस्कर ठरेल. धैर्य आणि विश्वासाने या आवाज साधनेची कास धरल्यास आपले स्वर निश्चितपणे माधुर्य आणि चित्तवेधक आवाजाने ओतप्रोत भरून जातील म्हणून आवाज साधनेचा अंतर्भात प्रशिक्षणात करणे गरजेचे वाटते. आवाजात अनुकूल सुधारणा झाल्यावरच स्वराभ्यास व गायन क्षेत्रात प्रवेश करावयास हवा. जो मधुर कंठाचा धनी आहे तोच एक श्रेष्ठ गायक, वक्ता किंवा लोकप्रिय कलाकार बनू शकतो. मिळविलेली आवाजाची सिध्दी शाबूत व ताजीतवानी ठेवण्याकरिता गायकाला सतत मेहनत चालू ठेवावीच लागते. आवाजावर मेहनत हे संगीताचे अखंड व कडक व्रत आहे आणि हाच गायकीचा मूलमंत्र आहे. या व्रतामध्ये खळ पडणे फार भयंकर अपराध आहे. पाश्चिमात्य देशात आवाज साधना वैज्ञानिक पध्दतीच्या आधारे केली जाते. परदेशात प्रत्येक मोठ्या शहरात मध्यवर्ती ठिकाणी स्वर—साधना केन्द्र हेतुपुरस्सर उभारण्यात आली आहेत. याठिकाणी इच्छुक व्यक्ती आपले दैनंदिन काम आटोपून सायंकाळी तज्ञांच्या मार्गदर्शन व निरिक्षणाखाली नियमितपणे स्वरसाधना करतात. संगीत प्रशिक्षकांना विनंती कराविशी वाटते की, त्यांनी प्ररिक्षणार्थ्यांना स्वर शिकविण्यापूर्वी त्यांच्याकडून आवाज साधना अवश्य करवून घ्यावी. आवाजाची ईश्वरीय देण नसलेल्या परंतु आवाज साधनेत साधनेद्वारे संगीत शास्त्राचा मेरूमणी ठरलेल्या स्वर्गीय विष्णु दिगंबर आणि अब्दुल करीम खॉ यांच्या चरित्राचा 'आवाज साधना शास्त्राच्या' आधारे परिचय करवून द्यावा. अहमदनगरच्या डॉ. जयंत करंदीकरांनी सुचविलेली संगीतीय ओंकार साधना सुध्दा आवाजाचे सौंदर्य व माधुर्य वृध्दिंगत करण्यात महत्वाची भूमिका वठवू शकेल असे सुचवावेसे वाटते!

आपल्या गळ्याला अशक्य असे काही असूच नये. आपल्याला आयुष्यभर मनासारखे गाता यावे असे वाटणाऱ्या सर्वांच्या अभ्यासाचा हा विषय आहे. नियमितपणे मेहनत घेणाऱ्या विद्यार्थी, गायक—गायिकांना या आवाजसाधना शास्त्राचा खूप लाभ झाला आहे. त्यांच्या आवाजातील घुमारा त्यातील सहजता, लांबलेला पल्ला, जव्हारी, गोलाई, तसेच गोडवा हा या शास्त्राच्या नियमित अभ्यासामुळे सुखद झालेला आहे. गायनाआधी 'आवाज' लागेल की नाही याची भिती गेली आहे. गायनानंतर होणारी दमछाक टाळता आली आहे. विकसीत झालेला दोन सप्तके आवाज आकाराला येणे, तसेच संपूर्ण गायन सहज रितीने होणे इत्यादी फायदे या शास्त्राच्या अभ्यासकांनी अनुभवलेले आहेत. कलेला वाहून घेतलेल्या विद्यार्थी, कलाकारांनी आपला आवाज किंवा स्वर खुलविण्यासाठी व टिकविण्यासाठी या शास्त्राचा सखोल अभ्यास करून खूप मेहनत करणे अपेक्षित आहे. कलाकार आणि श्रोत्यांच्या मनांना एकाग्र करणारा सूर किंवा आवाज हा प्रभावी असायलाच हवा. आपल्या आवाजाला कायमस्वरूपी प्रभावी ठेवणारे एकमेव शास्त्र म्हणजे आवाज साधना शास्त्र! आधुनिक जग व तंत्रज्ञान जरी बहुल निर्मितीच्या दिशेने वाटचाल करीत असले तरी आवाजाच्या माध्यमातून दर्जेदार आत्मानंदाची प्रचिती येण्यासाठी व देण्यासाठी गायकाला आवाज साधना शास्त्राशिवाय दुसरा पर्याय नाही. पाश्चात्य संगीताचे आक्रमण रोकण्यासाठी व परंपरागत अभिजात कंठसंगीत टिकून राहण्यासाठी संगीत प्रशिक्षणाचा आवाज साधना हा मूलमंत्र आहे. संगीत प्रशिक्षणात या शास्त्राचा अंतर्भातव होणे ही आज काळाची गरज आहे!

निष्कर्श—

१. आवाजाच्या पल्ल्यापेक्षा 'नादगुण' महत्वाचा आहे असे हे साधनाशास्त्र सांगते.
२. गळा ही अशी चीज आहे की जी रोज घासून पुसून साफ ठेवावी लागते.
३. इतर विषयातील अभ्यासप्रमाणेच संगीतात सुध्दा चिकाटी, विश्वास, एकाग्रता, संयम, महेनतीची तयारी, नियीमत सराव अर्थात रियाज आणि शास्त्रशुध्द प्रशिक्षणाची गरज आहे.
४. आवाज साधना हाच गायकीचा मूलमंत्र आहे!

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

बालमजुरी एक सामाजिक समस्या: परिणाम व घटनात्मक उपाय

प्रा. शैलेश संजय नळे

संशोधक विद्यार्थी, पद्मश्री विखे पाटील कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, प्रवरानगर

Corresponding author- **प्रा. शैलेश संजय नळे**

Email- shaileshnale26@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7703632

प्रस्तावना:

भारत देश एक विकसनशील देश असून लोकसंख्येच्या बाबतीत भारताचा दुसरा क्रमांक लागतो. वाढत्या लोकसंख्येबरोबर भारतात दारिद्रय, बेकारी, कुपोषण, बालमजुरी सारख्या समस्या मोठ्या प्रमाणात आढळतात. यामध्ये बालमजुरी या समस्यांतील व्याप्ती समाजातील सर्वत्र स्तरांवर असलेली दिसून येते. बालमजुरीमुळे लहान मुलांना शिक्षण घेण्याच्या वयामध्ये कष्टप्रद उद्योगामध्ये काम करावे लागते. त्यामुळे त्यांच्या जिवीताला धोका तयार होतो. तसेच त्याला शिक्षणापासून दूर राहावे लागते. बालगुन्हेगारी मध्ये मोठ्या प्रमाणात वाढ होत आहे. बालमजुरीळा आळा घालण्यासाठी सर्च स्तरावर मोठ्या प्रमाणात प्रयत्न चालू आहे. असे असले तरी बालमजुरीचे प्रमाण देखील मोठ्या प्रमाणात दिसून येतात.

संशोधनाची उद्दिष्ट्ये:

1. बालमजुरी संकल्पना समजावून घेणे,
2. बालकामगारांच्या समस्यांच्या परिणामाचा अभ्यास करणे,
3. बालकामगार निर्मुलनासाठी घटनात्मक उपाय योजनांचा अभ्यास करणे,

ठळक शब्द:

१) बालमजुरी २) दारिद्रय ३) बालगुन्हेगारी ४) बालकामगार

संशोधन पद्धती:

प्रस्तृत शोध निबंधामध्ये बालकामगारांच्या सामाजिक समस्या व घटनात्मक उपाय योजना या विषयीची संपूर्ण माहिती दुय्यम तथ्य संकलन पद्धतीनुसार केली आहे.

बालकामगार समस्येचे स्वरूप:

बालकामगार म्हणजे अशी अल्पवयीन व्यक्ती कि जिच्यावर अकाली काम करण्याची प्रौढत्व लादले जाते. बालकामगारांच्या बौद्धिक व शारीरिक घटकांचा विचार न करता त्याला कष्टप्रद उद्योगात काम करण्यासाठी भाग पाडले जाते. अशी व्याख्या अंतरराष्ट्रीय कामगार संघटनेने केली आहे. तर भारतीय घटनेतील कलम २४ मध्ये कष्टप्रद उद्योगात काम करणाऱ्या १४ वर्षाखालील बालकाला बालकामगार असे म्हणतात.

बालकामगारांच्या सामाजिक समस्या:

दारिद्रय:

दारिद्रय हे बालकामगार निर्मितीचे मुख्य कारण आहे. भारताला स्वातंत्र्य मिळून ७५ वर्षाचा काळ उलटून गेला तरी देखील भारतामध्ये असणाऱ्या लोकसंख्येचे प्रमाण जास्त असलेले दिसून येते. त्यामुळे कौटुंबिक गरजा भागविण्यासाठी लहान मुलांना कमी वयात कष्टप्रद उद्योगात काम करावे लागते. त्यामुळे देशात दारिद्रय समूळ नष्ट होणे गरजेचे आहे.

प्रौढ कामगार वेतन रचना:

भारतातील प्रौढ कामगारांच्या वेतन रचनेचा बालकामगारावर प्रत्यक्ष प्रभाव पडत आहे. प्रौढ कामगारांना असणारे वेतन कमी आहे. त्यामुळे त्यांच्या मुलांना कमी वयात रोजगार शोधण्यासाठी भाग पडावे लागते. हे एक बालमजुरीचे कारण सांगता येईल.

बेकारी:

बेकारी ही बालमजुरीचे महत्त्वाचे कारण आहे. बेकारी ही माणसाला निरपेक्ष गरीब बनविते. बेकारीमुळे कुटुंबातील प्रौढ व्यक्तींना रोजगार मिळण्यास असमर्थता असते. त्यातून बालमजुरी क्रण्यास्तही लहन मुलांना कष्टप्रद उद्योगात काम करावे लागते.

कमी वेतनात अधिक नफा:

अनेक ठिकाणी उद्योगाचे मालक हे बालकामगारांकडे एक स्वस्त वस्तू म्हणून पाहतात. म्हणून

बालकांना कामावर ठेवण्यासाठी ते उत्सुक असतात. त्यातून बालमजुरीला प्रोत्साहन मिळते.

पालकांचा अशिक्षितपणा:

पालकांचा अशिक्षित पणामुळे अनेक वेळा मुलांना शिक्षणापेक्षा काम करण्यास भाग पाडले जाते. त्यातून मोठ्या प्रमाणात बालमजुरीची समस्या निर्माण होते.

संयुक्त कुटुंब पद्धत:

सयुंक्त कुटुंब पद्धत ही एक बालमजुरीसाठी महत्त्वाची मानली जाते. संयुक्त कुटुंब पद्धतीमुळे घरातील सदस्यांची संख्या जास्त राहून त्यांच्या पालन पोषणाची जबाबदारी लहान बालकांवर येऊन पडलेली दिसून येते.

बालकामगार कायद्याच्या अंमलबजावणीत निष्काळजीपणा:

बालकामगार या समस्येला प्रतिबंध करण्यासाठी अनेक प्रकारचे कायदे करण्यात आले आहे. परंतु ते कायदे फक्त कागदावरच असलेले दिसून येतात. त्यांचे तंतोतंत पालन होतानी दिसून येत नाही. हे एक बालकामगार (समस्या) वाढण्याचे महत्त्वाचे कारण आहे.

बालमजुरी समस्याचे परिणाम:

१) सामाजिक परिणाम:

बालकामगार ही प्रथा समाजाला लागलेला एक कलंक आहे. त्यामुळे समाजातील मोठ्या प्रमाणात हानी होते. समाजातील मूलाधार असणारी बालकांची पिढी ही शिक्षण घेण्याच्या वयात कष्टप्रद उद्योगात काम करताना दिसून येते. त्यातून बालगुन्हेगारी व व्यसनाधीनता या समस्या निर्माण होतात.

२) आरोग्यावर परिणाम:

बालमजुरीमुळे बालकांच्या आरोग्यावर विपरीत परिणाम होतानी दिसून येतात. त्यामध्ये बालकाचे शारीरिक, मानसिक आरोग्य, निगुंड अशा अनेक गंभीर समस्यांना सामोरे जावे लागते. हा एक परिमाण आरोग्यावर होतानी दिसून येतो.

३) शैक्षणिक परिणाम:

बालकामगार या समस्येमुळे बालकावर अनेक प्रकारचे शैक्षणिक परिणाम होतानी दिसून येतात. कमी वयात मुलांना शिक्षणापेक्षा काम जास्त करावे लागत असल्याने त्याचा बालमजुरीवर विपरीत परिणाम होताना दिसून येतो. बालकामगारांना बालवयात आचार, विचार, संस्कार याचे कसलेही भान न राहाता ते काम करतात, त्यातून बालकांच्या वैयक्तिक जीवनावर परिणाम होतो.

बालमजुरी समस्येवर घटनात्मक उपाय:

बालामाजुरीसारख्या समस्येवर उपाय सुचविण्यासाठी अनेक ध्नात्मक उपाय आहे, ते पुढील प्रमाणे सांगता येतील.-

१) बालकामगार विषयक वैधानिक तरतुदी-

भारतात वैधानिक तरतुदीनुसार १४ वर्षाखालील बालकांना काम करण्यास बंदी घालण्यात आली आहे. त्या संदर्भात वैधानिक तरतुदी पुढील प्रमाणे सांगता येतील.

1. १९४८ आणि १९८६ कायद्याची कडक अंमलबजावणी करण्यात यावी.
2. एकात्मिक बालाकार्यक्रमात बालकामगारांना स्थान मिळावे,
3. बालकामगारांमध्ये साक्षरता वाढवण्यात यावी.
4. शासकीय धोरणाची अंमलबजावणीसाठी कार्यवाही करणे.

२) बालकामगार संरक्षण विषयक कायदे-

1. मुळे कामगार कायदा १९५१
2. बाल रोजगार कायदा १९३३
3. कंपनी कायदा १९४८
4. बालक्षम प्रतिबंध कायदा १९८६
5. बालकामगार कायदा १९९२
6. खाणकाम कायदा १९५२

a. बालमजुरी रोखण्यासाठी वरील कायद्याचे संरक्षण देण्यात आलेल आहे.

३) बालकामगार विषयक राष्ट्रीय धोरण-

1. एकात्मिक बालविकास कार्यक्रम
2. धोक्याच्या ठिकाणी कामावर न पाठविणे.
3. सक्तीचे व मोफत शिक्षण
4. व्यवसाय प्रशिक्षण शाळाची तरतूद करणे,
5. शालेय पोषण आहाराला प्रोत्साहन देणे,

या बालकामगार विषयक राष्ट्रीय धोरण शासनामार्फत राबविले जाते.

निष्कर्ष:-

दारिद्रय ही समाजाला लागलेली कीड असून त्यातूनच मोठ्या प्रमाणात देश पातळीवर नव्हे तर जगात देखील अनेक समस्या निर्माण होतात. भारतामध्ये दारिद्रय, निरक्षरता, कायद्यातील अंमलबजावणीमध्ये कमतरता,

कुपोषण यासारख्या अनेक कारणामुळे बालमजुरी करणाऱ्या बालकांचे प्रमाण मोठे असलेले दिसून येते. ही समस्या सोडवण्यासाठी समाजातील सर्व स्तरात प्रयत्न चालू आहे. परंतु त्याची अंमलबजावणी अधिक प्रभावीपणे होणे गरजेचे आहे.

संदर्भ-

1. घेवारे नीलंबरी आणि फुलारी व्ही एस (2013) बालकामगारांच्या समस्या एक चिंतन; डॉक्टर फारुख शेख आर्थिक विकास एक चिंतन, औरंगाबाद, चिन्मय प्रकाशन.
2. जोशी अंजली (2007) असंघटित क्षेत्रातील बालकामगार,समाजशास्त्रीय अभ्यास औरंगाबाद बा .ल जोशी प्रकाशक.
3. Impulse NGO,(2004)child labour in Shillong,Meghalaya,research project,Impulse NGO network Shillong.
4. www. child.lab.stat.org.in
5. www.UNICEF.org.in

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

आंग्रे घराणे व बाजीराव पेशवे यांच्या सबंधाचा अभ्यास - इ.स. १७२० ते १७४०

श्री. विजय सुखदेवराव निमजे

आचार्य पदवी संशोधक, शि. प्र. मं. ता. म. कला व वाणिज्य महाविद्यालय,

चिखली ता. चिखली, जि. बुलढाणा

Corresponding author- **श्री. विजय सुखदेवराव निमजे**

Email-vijaynimje123@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7703636

प्रस्तावना :-

जगामध्ये भारताचा आणि भारतामध्ये महाराष्ट्राचा इतिहास सूवर्ण अक्षराने लिहून घेण्यासारखा आहे. छत्रपती शिवरायांनी रायरेश्वराच्या मंदिरामध्ये स्वराज्य स्थापनेची प्रतिज्ञा केली. तोरणा जिंकून स्वराज्याचे तोरण बांधले. शिवरायांची स्वराज्यासाठी घोडदौड चालू होती, अशातच त्यांनी जावळी जिंकून कोकणामध्ये आपला प्रवेश निश्चित केला. त्यापाठोपाठ त्यांचा जंजिरेकर सिद्दीशी झटापटी होऊ लागल्या असा उल्लेख शिवभारतात दिसून येतो. इ. स. १९ जुलै १६५९ रोजी गोवा येथे झालेल्या बैठकीपुढे शिवाजी महाराजांचा नाविक उपक्रमाचा मिळणारा उल्लेख हा सर्वात जुना उल्लेख आहे. महाराष्ट्रात पूर्वीपासून अनेक कर्तबगार घराणे होऊन गेले आहेत वेगवेगळ्या काळात वेगवेगळी घराणे कर्तबगारी दाखवण्यास उदयास येत असतात. त्यांचा कामगिरीचा आढावा घेतल्याशिवाय महाराष्ट्राचा राजकीय इतिहास पूर्ण होऊ शकत नाही.

१८ व्या शतकात महाराष्ट्राचा आढावा घेतला तरी शिंदे, होळकर, पवार, जाधव, निंबाळकर, फडके, विंचुरकर, आंग्रे, घोरपडे, दाभाडे, प्रतिनिधी, पानसे, पटवर्धन, रास्ते, पेठे, गोखले, रायरीकर भानू, फडणीस अशी अनेक कर्तबगार घराणे आपल्या डोळ्यासमोर येतात. यामध्ये मराठी राज्याचा सागरी सीमा परकीय शत्रूपासून रक्षण करण्याचे महत्वपूर्ण कार्य आंग्रे घराण्याने केले. छत्रपती शिवरायांनी हिंदवी स्वराज्याचे महान कार्य केले. स्वराज्य अबाधित ठेवण्याचे कार्य संभाजी व राजाराम महाराजांनी केले. मराठा साम्राज्यात वीरांचे महत्त्वाचे सहकार्य दिसून येते. मराठी वीर एकीकडे भूमीवर लढून स्वराज्याचे रक्षण करीत होते, तर दुसरीकडे आंग्रे घराण्यातील वीर पुरुष दर्यावरी शत्रूशी सामना करीत मराठा साम्राज्याचे रक्षण करीत होते. समुद्र हीच त्यांची समरभूमी होती. मराठा राज्यकारभारानिमित्त त्यांचे पेशव्यांशी संबंध येत होते. पेशव्यांची जन्मभूमी ही कोकण होती. तर आंग्रेची कर्मभूमी ही कोकण होती, त्यामुळे त्यांचा संबंधाचा परिणाम मराठा राज्यकारभारावर होत होता.

आंग्रे घराणे व पेशवे बाजीराव संबंध :-

१८ व्या शतकाच्या पहिल्या वीस वर्षात महाराष्ट्राच्या राजकारणात अनेक रूपांतरे झपाट्याने होत गेली. पेशवे बाळाजी विश्वनाथांच्या मृत्यू इ.स. १७२० ला झाला. त्यानंतर बाजीरावास पेशवे पद प्राप्त झाले. बाळाजी विश्वनाथ पेशवा आणि कान्होजी आंग्रे यांचा मौखिक भाऊपणा होता. बाजीराव पेशवा कान्होजी 'काका' हे संबोधन वापरत असे. कान्होजी आंग्रेंच्या मुलीच्या लग्नात पेशवा बाजीराव हे कुलाब्यास आले होते. आंग्रे हे मराठा राजकारणातील तोलामोलाचे सरदार होते त्यामुळे आंग्रे व पेशवे यांच्या संबंध अधिकच दृढ होणे स्वाभाविक होते. भट घराण्याची देशमुखी हरेश्वर व श्रीवर्धन या भागात होती. बाजीराव पेशव्याने आपल्या पेशवाईचा शिक्का तयार केला आणि, तो हरिहरेश्वर येथील काळभैरवाच्या चरणी ठेवला होता. इ.स. १७२१ च्या डिसेंबर मध्ये, पोर्तुगीज व इंग्रज यांच्या संयुक्त सेनेशी कान्होजी आंग्रेचे युद्ध सुरु होते. त्यावेळी बाजीराव पेशवे पंचवीस हजाराचे सैन्य घेवून आंग्रेच्या मदतीस आले. पेशव्याने पोर्तुगीज व्हाईसराय यांना कळविले की, कान्होजी आंग्रे हे शाहूचे मांडलिक आहे. त्यांना मदत करणे आमचे कर्तव्य आहे. बाजीराव पेशव्यांच्या मदतीने आंग्रेची शक्ती वाढली होती. परिणामी पेशवे व पोर्तुगीजांनी कुलाब्याजवळ वरसोली येथे तह केला. त्या तहात मराठ्यांतर्फे खंडेराव दाभाडे व सरखेल कान्होजी आंग्रे हे होते.

आंग्रे हे आरमाराचे सरखेल होते त्यांच्याशी राज्यकारभारात जुळून घेणे आवश्यक होते. सरखेल कान्होजी आंग्रे हा छत्रपतींचा सेवक होता पेशव्यांचा नव्हता. पेशव्यांना तो आपल्या बरोबरीचा मानत असे. इसवी सन १७२३ मध्ये पहिल्या बाजीराव पेशव्याने हरीहरिहरेश्वर मंदिराचा जीर्णोद्धार केला, तेव्हा कान्होजी आंग्रेने या मंदिराच्या देखरेखी साठी १००० रुपये दिले होते. पेशव्यांचे दैवत या परिसरात असल्याने कान्होजी या आंग्रे या भागावर विशेष लक्ष ठेवत असे.

तारीख ४ जुलै, १७२९ ला कान्होजी आंग्रेचा मृत्यू झाला. आपल्या मुलांच्या कारभाराविषयी त्याने उत्तम नियोजन केले होते. वारसा हक्काने व कान्होजीने केलेल्या व्यवस्थेतून सरखेलीची जबाबदारी सेखोजी आंग्रेवर येऊन पडली. कान्होजी आंग्रेच्या मृत्यूनंतर आतापर्यंत दबून असलेले इंग्रज, पोर्तुगीज, डच आणि सिद्दी हे डोके काढून आंग्रेंना संपवण्याचे संधी शोधत होते. इतक्या परकीय शत्रूंना संपविणे हे आंग्र्यांसाठी शक्य नव्हते. त्यासाठी त्यांना छत्रपती व पेशवे या दोघांचीही मदतीची आवश्यकता होती. आपल्यामागे असणारे छत्रपती व पेशवा या पदाचे वलय किती महत्त्वाचे आहे, याची आंग्र्यांना प्रचिती वारंवार येत होती.

सिद्दीविरोधात कोणतीही मोहीम आरमाराशिवाय पूर्ण होऊ शकत नसल्याने बाजीराव पेशवे हे सेखोजीच्या भेटीस इ.स. १७३२ ला भेटण्यास गेले. या भेटीमुळे दोघांत मैत्रीपूर्ण सबंध प्रस्थापित झाले, त्यामुळे पेशव्यांच्या जंजिरा मोहिमेमध्ये सखोजी आंग्रे यांनी पुढाकार घेतला. जंजिरा मोहिमेच्या दगदगीत सेखोजी ऑगस्ट १७३३ मध्ये मृत्यू पावले. बाजीराव पेशव्याच्या महत्वाचा आधार सेखोजी नसल्याने बाजीराव पेशव्याने डिसेंबर १७३३ मध्ये सिद्दीशी तह करून जंजिरा मोहीम आवरती घेतली.

संभाजी व मानाजी यांच्यात सत्तेसाठी कलह सुरू झाला. पेशव्यांचा व छत्रपतीचा कल मानाजी कडे होता. संभाजी आंग्रे व मानाजी आंग्रे या बंधूमधील तंटा मराठी दौलतीस महागात पडेल या विचाराने बाजीराव पेशवा छत्रपतीशी सल्ला मसलत करून कुलाब्यास पोहचला. आंग्रे बंधूच्या कलहात बाजीराव पेशव्याने मध्यस्थी करून आंग्रे दौलतीचा गृहभेद केला आणि मानाजीस कुलाब्याचे ठाणे व 'वजारातमाब' हा किताब देऊन कुलाब्यापासून सुवर्णदुर्गापर्यंतचा भाग दिला. तसेच संभाजीस सुवर्णदुर्गावर 'सरखेल पद' देऊन सुवर्णदुर्गच्या दक्षिणेकडील भाग दिला. बाजीराव पेशव्याच्या या निर्णयाचा चांगला परिणाम न होता मानाजी व संभाजी यात तेढ वाढू वाढली.

आपल्या गुणांचे चीज ज्या राज्यात होत नाही. त्या राज्यात राहून काही फायदा होत नसेल तर मराठ्यांपासून वेगळे होण्याचा विचार संभाजी आंग्रेंच्या मनात येत होता. त्यासाठी तो परकीयांची मदत शोधत होता. संभाजीच्या या सर्व हरकती पेशव्यांच्या नजरेतून सुटल्या नव्हत्या. वसई जिंकण्याच्या कामी मानाजी आंग्रे याने बाजीराव पेशव्याचे भाऊ चिमणाजी अप्पाला मोलाची मदत केली होती. वसई जिंकल्यावर पेशव्यांनी, मुंबईकर इंग्रजांनी आंग्रेविरूद्ध मोहिमेत पेशव्यास मदत करावी असा तह करून संभाजीस, इंग्रज व पोर्तुगीज यांच्याकडून मदत मिळविण्याचा मार्ग बंद करून टाकला होता. सर्व बाजूने मिळणारी मदत थांबलेला संभाजी आंग्रे अधिकच चवताळला होता. पेशवे हे मानाजीला मदतीच्या मोबदल्यात मानाजीकडील किल्ले व मोहिमेचा खर्च वसूल करू पाहत होते. त्यामुळे मानाजी आंग्रे दुखावत होता. इ.स. १७४० च्या एप्रिल मध्ये संभाजी आंग्रेने मानाजीस समेटाचा प्रस्ताव पाठवल्याबरोबर मान्य केला. आणि लगेच नर्मदेच्या दक्षिणतीरावर 'रावेर' या ठिकाणी तारीख, २८ एप्रिल इ.स. १७४० ला बाजीराव पेशव्याचा मृत्यू झाला.

निष्कर्ष :-

१. मराठा राज्यकारभारात आंग्रे हे दर्यावरी अधिकारी होते. त्यामुळे परकीय शत्रूशी दर्यावर सामना करत होते.

२. बाजीराव पेशव्याने कान्होजी आंग्रेला वडीलव्यक्ती प्रमाणे मान देत असल्याने त्यांचे वर्तन स्नेहाचे व सहकार्याचे होते.

३. आरमारी सागरी मोहीम ही आंग्रें घराण्याशिवाय पूर्ण होत नव्हती. त्यामुळे पेशव्यांना आंग्रेच्या मदतीची आवश्यकता होती.

४. सेखोजी आंग्रेने बाजीराव पेशव्यास जंजिरा मोहिमेत सहकार्य केले.

५. बाजीराव पेशव्याने आंग्रे कुटुंबात मध्यस्थी करून आंग्रे दौलतीचे विभाजन करून त्यांची ताकत कमी केली.

संदर्भग्रंथ सूची :-

१. मेहेंदळे ग. भा., शिवछत्रपतीचे आरमार, परममित्र पब्लिकेशन, ठाणे.

२. ढबू दा. गो., कुलाबकर आंग्रे सरखेल आंग्रे घराण्याचा इतिहास, श्री. शिवसमर्थ सेवा प्रकाशन, नाशिक.

३. ओक प्र., बाळाजी विश्वनाथ पेशवे, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे.

४. रायगड जिल्हा गॅझेटीअर.

५. डॉ. पेंडसे स. स., मराठा आरमार एक अनोखे पर्व, मर्वेन टेक्नॉलॉजी, पुणे

६. सरदेसाई गो.स., मराठी रियासत खंड-३, पोपुलर प्रकाशन, मुंबई.

७. केळकर य. न., वसईची मोहीम, आनंद मुद्रणालय, पुणे.

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

किशोरियों का विकास और सामाजिक असमानता

ज्योति कुमारी

शोधार्थी, विश्वविद्यालय गृह विज्ञान विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

Corresponding author- **ज्योति कुमारी**

Email- jkchandra77@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7703645

सारांश :-

किशोरावस्था नारी के जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था होती है। इस अवस्था में वह यौवन की दहलीज पर होती है। बालावस्था तथा यौवन के बीच की अवस्था होने के कारण किशोरावस्था भारी के मानसिक, भावनात्मक तथा मनोवैज्ञानिक विकास की दृष्टि से अत्यंत परिवर्तनशील होती है। यदि मानव संसाधन विकास के उद्देश्य से चलाए जाने वाले विकासात्मक कार्यक्रमों में किशोरियों को शामिल न किया जाए तो सर्वांगीण बाल विकास का दृष्टिकोण उपेक्षित रह जाता है। सामाजिक असमानता तब होती है जब किसी दिए गए समाज में संसाधनों को असमान रूप से वितरित किया जाता है, आमतौर पर आवंटन के मानदंडों के माध्यम से, जो व्यक्तियों की सामाजिक रूप से परिभाषित श्रेणियों की तर्ज पर विशिष्ट पैटर्न उत्पन्न करते हैं। यह सत्ता, धर्म, नातेदारी, प्रतिष्ठा, नस्ल, जातीयता, लिंग, आयु, यौन अभिविन्यास और वर्ग द्वारा लाई गई समाज में सामाजिक वस्तुओं की पहुंच की भेदभाव वरीयता है। सामाजिक असमानता आमतौर पर परिणाम की समानता की कमी का अर्थ है, लेकिन वैकल्पिक रूप से अवसर तक पहुंच की समानता की कमी के संदर्भ में अवधारणा की जा सकती है। सामाजिक अधिकारों में श्रम बाजार, आय का स्रोत, स्वास्थ्य देखभाल, और बोलने की स्वतंत्रता, शिक्षा, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और भागीदारी शामिल है।

मुख्य शब्द:- किशोरावस्था, बाल्यावस्था, सामाजिक, असमानता, किशोरी, भेदभाव।

परिचय :-

एक सामाजिक असमानता के रूप में लिंग वह है जिसके द्वारा श्रम को विभाजित करके, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को आवंटित करके और सामाजिक पुरस्कारों को आवंटित करके पुरुषत्व और स्त्रीत्व के कारण महिलाओं और पुरुषों के साथ अलग-अलग व्यवहार किया जाता है। लिंग- और लिंग-आधारित पूर्वाग्रह और भेदभाव, जिसे लिंगवाद कहा जाता है, सामाजिक असमानता में प्रमुख योगदान कारक हैं। अधिकांश समाजों में, यहां तक कि कृषि वाले लोगों में, श्रम का कुछ यौन विभाजन होता है और विशेष रूप से आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक क्षेत्रों में पुरुषों और महिलाओं को सौंपा जाता है। ग्लोबल नॉर्थ और ग्लोबल साउथ दोनों में अधिकांश राज्यों में राजनीतिक गतिविधियों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम है। औद्योगीकरण के दौरान लिंग आधारित श्रम विभाजन में वृद्धि होती है। लैंगिक असमानता पर जोर भूमिकाओं में गहराते विभाजन से पैदा हुआ है।

लैंगिक भेदभाव, विशेष रूप से महिलाओं की निम्न सामाजिक स्थिति से संबंधित, न केवल अकादमिक और सक्रिय समुदायों के भीतर बल्कि सरकारी एजेंसियों और संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतर्राष्ट्रीय निकायों द्वारा भी गंभीर चर्चा का विषय रहा है। इन चर्चाओं का उद्देश्य महिलाओं की उनके समाज में पहुंच के लिए व्यापक, संस्थागत बाधाओं की पहचान करना और उनका समाधान करना है। लिंग विश्लेषण का उपयोग करकेशोधकर्ता एक विशिष्ट संदर्भ में महिलाओं और पुरुषों की सामाजिक अपेक्षाओं, जिम्मेदारियों, संसाधनों और प्राथमिकताओं को समझने की कोशिश करते हैं, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय कारकों की जांच करते हैं जो उनकी भूमिकाओं और निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। पुरुषों और महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक भूमिकाओं के बीच कृत्रिम अलगाव को लागू करने से महिलाओं और लड़कियों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और इससे सामाजिक और आर्थिक विकास सीमित हो सकता है।

महिलाओं के काम के बारे में सांस्कृतिक आदर्श पुरुषों को भी प्रभावित कर सकते हैं जिनकी बाहरी लिंग अभिव्यक्ति को किसी दिए गए समाज के भीतर "स्त्री" माना जाता है। ट्रांसजेंडर और लिंग-भिन्न व्यक्ति अपनी उपस्थिति, उनके द्वारा दिए गए बयानों या उनके द्वारा प्रस्तुत आधिकारिक दस्तावेजों के माध्यम से अपने लिंग को व्यक्त कर सकते हैं। इस संदर्भ में, लिंग मानदंड, जिसे हम विशेष निकायों को प्रस्तुत करते समय सामाजिक अपेक्षाओं के रूप में समझा जाता है, ट्रांस पहचान, समलैंगिकता और स्त्रीत्व के व्यापक सांस्कृतिक/संस्थागत अवमूल्यन पैदा करता है। ट्रांस व्यक्तियों को, विशेष रूप से, सामाजिक रूप से अनुत्पादक और विघटनकारी के रूप में परिभाषित किया गया है।

काम में महिलाओं की भागीदारी विश्व स्तर पर बढ़ रही है, लेकिन पुरुषों की कमाई की तुलना में महिलाओं को अभी भी वेतन विसंगतियों और मतभेदों का सामना करना पड़ रहा है। यह विकसित और विकासशील देशों में

कृषि और ग्रामीण क्षेत्र में भी विश्व स्तर पर सच है। महिलाओं की अपने चुने हुए व्यवसायों में आगे बढ़ने और आगे बढ़ने की क्षमता के लिए संरचनात्मक बाधाओं का परिणाम अक्सर कांच की छत के रूप में जाना जाता है, जो अनदेखी- और अक्सर अनजान बाधाओं को संदर्भित करता है जो अल्पसंख्यकों और महिलाओं को उनकी योग्यता या उपलब्धियों की परवाह किए बिना कॉर्पोरेट सीढ़ी के ऊपरी पायदान पर चढ़ने से रोकते हैं। यह प्रभाव कई देशों के कॉर्पोरेट और नौकरशाही वातावरण में देखा जा सकता है, जिससे महिलाओं के उत्कृष्टता प्राप्त करने की संभावना कम हो जाती है। यह महिलाओं को सफल होने और उनकी क्षमता का अधिकतम उपयोग करने से रोकता है, जो महिलाओं के साथ-साथ समाज के विकास के लिए एक कीमत पर है। यह सुनिश्चित करना कि महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और समर्थन किया जाता है, अपनेपन की भावना को बढ़ावा दे सकता है जो महिलाओं को अपने समाज में योगदान करने के लिए प्रेरित करता है। एक बार काम करने में सक्षम होने के बाद, महिलाओं को पुरुषों के समान नौकरी की सुरक्षा और सुरक्षित कार्य वातावरण का शीर्षक दिया जाना चाहिए। जब तक इस तरह के सुरक्षा उपाय नहीं किए जाते, तब तक महिलाओं और लड़कियों को न केवल काम में आने वाली बाधाओं और कमाई के अवसरों का अनुभव होता रहेगा, बल्कि वे भेदभाव, उत्पीड़न और लिंग आधारित हिंसा की प्राथमिक शिकार बनी रहेंगी।

किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है जो अपने में एक पूर्ण अवस्था है किशोरावस्था के सम्बन्ध में यह पूर्णता परम्परागत विश्वास रहा है कि किशोरावस्था विकास की एक आन्तरिक अवस्था है इस अवस्था में बालक के शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक गुणों में परिवर्तन प्रौढ़ावस्था की दिशा में होते हैं ।कवसमेबमदबम शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के। कवसमेबमतम शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है- "परिपक्वता की ओर बढ़ना" किशोरावस्था बाल्यावस्था के पश्चात् आने वाली अवस्था है। यह अवस्था बचपन की समाप्ति तथा वयस्कावस्था प्रारम्भ होने तक रहती है। इस अवस्था में विकास की गति तीव्र होती है आधुनिक युग में आज किशोरावस्था के अन्तर्गत भौतिक परिपक्वता के साथ-साथ मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, स्वास्थ्य पर भी अध्ययन किया जाता है किशोरावस्था में बालक बालिका में एक नया पन दिखायी देता है यह नयापन मुख्यतः यौन परिपक्वता के कारण सभी अवस्थाओं में किशोरावस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं आनन्दमयी होती है इस लिये इसे गोल्डेन ऐज भी कहते हैं। हमारा अपना देश हो या संसार का कोई भी देश किशोरावस्था को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है यह सत्य है कि बच्चे देश की नींव हैं इस नींव का सृजन उसकी माँ एवं परिवार के अन्य सदस्यों के ऊपर आधारित होता है वही किशोरावस्था में आकर बच्चे स्वयं का अच्छा बुरा सोचना प्रारम्भ कर देते हैं वह स्वतंत्रता के साथ अपने स्वास्थ्य की वृद्धि चाहते हैं। भारतीय अनुच्छेद 47 में कहा गया है। कि लोगों का पोषण स्तर, जीवन स्तर ऊँचा उठाना तथा जन स्वास्थ्य को बेहतर बनाना राज्य सरकारों का प्राथमिक कर्तव्य होगा। "इस नीति द्वारा विभिन्न सम्बन्धित क्षेत्रों को चिन्हित किया गया जैसे खाद्य उत्पादन खाद्य आपूर्ति शिक्षा, सूचना, स्वास्थ्य देखभाल, किशोरियों एवं बाल विकास यह नीति विभिन्न सम्बन्धित विभागों/मंत्रालयों द्वारा उठाये जाने वाले आवश्यक कार्यों को क्रम बद्ध करती है।

किशोरावस्था बहुत ही अस्पष्ट होती है। उससे जिस भूमिका की अपेक्षाएं की जाती है उसके प्रति उसमें भ्रम होता है। जब किशोर बालक समान व्यवहार करता है तो उससे कहा जाता कि अपनी आयु के अनुसार कार्य करों, यदि वह वयस्क की भाँति व्यवहार करने का प्रयास करता तो कहा जाता है कि ज्यादा बड़े बनने की कोशिश मत करो, इस प्रकार इन्हें वयस्कों की तरह भी व्यवहार करने से रोक दिया जाता है दूसरी ओर किशोर की यह अस्पष्ट स्थिति उनके लिए लाभदायक भी होती है। ये विभिन्न प्रकार की जीवन शैली को अपनाने का प्रयास करते हैं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति उत्तम तरीके से पूर्ण करने के लिए व्यवहार के ढ़ग मूल्य तथा अभिवृत्तियाँ निश्चित कर पाते है। किशोरावस्था परिवर्तन की अवस्था होती है। किशोरावस्था के दौरान अभिवृत्तियों एवं व्यवहार में परिवर्तन की दर, शारीरिक परिवर्तन की दर के समानान्तर होती है। जैसे ही शारीरिक परिवर्तन कम होने लगते है वैसे ही अभिवृत्तियों एवं व्यवहार के परिवर्तन भी धीमें हो जाते हैं।

किशोरावस्था में होने वाले सार्वभौमिक परिवर्तन :-

1. संवेगात्मक उच्चता।
2. यौन सम्बन्धी परिपक्वता।
3. शरीर, रूचियों तथा सामाजिक समूह में अपेक्षित भूमिका में परिवर्तन।
4. मूल्यों में परिवर्तन।
5. अधिकांश किशोर परिवर्तनों के प्रति उभयभावी होते है।

आज के गतिशील जीवनशैली में किशोर एवं किशोरियाँ तेज रफ्तार से जीवन जीना पसन्द करते हैं। वह समाज में आये परिवर्तन को परिणाम की चिन्ता किये बिना तेजी अपना रहे हैं फिर चाहे वह फैशन हो, स्वास्थ्य हो, शिक्षा हो, आदतें हों वह बदलाव को अपनाते समय वर्तमान को देखते हैं। इनके दूरगामी परिणाम को नहीं, वह भूल जाते हैं कि किसी भी देश के आधार वे ही हैं यदि वह शारीरिक, मानसिक सामाजिक, संवेगात्मक रूप से स्वस्थ नहीं होंगे तो उनका सर्वांगीण विकास अवरूद्ध हो जायेगा किसी भी रूप में अविकसित या पिछड़ा नागरिक देश के उन्नति के लिए मजबूत स्तम्भ नहीं बन सकता है। जब तक किशोर एवं किशोरी अपने समुचित स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देते तथा स्वास्थ्य के महत्व को नहीं समझते तबतक वे स्वयं के प्रति

जागरूक नहीं होंगे, यही जागरूकता इन्हें स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। किशोर एवं किशोरियों द्वारा अपनायी जा रहीं आदतें, भोजन, फैशन, मनोरंजन के तरीके इत्यादि के पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव से किशोर एवं किशोरियों को अवगत कराने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची :-

1. डॉ० वर्मा डी0एन0, बाल विकास एवं बाल, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. डॉ0 वर्मा प्रीति, मनो विज्ञान।
3. डॉ० श्रीवास्तव आराधना, बाल विकास, साहित्य प्रकाशन।
4. डॉ0 जैन शशि प्रभा, बाल विकास, शिवा प्रकाशन इन्दौर।
5. भाई योगेन्द्र जीत, बाल मनोविज्ञान एवं बाल, विकास विनोद पुस्तक मन्दिर।
6. डॉ0 पाण्डेय सुधा, मानव विकास, साहित्य प्रकाशन आगरा
7. डॉ० सक्सेना सविता, बाल विकास भवदीय प्रकाशन अयोध्या
8. फैजाबाद बक्शी बी0के0, मातृकला एवं बाल विकास. साहित्य प्रकाशन आगरा

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

उच्च शिक्षण आणि ग्रंथालय

प्रा.अडसुळे एस.पी.

शरदचंद्र महाविद्यालय, शिराढोण, ता.कळंब जि.उस्मानाबाद

Corresponding author- **प्रा.अडसुळे एस.पी.**

Email-shrihariadsule50@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7703649

प्रस्तावणा :-

उच्च शिक्षणाचे महत्व अबाधित आहे. माणसाच्या जीवनात गुरु व ग्रंथांना महत्वाचे स्थान असते. ग्रंथालये वाचन साहित्याच्या बरोबरीने इतर महत्वाच्या ग्रंथालयीन सेवा वापरकर्त्यांना पुरवत असतात. उदा. संदर्भ सेवा, निवडक माहितीचे प्रसारण, वृत्तपत्रातील कात्रणे, नियतकालिके, जर्नल्स, प्लगरीजम शोध तंत्रे, इ. उच्चशिक्षणातील बदलत्या परीमाणांना अनुरूप बदल ग्रंथालये करताना दिसतात. उदा. डिजिटल ग्रंथालये, डिजिटल वाचन साहित्याचा वाढता वापर. इ. उच्च शिक्षणातील ग्रंथालये अद्ययावत राहण्यासाठी विद्यापीठ पातळीवर आणि विद्यापीठांना सहाय्य पुरविणाऱ्या यू.जी.सी. सारख्या संस्था विविध प्रशिक्षण आणि रिफ्रेशर, ओरिएंटेशन कोर्सेस आयोजित करत असतात. त्याच बरोबरीने माहिती जलद गतीने वापरकर्त्यापर्यंत पोहोचवता यावी यासाठी माहिती शोध तंत्रे आणि माहितीचे व्यवस्थापन इत्यादी गोष्टीत ग्रंथपालांनी प्राविण्य मिळवावे यासाठी इन्फ्लिबनेट सारख्या संस्था प्रशिक्षण देत असतात.

उदिष्ट्ये :

1. उच्च शिक्षण घेत असलेल्या विद्यार्थ्यामध्ये वाचनाची आवड निर्माण करणे.
2. आधुनिक ज्ञानसाधनाचा वापर करण्यास प्रोत्साहन देणे.
3. अवगत केलेल्या ज्ञानाची पडताळणी करण्याची संधी उपलब्ध करुन देणे.

उच्चशिक्षण :

देशपातळीवर आणि आंतरराष्ट्रीय पातळीवर विविध सेवा पुरविण्यासाठी कुशल मनुष्यबळ लागते. तसेच देशांतर्गत वैज्ञानिक, तांत्रिक, अभियांत्रिकी, प्रशासकीय पातळीवरही उच्चशिक्षित व्यक्तींची आवश्यकता असते. यासाठी उच्चशिक्षणात अभ्यासक्रमाची निर्मिती केली जाते आणि प्रशिक्षण दिले जाते. उदा. इंडियन इन्स्टिट्युट ऑफ टेक्नोलॉजी, इंडियन इन्स्टिट्युट ऑफ मॅनेजमेंट इत्यादी. या व्यतिरिक्त प्रशासकीय सेवांचे प्रशिक्षण देणाऱ्या संस्था, वैद्यकीय महाविद्यालये, अभियांत्रिकी महाविद्यालये, यांचाही समावेश उच्च शिक्षणात होतो.

ग्रंथालये :

उच्च शिक्षण देणाऱ्या संस्थांमधील ग्रंथालये, गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदान करत असतात. स्थानिक स्तरावर तसेच राष्ट्रीय स्तरावर काही संस्था ग्रंथालयांच्या गुणवत्तापूर्ण सेवांवर देखरेख ठेवत असतात. निरंतर गुणवत्तापूर्ण ग्रंथालयीन सेवा पुरविल्या जाव्यात या साठी नॅक सारख्या स्वायत्त संस्था गुणात्मक परीक्षण करून त्यात सुधारणा सुचवत असतात. ग्रंथालयांमध्ये वाचक हा सर्वात महत्वाचा घटक असतो. त्यांना केंद्रस्थानी ठेवून ग्रंथालयीन सेवांची रचना केली जाते. ग्रंथवाचनाव्यतिरिक्त संदर्भ सेवा, नियतकालिके, वर्तमानपत्रे, जर्नल्स, त्यातील कात्रणे, प्रतिलिपी सेवा, भाषांतर सेवा, डिजिटल स्वरूपातील वाचनसाहित्य इ. सेवा ग्रंथालये आपल्या वापरकर्त्यांना देत असतात. अर्थात उच्च शिक्षणाच्या अनुरूप ग्रंथालयीन सेवा ग्रंथालये पुरवत असतात. अधिक प्रभावी सेवा पुरविण्यासाठी ग्रंथालये नवनवीन तंत्रे आणि तंत्रज्ञानाचा वापर करत आहेत. वाचन साहित्य शोधण्यासाठी अचूक अशा शोध व्याख्या ग्रंथालये विकसित करत आहेत. OPAC द्वारे वाचन साहित्याचे शोधन केले जाते, सदर वाचन साहित्य उपलब्ध आहे की नाही हे क्षणार्धात समजते. बारकोडिंग मुळे ग्रंथालयीन पुस्तके, नियतकालिके देवघेव सेवेमध्ये वेगवानता येते. वाचकांचा वेळ तर वाचतोच पण दैनंदिन कामकाजात अचूकता येते.

ग्रंथालयीन सेवा :

उच्च शिक्षणातील ग्रंथालयीन सेवा उच्च दर्जाच्या असतात. वापरकर्तयांचे समाधान होण्यासाठी त्यांच्याकडून वारंवार फीड बॅक घेतला जातो. त्याचे विश्लेषण करून सेवांमध्ये आवश्यक ते बदल केले जातात. अर्थात वापरकर्त्यांना केंद्रस्थानी ठेवून सर्व सेवांची रचना असते. त्यातील काही महत्वाच्या सेवा खालील प्रमाणे आहेत.

संदर्भ सेवा :

उच्च शिक्षणामध्ये ग्रंथालयातर्फे दिली जाणारी ही महत्वाची सेवा आहे. नवनवीन ज्ञान मिळविणे आणि विषयज्ञानात अद्ययावत राहणेसाठी संदर्भ सेवा महत्वाचे कार्य करत असते. या सेवेद्वारे संबंधित ज्ञानशाखेत ज्या नवीन ज्ञानाची भर पडत असते, त्याविषयी त्या ज्ञानशाखेशी संबंधित विषयतज्ञांना, प्राध्यापकांना आणि विद्यार्थ्यांना माहिती पुरविली जाते. अर्थात आज डिजिटल स्वरुपात संदर्भ सेवा आहे, त्यात ईमेल, इंटरनेट, समाज माध्यमे यांचा समावेश होतो. जागतिक पातळीवरील नियतकालिके आणि जर्नल्स यातून संदर्भसेवेसाठी माहिती निवडली जाते. तसेच स्थानिक पातळीवरील उपलब्ध ग्रंथ आणि नियतकालिके यातील माहितीसंबंधित वापरकर्त्यांपर्यंत पोहोचवली जाते. या प्रक्रियेत वेगवानता आणि अचूकता या दोन अटी असतात.

२) निवडक माहितीचे प्रसारण :

या सेवेद्वारे विशिष्ट ज्ञान शाखेशी संबंधित जागतिक तसेच स्थानिक पातळीवरील अद्ययावत माहिती वापरकर्त्यापर्यंत नियमित पोहोचवली जाते उदा. chemical abstract हे नियतकालिक दरवर्षी प्रकाशित केले जाते. यात रसायनशास्त्रामधील नवीन शोध आणि संशोधन विषयक घडामोडी यांचा उल्लेख असतो. या द्वारे संशोधनकर्ते पुढील संशोधनाची दिशा ठरवत असतात.

३) नियतकालिके, वर्तमानपत्रे, जर्नल्स :

यातून संशोधनासाठी आवश्यक असणारी माहिती मिळत असते. वर्तमानपत्रांचे कात्रणे नियतकालिकांमधील लेख, जर्नल्स मधील संशोधन याचा त्या माहितीत समावेश होतो.

४) डिजिटल माहितीचे स्रोत :

ही लोकप्रिय होत असलेली ग्रंथालयीन सेवा आहे. यात जर्नल्स, नियतकालिके, ग्रंथ संगणकावर उपलब्ध करून दिले जातात. वापरकर्त्यांना युजर आयडी आणि पासवर्ड दिलाजातो. त्याद्वारे वापरकर्ते त्यांना हवी ती माहिती ऑनलाईन वाचू शकतात किंवा त्यांना माहिती हवी असल्यास संगणकावर किंवा मोबाईल फोनवर तीडाऊनलोड करू शकतात. डिजिटल माहितीच्या स्रोतांमध्ये बिब्लिओग्राफिक डेटाबेसेसचा समावेश होतो. याद्वारे वापरकर्तयांना हवी असणारी माहिती सर्च टर्म द्वारे एका क्लिकवर उपलब्ध होते. इंटरनेटवर काही माहितीच्या स्रोतांचे स्वरूप मोफत असते, यात लाखो ग्रंथ आणि नियतकालिके अगदी मोफत उपलब्ध असतात. तर काही स्रोतांना शुल्क आकारले जाते. दृक्श्राव्य स्वरूपातील माहितीस्रोतांचा समावेश डिजिटल

माहितीच्या स्रोतांमध्ये होतो कारण याचे स्वरूप संगणक, इंटरनेट या माध्यमांद्वारे प्रकट होते. विषयतज्ञ व्हिडीओ कॉन्फरन्सिंगद्वारे विद्यार्थी आणि शिक्षकांशी संवाद साधतात.

उच्चशिक्षणातील त्रिसूत्री : शिक्षक-विद्यार्थी-ग्रंथालय :

उच्च शिक्षणात शिक्षक मार्गदर्शकाची भूमिका बजावत असतात. विद्यार्थीही विषयज्ञानात पारंगत होत आलेले असतात. पण ज्ञानाच्या अफाट पसार्या तून अचूक आणि सूक्ष्म ज्ञान त्यांना मिळवायचे असते. थोडक्यात स्थूलज्ञानाकडून सूक्ष्मज्ञान मिळविण्याकडे विद्यार्थ्यांची वाटचाल सुरू असते. या स्थित्यंतरात ग्रंथालये दीपस्तंभाचे काम करत असतात.

या त्रिसूत्रीत एक दुवा जरी कमकुवत झाला तरी उच्चशिक्षणाची साखळी निकृष्ट होते. म्हणून आज विद्यार्थी, शिक्षक आणि ग्रंथालये एकमेकांना पूरक आहेत, एकमेकांचे आधार आहेत.

निष्कर्ष-

१) उच्चशिक्षणात ग्रंथालयाला महत्वाचे स्थान आहे.

५) अभ्यासक्रमाच्या ग्रंथासह संदर्भग्रंथांचा वापर विद्यार्थ्यांना करता येतो.

४) अभ्यासक्रमाची पूर्ती होण्यासाठी आवश्यक ती सर्व माहिती ग्रंथालयात उपलब्ध असते.

4) आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर करुन अद्यावत माहिती प्राप्त होते.

७) वाचकांच्या मागणीला पूर्ण प्रतिसाद हेच ग्रंथालय सेवकाचे समाधान असते.

संदर्भ ग्रंथ :

1) पाटील, ए.एन.- उच्च शिक्षण प्रणालीची सद्यस्थिती. जळगाव. प्रशांत पब्लिकेशन.

2) पवार, एस. पी., व इतर ग्रंथालय व माहितीशास्त्र. सु.३री आ. कोल्हापूर : फडके प्रकाशन, सप्टेंबर २००९.

3) कुंभार, राजेंद्र महाविद्यालयीन व विद्यापीठीय ग्रंथालये. नाशिक : यशवंतराव चव्हान महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, मे २००७.

4) जैन, प्रकाश व इतर सुलभ ग्रंथालयशास्त्र. नागपूर : विश्व पब्लिशर्स अॅन्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, २००६-२००७.

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

अव्दैतवाद व सूफीमत

डॉ.लीना दिगंबर प्रभू
सहाययक प्राध्यापक, महाराष्ट्र महाविधालय
Corresponding author- **डॉ.लीना दिगंबर प्रभू**
Email-drleenaprabhu@yahoo.com
DOI-10.5281/zenodo.7710564

यह सृष्टी अनन्त अनेकताओंका परिणाम है। इतनी विभिन्नताओं एवं पृथकताओं के बीच कभी भी एकता का कोई सूत्र दिखाई नही पडता। परन्तु एक परमात्माही इस बहुआयामी एवं बहुरंगी सृष्टी का सृजेता है। यह उसके एकोत्म बहुस्यामि के संकल्प का परिणाम है अत: सभी एक सूत्र में पिरोये हुए है। इसी तथ्य को शंकराचार्यजी का अव्दैतदर्शन औ सूफी मत में देखा जा सकता है। प्रस्तुत शोधप्रपत्र में अव्दैतवाद और सूफीवाद में संजोये हुए यही समानता एक विवेचन करने का प्रयास किया गया है।
शब्द : अव्दैतदर्शन, तौहिद, सूफीकाव्य, अनअलहक.

संसार की पहेली को समझने का और समझाने का प्रयास अपनी कुशाग्र बुध्दी के बल पर विचारवंतों ने किया है। अध्यात्म में अनेक विचारधाराओं का उगम इन्ही चिंतन का फलस्वरूप है। सभी विचारधाराएँ एक ही अंतिम सत्य की तरफ गई है वो है परब्रहम चाहे रास्ते अलग अलग हो। इसी परब्रहम की खोज में हिंदू और मुस्लिम संतो ने 'अहं ब्रहमास्मि' और अन अल हक की अन्तर्ध्वनि में तादात्म्य की अनुभूति की है।

इस परब्रहम वा परमसत्ता का वर्णन अव्दैत-वेदान्त और सूफीमत में किया गया है। शुक्र, गौडपाद, गोविन्दपाद शेकरंचार्य यह अव्दैतमार्ग की मुख्य आचार्य परंपरा है। अव्दैतचिंतन का उदघोष करते हुए अपने 32 वर्ष की स्वल्प आयु में शंकरंचार्यजीने वैदिक धर्म का उध्दार किया। परमार्थ सत्ता रूप ब्रेह की एकता और विभिन्न रूप से प्रतीत होनेवाली संसारकी मायिकता यह वेदान्तशास्त्रका मूलमंत्र उन्होंने दिया। शंकरंचार्यजी ने 'अहं ब्रहमास्मि' का उदघोष करते हुए 'में ही ब्रहम हुँ' इन शब्दो व्दारा आत्मा को परमात्मा में विलिन कर लिया। उसी प्रकार सूफी संत वायजीद अल विस्तानी ने 'फना' याने की अहंकार नाश व परमेश्वर में विलिन होना। इस तत्व की शिक्षा दी। तोहिद याने की में ही परमेश्वर हुँ, मेरे सिवा और कोई परमेश्वर नही इस तत्व को अबु याजिद ने प्रारंभ किया। मन्सूर अल हल्लाज अरेबिक बोली के परर्शियन सूफी संत ने अन अल हक 'अहं ब्रहमास्मि' 'में ही ब्रहम हुँ' इस तत्व का प्रचार किया। परम्परागत इस्लामी धर्म के भीतर एक प्रकार की क्रान्ति उपस्थित कर दी। फलत: उस समय बढते हुए बुध्दिवाद को दबाने के लिए शासकों को सजग एवं सचेष्ट होना पडा और समय समय पर मृत्यूदंड की व्यवस्था भी होने लगी। शंकरंचार्यजीने को भी 'अहं ब्रहमास्मि' का उदघोष कर लोगों से विराध ही सहना पडा।

सूफीकाव्य में वर्णित परमतत्व अव्दैतवाद व एकेश्वरवाद की अभिसन्धि में अवस्थित है। पारमार्थिक दृष्टी से उसकी सत्ता एक है जिसका सत्ता एक है जिसका सृष्टीचक्र के अन्तर्गत भिन्न भिन्न रूपों से आभास मिलता है। सूफियों ने जगत और परम सत्ता का सम्बन्ध अंशरूप में माना हैं। यों तो वह सत्ता अपने विशुध्द रूप में नाम एवं गुण रहित है (निर्गुण) किन्तु जब वही अभिव्यक्ति के क्षेत्र में आती है तो नामरूपात्मक बन कर प्रकट हाक जाती है (सगुण)।

शंकरंचार्यजीने माया तथा अविदया शब्दों का प्रयोग समानार्थक रूप में किया है। माया की दो शक्तियॉ होती है आवरण वस्तु के असली रूप को छिपा देना विक्षेप उसी वस्तु को उत्पन्न कर देना। माया ब्रहम देती है। उस माया अविद्या का परदा हटाओ तो शुध्द ब्रहम रूप सामने आ जायेगा। सूफी कवी जलालउददीन मुहम्मद रूमी (1207 to1273 A.D) कहते है मनुष्य की आँखो पर माया का परदा पडा है इसलिए उसे सृष्टिचक्र के अन्तर्गत भिन्न भिन्न रूपों से आभास मिलता है। परदा हटा दे तो वह जान लेंगा की पुरे विश्व सिर्फ वो परमात्मा एक ही है।

अव्दैत वेदान्त दर्शन अनुसार ब्रहम और जगत को विश्व और प्रतिबिम्ब रूप में उपमित कीया है। चैतन्य एक हि है । जब वह बिम्बाकार धारण करता है ब्रहम कहलाता है और जब प्रतिबिम्ब से आच्छादित रहता है तो जगत नाम से अभिहित होता है सूफि काव्य का एक प्रमुख वर्ण्य विषय परम सत्ता के विवेचन और विश्लेषण से सम्बन्धित है । इस

काव्य के स्त्रष्टाओ ने ब्रहम और जगत को सिंधु और तरंग सुर्य और किरण रुप मे उपमित किया है। शंकरंचार्यजी ने संसार की क्षणभंगुरता जानते हुए संसार को मिथ्या कहा । सुफी कवियों ने कयामत का वर्णन किया है की जब सारा सृष्टिचक्र प्रलय बेला में पुन: परम सत्ता मे विलीन हो जाएगा कयामत का दिन सबके लिए फैसले का दिन होगा जब लोगो को अपनी अपनी करनी के अनुसार स्वर्ग या नरक मिलेगा। सुफी कवियों ने इसी प्रसंग में इस्लामी मान्यताओ का निर्वाह करते हुए सृष्टिचक्र के आर्वतन प्रत्यावर्तन के और भी अनेक पक्षों का उल्लेख किया है जिनमें संसार की क्षणभंगुरता का रूपकमय चित्रण प्रमुख है। सूफीयों की काव्य की प्रेम कहानियाँ तो उस परम सत्ता के रहस्योदघाटन की दिशा में साधन मात्र है। सूफी संतों के अनुसार – प्रेम व्दैत को अव्दैत कर देता है। प्रेमी अपने को एक प्रकार से पूर्णरूपेण खोकर अपना अस्तित्व ही नष्ट कर देता है। जिसे स्पष्ट करते हुए जायसी ने राजा रत्नसेन की अवस्थ का चित्र इस प्रकार अंकित किया है – " बूँद समुद्र जैस होइ मेरा । गा हेराइ अस मिलै न टेरौ। रंगहि पान मिला जस होई। आपहिं खोइ रहा होइ सोई।" अथार्त जिस प्रकार बिन्दु का सिन्धु से समागम हो जाय और बहुत ढूँढने पर भी प्राप्त न हो सके अथवा जिस प्रकार ताम्बूल पत्र रंगों में मिल कर अपना अस्तित्व खो बैठे उसी राजा ने अपने को खोकर प्रेम के प्रभाव का इससे उत्कृष्ट उदाहरण और क्या हो सकता है।

सूफी साधना का आधार प्रेम रहा है। और उनके विचारानुसार प्रेम और ईश्वर में कोई अंतर नही है। संपूर्ण सूफी साहित्य के ऐश्वर्य तथा रस-रूप उपासना के अनुस्प प्रिय के सौंदर्य एवं गौरव की भावना से आपूर्ण रहा है यही एक आकर्षण है जो साधक को आत्मैक्य और अभेद की स्थिती तक पहुँचाता है। वेदान्त का अव्दैतवाद कहता है जब सब जीव ब्रहम के ही रूप है और प्राकारान्त से वे अवने ही अविभाज्य रूप ठहरते है तब ईर्ष्या व्देष के लिए स्थान ही कहाँ रह जाता है?

आज क्षुद्र स्वार्थ की भावना से त्रस्त तथा परास्त मानव समाज के कल्याण के लिए वेदान्त और सूफीमत की महनीय शिक्षा अमृतमयी है।

संदर्भसूची

1. विश्वंभरनाथ पांडे (संपा), मुस्लिम सूफी की जीवन की झाँकी, हिन्दुस्तानी कल्चर सोसायटी, इलाहाबाद,1975.
2. आचार्य बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन चौखंभा ओरियन्टालिया, वारणासी, 1976.
3. निग्गमान्द, (प्रभाकर महन्ति – हिन्दी रूपांतर) , वेदान्त विवेक, दिल्ली सारस्वत संघ. नई दिल्ली, 1998.
4. डॉ.गणेशदत्त सारस्वत, इस्लाम दर्शन, मर्कजी मक्तना जमाअत इस्लामी हिन्द, दिल्ली 1971.

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, February 2023, Volume-15 Issue-4

बिहार की राजनीति में राष्ट्रीय जनता दल का प्रदर्शन

अजय कुमार ओझा[1] प्रो ० डॉ उमेश कुमार[2]

[1]शोधार्थी, परास्नातक राजनीति विज्ञान विभाग। वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा।

[2]शोध निदेशक, परास्नातक लोकप्रशासन विभाग वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा

Corresponding author - **अजय कुमार ओझा।**

Email- Ojhaajay019@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7710568

शोध सारांश:-

इतिहास के आईने में इस बात का साक्ष्य उपलब्ध है कि बिहार बहुत ही लंबे समय से राजनीति का एक केंद्र बिंदु रहा है[1] 1917 में बिहार के चंपारण में महात्मा गांधी का नील की खेती करने वाले किसानों के शोषण के खिलाफ आंदोलन, तथा 1975 में आपातकाल के विरोध में जयप्रकाश नारायण का आंदोलन " जेपी आंदोलन" जिसके उर से बिहार के राजनीति में लालू प्रसाद यादव रामविलास पासवान एवं नीतीश कुमार की उत्पत्ति हुई तथा 1990 के दशक बिहार मंडल विरोधी एवं मंडल समर्थक दोनों का केंद्र बिहार रहा है।[2] उसी मंडल समर्थक लालू प्रसाद यादव ने बिहार की धरा पर 1997 में राष्ट्रीय जनता दल का गठन किया और इस के बैनर तले बिहार पर एकछत्र राज्य किया, कभी सिंहासन पर बैठ कर तो कभी जेल की चहर दीवारों में कैद रहकर। इनके प्रभाव का मूल्यांकन इससे किया जा सकता है। कि यह जेल में रहते हुए भी अपनी अनपढ़ घरेलू महिला को बिहार की गद्दी पर बैठा कर बिहार के राजनीति में एक नया इतिहास रच दिया बिहार के राजनीति पर राष्ट्रीय जनता दल का अमिट छाप है जिसने कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टी को 4 सीट देकर अपने शक्ति के आगे घुटने टेकने को मजबूर कर दिया। राष्ट्रीय जनता दल सरकार में रहे या सरकार के बाहर इसका प्रभाव बिहार की राजनीति पर व्यापक रुप से पड़ता रहता है। राजद आज अपना नेतृत्व नये कन्धे के भरोसे पर हैं। नया नेतृत्व सायद इसके प्रभाव मे बढ़ोतरी लाने का पूरा प्रयास करेगा तथा बिहार की राजनीति पर इसका अमिट छाप रहेगा।

कीवर्ड:- राजनीति, बिहार, राजद, प्रभाव, जाति, समर्थन

1-राष्ट्रीय जनता दल का अवतरण:-

देश के अन्य राज्यों की तरह बिहार के राजनीति में भी कांग्रेस पार्टी की दबदबा रहा है। बिहार में कई दशकों तक कांग्रेसका निर्वाध शासन रहा और यह 1990 तक जारी रहा। इस बीच सिर्फ पांच बार जब राज्य में कुछ समय के लिए गैर कांग्रेसी शासन रहा लेकिन -मंडल आंदोलन के बाद राज्य की राजनीति की दिशा और दशा ही बदल दिया। चुनावी राजनीति और राजनीतिक प्रतिनिधि आब पहले जैसे नहीं रहे । इसी दौर में क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टियों का उदय हुआ और व्यापक जनाधार वाले क्षेत्रीय नेता भी सामने आए विशेषकर समाज के निचले तबके जैसे अन्य पिछड़ा वर्ग, ओबीसी, दलित, आदिवासी (अविभाजित बिहार में) और मुस्लिमों में मंडलोतर राजनीति ने राज्य में कांग्रेस के अवसान की शुरुआत कर दी।[3] राज्य में मंडल आंदोलन के बाद पहला विधानसभा चुनाव 1995 में हुआ 1995 के चुनाव से कांग्रेसका जनाधार दिन प्रतिदिन गिरता चला गया। और बिहार की धरा से कांग्रेस कीचुले हील गयी ।

बिहार में 1990 के दशक के बाद के चुनाव राष्ट्रीय पार्टी बनाम नवोदित पार्टी से हुई और नवोदित पार्टी थी जनता दल जनता दल के दो भाग हुए राष्ट्रीय जनता दल एवं जनता दल यू जो उस समय की समता पार्टी थी। 1995 के विधानसभा चुनाव ने लालू प्रसाद यादव के लिए ओबीसी का वोट उनके लिए वोट बैंक साबित हुआ और इनकी विजयी अभियान में विजई रथ का काम किया और इसका नाम 1997 के 5 जुलाई को नया नाम राष्ट्रीय जनता दल रखा गया जिसकी सवारी लालू प्रसाद यादव के पूरे परिवार ने की।

यदि राजद के संस्थापक सदस्यों की चर्चा की जाए तो उसमें सर्वोपरि नाम लालू प्रसाद यादव का ही आता है। लेकिन साथ के साथी भी कम नहीं थे उस समय के चर्चित नाम रघुवंश प्रसाद सिंह, जगदानंद सिंह, अब्दुल बारी सिद्दीकी मोहम्मद साहब उद्दीन मोहम्मद तस्वीर उद्दीन एवं कांति सिंह हैं।[4]

2-राष्ट्रीय जनता दल का सफर:-

राजद की उत्पत्ति बिहार झारखंड संयुक्त राज्य में हुआ था अतः इस सफर के साथी झारखंड वासी एवं झारखंड की राजनीति भी रही है उस समय के नेताओं के कंधे पर सवार थी। जो बिहार के राजनीति पर अपना अमिट छाप छोड़ी हुई थी।राजद के जन्म के ठीक तिसरे वर्ष बिहार विधानसभा चुनाव 2000 का आगाज हुआ साथ ही एक और दर्दनाक घटना घटी जो कि बिहार की भौगोलिक भाग को दो भागों में विभाजित कर दिया। बिडम्बना यह रही की राजद सुप्रीमो को न चाहते हुए भी इस विभाजन को उन्हें स्वीकारना पड़ा अन्ततः बिहार दो भागों में

विभक्त हो गया और झारखंड नाम से अलग राज्य के रूप स्थापित हुआ।

3-विधानसभा चुनाव 2000 में राजद का प्रदर्शन:-

1997 के घोटाले में सजा काट रहे लालू प्रसाद यादव पर से कभी बिहार की गरीब जनता का विश्वास नहीं उठा। विशेष रूप से ओबीसी वर्ग, मुस्लिम वर्ग सदा ही इनके साथ बने रहें। तभी 2000 का परिणाम राजद के पक्ष में रहा। साथ ही सबसे बडी पार्टी के रुप मे उभर कर सामने आई।[5] आईए 2000 के चुनावी परिणाम पर एक नजर दौड़ाते हैं और देखते हैं कि इस चुनाव में किस किस राजनीतिक पार्टी ने गुल खिलाए।

दल का नाम।	निर्वाचित सदस्य की संख्या
राष्ट्रीय जनता दल	124
भारतीय जनता पार्टी	67
समता पार्टी	34
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	23
जनता दल (यूनाइटेड)	21
राष्ट्रीय लोक समता पार्टी।	2
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, (मार्क्सवादी लेनिनवादी)लिवरेशन	3
झारखंड मुक्ति मोर्चा।	12
निर्दलीय।	4
कुल।	324

बिहार की राजनीति में 2000 के चुनाव में सबसे प्रभावशाली पार्टी के रूप में राजद उभर कर आया जो कि बिहार के राजनीति को प्रभावित करने में पूर्णतया सक्षम थी।

4-विधानसभा चुनाव 2005 में राजद का प्रभाव:-

फरवरी 2005 का चुनाव बिहार के राजनीति के परिवर्तन का आधार रहा भले ही लालू प्रसाद यादव 15 साल के एकछत्र राज्य से बेदखल हो गए फिर भी 2005 की सबसे बड़ी पार्टी राजद ही रही। जिसने कुल 75 सीटों के साथ 25.07 फ़ीसदी वोट अर्जित की और अपना प्रभाव बिहार की राजनीति पर कायम रखा।[6] इस चुनाव ने राजनीति मे एक नया परिवर्तन लाने का मार्ग प्रशस्त किया। इस चुनाव ने राष्ट्रीय जनता दल को सशक्तता प्रदान किया।

5-विधानसभा चुनाव 2010 से 2020 तक में राजद का प्रभाव:-

वैसे तो बिहार के राजनीति में लालू प्रसाद यादव का जनाधार 2010 से लेकर 2020 तक कम नहीं हुआ। ना ही इनके पार्टी का लेकिन सत्ता में अपने प्रभाव के बल पर स्थापित होने में अनेकों प्रकार के रोड़े सामने आए कभी इनकी जंगलराज की छवि तो कभी चारा घोटाला की तो कभी सवर्णों का कोप भाजन सभी का प्रभाव कमोबेश इन पर पड़ता रहा है । इनकी पार्टी का प्रदर्शन तो हमेशा से बिहार की राजनीति में छाई रही पर सत्ता हाथ से फिसलती चली गई।

2010 में राष्ट्रीय जनता दल 18 दशमलव 84 फ़ीसदी वोट के साथ 22 सीटें प्राप्त करके बिहार की राजनीति की तीसरी सबसे पार्टी के रूप में स्थापित हुआ। प्रभाव धीरे-धीरे कम होता नजर तो आया लेकिन पार्टी का वजूद मिटा नहीं अपने अगले पड़ाव के तरफ चला और नए नेतृत्व की प्रतीक्षा में अग्रसर रहा नया नेतृत्व युवाओं के कन्धों पर सवार होकर चलना सायद पार्ट को पसंद था तभी तो लालू प्रसाद यादव के दोनों लालो के कन्धे पर पार्टी अपना शोभा बढ़ाने लगी और नीत नये गुल खिलाने लगी ।[7]

2015 के चुनाव ने पुनः अपने पुराने तेवर में राष्ट्रीय जनता दल का सम्मान किया और भारी मतों से विजई बनाकर इस विधानसभा की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में राजद को 81 सीटें दे कर के इसके वर्चस्व को कायम रखा। यहां पर राजद ने अपने स्वरूप का विस्तार किया और नये चेहरे को आगे आने में सहयोगात्मक स्वरूप प्रगट किया।[8]

2020 का चुनाव कोरोना काल में हुआ जहां पर चुनाव आयोग के तमाम बंदिशों के आगे इस पार्टी के नेतृत्व कर्ता ने बिहार की जनता पर नोकरी देने के अस्वासन का गुब्बारा उड़ाकर जनता काभोट अपनी पार्टी राजद के वोट बैंक को बढ़ाने में कामयाब हुआ। लेकिन इस चुनाव की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में अपने वर्चस्व को कायम रखने मे कामयाब हुई। पार्टी नेतृत्व के परिवर्तित चेहरा तेजस्वी प्रसाद यादव की हाड तोड़ परिश्रम एवं नितीश बाबू की पलटू राम की छबी राजद का कार्य आसान कर दिया बिहार की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में स्थापित किया[9] लेकिन सरकार बनाने के जादुई आंकड़े को छूने और सरकार बनाने से वंचित रह गई।

निष्कर्ष:-

राजद की उत्पत्ति राजद को उत्पन्न करने वालों के दुरदिनो में हुआ। जब इसके संस्थापक राजभोग के उच्चतम रसास्वादन कर चुके थे। और राजभोग के उमंग में जंगलराज कायम किए हुए थे। लेकिन जब से राजद की उत्पत्ति हुई तब से राजद ने बिहार की राजनीति मैं कभी पीछे मुडकर नहीं देखा, आगे बढ़ते ही रहा उस समय से लेकर अब तक राजद का प्रभाव सरकार हो या जनता दोनों पर एक समान पड़ता रहा। इसके जितने का प्रभाव एवं हारने का ग़म कभी इसके प्रभाव को कम नहीं किया।[10] इनके प्रभाव का मूल्यांकन इससे लगाया जा सकता है कि जिस पार्टी के नेता इनके विपक्ष में लड़े उन्हीं को मिलाकर बिहार की बागडोर अपने हाथों में करना

साधारण बात नहीं हो सकता है। लालू प्रसाद यादव की अस्वस्थता तथा राजद के ऊपरी अस्तर में बिखराव का संकेत तेजस्वी का नयापन भी राजद के अपने प्रभाव को कायम रखने में वाधक न बन सका । रही सही कसर जनता पर इनकी पकड ने राजद को सबसे बड़ी पार्टी के रूप में स्थापित किया हैं। तभी तो जब से राजद की उत्पत्ति हुई है तब से इसका प्रभाव बिहार में बरकरार रहा है।

7-संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1-बिहार की चुनावी राजनीतिक वर्ग का समीकरण 1990 -2015 संजय कुमार

2-वही

3-वही

4-राष्ट्रीय जनता दल की वेबसाइट

5-बिहार चुनाव आयोग की वेबसाइट2000

6-वही 2005

7-वही2010

8-वही 2015

9-वही 2020

10-दैनिक भास्कर 11 नवंबर 2020

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102
Email- rbhole1965@gmail.com
Visit-www.jrdrvb.com

Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102